श्री सिद्धगिरिराज की सचित्र भावयात्रा

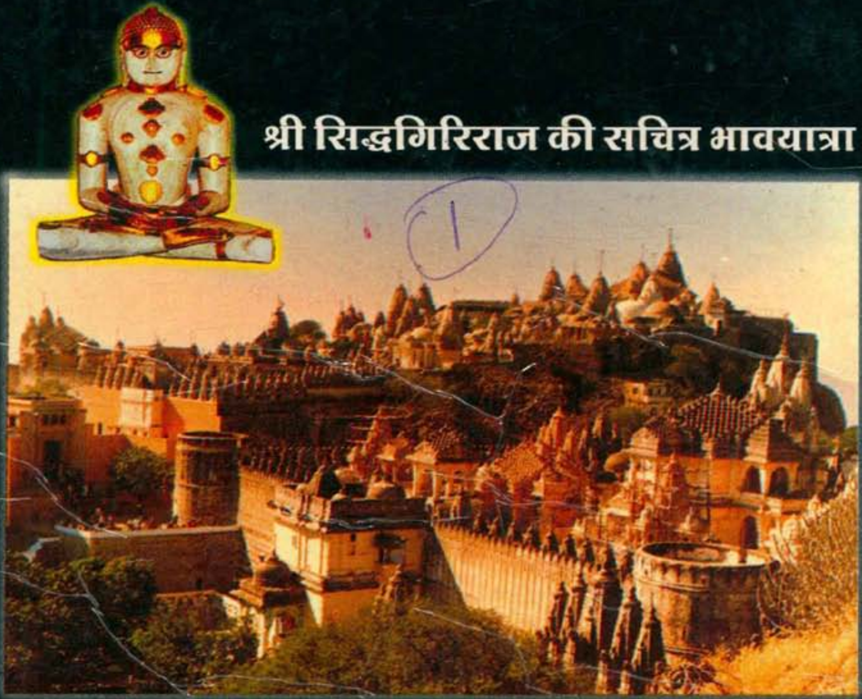

चलो सिद्धगिरि चलें...

प. पू. आचार्य देवेश श्री गुणरत्न सूरीश्वरजी म. सा.

જય શ્રી

श्री सिद्धाचल गिरिराज

नम्र सूचन

इस ग्रन्थ के अभ्यास का कार्य पूर्ण होते ही नियत समयावधि में शीघ्र वापस करने की कृपा करें. जिससे अन्य वाचकगण इसका उपयोग कर सकें.

शत्रुंज

की विभिन्न प्रति-कृतियाँ

W-9102
18/6/15

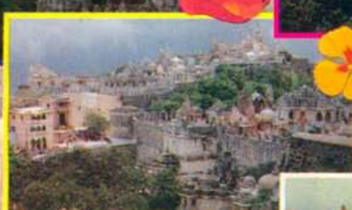

ACHARYA SRI KAILASSAGARSURI GYANMANDIR
SRI MAHAVIR JAIN ARADHANA KENDRA
Koba, Gandhinagar-382 009
Phone : (079) [illegible]

श्री सिद्धगिरिराज यात्रा की रनिंग कोमेण्ट्री एवं
आनन्दोर्मियों को प्रवाहित करनेवाली
एक अनन्य पुस्तक

चलो सिद्धगिरि चलें...

(श्री सिद्धगिरिराज की सचित्र भावयात्रा)

लेखक
प. पू. आचार्य देवेश श्री गुणरत्न सूरीश्वरजी म. सा.

प्रकाशक व प्राप्तिस्थान
आध्यात्मिक शिक्षण केन्द्र
४४, खाडीलकर रोड, कांदावाडी, मुंबई - ४०० ००१. ☎ : ३८७७७१९७/३८५६१९३८/३८५०४७८

• लेखक-परिचय •

प.पू. सिद्धांतमहोदधि आ. प्रेमसूरीश्वरजी म.सा के पट्टधर सुशिष्य
प.पू. वर्धमान तपोनिधि आ. भुवनभानु सूरीश्वरजी म.सा. के पट्टधर
प.पू. गच्छाधिपति आ. जयघोष सूरीश्वरजी म.सा. आज्ञावर्ती
प.पू. मेवाड देशोद्धारक आ. जितेन्द्र सूरीश्वरजी म.सा. के
सुशिष्य प.पू. आ. **गुणरत्न सूरीश्वरजी** म.सा.

• संपादक •

मुनिराज श्री वैराग्यरत्नविजयजी म.सा.

• अनुवादक •

श्री नैनमल विनयचंद्र सुराणा एम.ए.बी.एड. साहित्यरत्न

• मुख्य सौजन्य •

दानवीर संघवी भेरमलजी हकमाजी बाफना,
मालगांव (राजस्थान)

तृतीय हिन्दी संस्करण वि.संवत् २०५६ सन् २०००

मूल्य : २००/-

पुस्तक या उसके किसी भाग के
पुनर्मुद्रण के समस्त अधिकार प्रकाशक के स्वाधीन है।

• अन्य प्राप्ति स्थान •

१. **शारदा साडी**
७६/८६, लक्ष्मी भवन,
ग्राउन्ड फ्लोर, ओल्ड हनुमान लेन,
कालबादेवी रोड, मुंबई - ४०० ००२.
टेली. : २०८०७७३/२००३०४५

२. **मोतीलाल बनारसीदास**
जवाहर नगर, बंगलो रोड,
दिल्ली - पिन ११० ००७

३. **राजस्थान जैन उपकरण भंडार**
१३६२, पीपला पोल आस्टोडीया,
अहमदाबाद-१ टेली.: २१४१२६३

४. **सुघोषा कार्यालय**
तलेटी रोड, पालीताणा
पिन. : ३६४२७०

६. **महावीर जैन आराधना केन्द्र**
कोबा, जि. गांधीनगर
पिन नं. ३८२००९ (गुज.)

७. **सेवंतिलाल वी. जैन**
२०, महाजन गली,
झवेरी बजार,
मुंबई - ४०० ००४.
टेली.: २०६६७१७

८. **मुकेश बी. जैन**
मल्टी ग्राफिक्स
२१/सी, गोला लेन,
लकी हाऊस, १ला माला,
हैन्डलूम हाऊस के पीछे,
फोर्ट, मुंबई - ४०० ००१.
टेली. : २६६५७४७/३८८०२०८

प.पू. सिद्धान्त महोदधि
आ. विजय प्रेमसूरीश्वरजी म.सा.

सुशिष्य

प.पू. वर्धमान तपोनिधि
आ. विजय भुवनभानु सूरीश्वरजी म.सा.

पट्टधर

प.पू. सिद्धान्त दिवाकर
आ. विजय जयघोष सूरीश्वरजी म.सा.

आज्ञावर्ती

प.पू. मेवाड देशोद्धारक
आ. विजय जितेन्द्र सूरीश्वरजी म.सा.

शिष्य

लेखक परिचय

प.पू. युवक जागृति प्रेरक
आ. विजय गुणरत्न सूरीश्वरजी म.सा.

संपादक की कलम से...

श्री ऋषभदेव भगवान के पुत्र सौराष्ट्र कुमार के नाम से प्रसारित सौराष्ट्र देश में आया हुआ श्री सिद्धगिरि तीर्थ ....तीर्थ नहीं तीर्थाधिराज कहलाता है, क्योंकि ढाई द्वीप के अंदर १५ कर्मभूमियों में अनेक तीर्थ आये हुए है, लेकिन श्री सीमंधर स्वामी ने फरमाया है कि सिद्धगिरि जैसा एक भी तीर्थ इस जगत में नहीं हैं...।

यात्रियों ! अत्यंत महीमाशाली व पूजनीय श्री गिरिराज ... व इसकी भावयात्रा के विशेषज्ञ लेखक पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री...इन दोनों का ''सोने में सुगंध'' जैसा सुयोग हुआ है। गुरुदेव श्री ने जहां-जंहा इस भावयात्रा का कार्यक्रम करवाया है, वहां-वहां श्रोताओं को भाव विभोर करके उनमें शत्रुंजय महातीर्थ के प्रति श्रद्धा-भक्ति की ज्योत प्रगटाई है। इस भावयात्रा यानि शत्रुंजय की रनिंग कोमेन्ट्री की अक्षर देह रुप में मांग थी, अत: पूज्य श्री ने इसे लेखन बद्ध किया व संपादन कार्य मुझे सौंपा। प्रभावशाली श्री सिद्धाचल तीर्थ व वहां प्रतिष्ठित प्रथम तीर्थंकर श्री आदीश्वर प्रभु का प्रभाव कहो या चमत्कार...पूज्य गुरुदेवों की प्रेरणा कहो या कृपा बल... जिसके कारण यह संपादन कार्य सूचारु रुप से परिपूर्ण कर सका. एवं शत्रुंजय तीर्थ के प्रति मेरी श्रद्धा-भक्ति ने भी इस कार्य में मुझे प्रेरणा बल दिया।

पाठकगण ! इस पुस्तक में सिद्धगिरि के मंदिर, भगवान की प्रतिमा एवं पादुकाओं आदि के सुंदर रंगीन चित्र इस प्रकार से दिये गये हैं, जिससे आपको साक्षात् सिद्धगिरि जैसा अनुभव होगा व प्रत्यक्ष दर्शन जितना पूण्य व लाभ प्राप्त होगा, ऐसी हमारी श्रद्धा है। कोमेन्ट्री में जिन फोटो का समावेश नहीं हुआ हैं, वे मनमोहक फोटोग्राफ्स इस पुस्तक के पीछे के पृष्ठों पर सुंदर आर्ट में दर्शनार्थ दिये गए हैं...एवं पू. गणिवर्य श्री रश्मिरत्न वि. म. सा. द्वारा संयोजित भावयात्रा का नक्शा भी दिया गया है, जिससे यात्रियों को इस यात्रा में विशेष सुविधा रहेगी। पालीताणा शहर के धर्मशाला व मंदिरों की सूचि भी दी गई है। २५० रंगीन फोटो सहित बेनमून सिद्धगिरि का यह सर्व प्रथम ग्रंथ है। पुस्तक पर दृष्टिपात होते ही इसे ग्रहण करने की उत्कंठा तीव्र हुए बिना नहीं रहेगी, ऐसी इसकी विशेषता है।

आपको ज्ञात होगा कि इसकी प्रथम आवृत्ति गत वर्ष प्रकाशित हुई थी और अब बहुत ही अल्प समय में द्वितीय आवृत्ति भी प्रकाशित हो रही है, इससे आपको पुस्तक की लोकप्रियता का ख्याल आ सकता है।

अंत में एक ही अभिलाषा...कि लेखक - संपादक का परिश्रम सफल बनाये और ''शत्रुंजय कल्प'' ग्रंथ के अनुसार जहां इस अवसर्पिणी के २४ तीर्थंकर पधारे तथा अनेक मुनि सिद्धपद को प्राप्त हुए हैं, ऐसे इस सिद्धाचल के आलंबन से सभी सिद्धि को प्राप्त करें...। संपादन कार्य में क्षति हो तो...मिथ्या मे दुष्कृतम्...।

पू. आ. श्री गुणरत्नसूरि शिष्य पन्यास श्री रविरत्न वि. म.
शिष्य वैराग्य रत्न विजय... १-१-२०००

प्रस्तावना

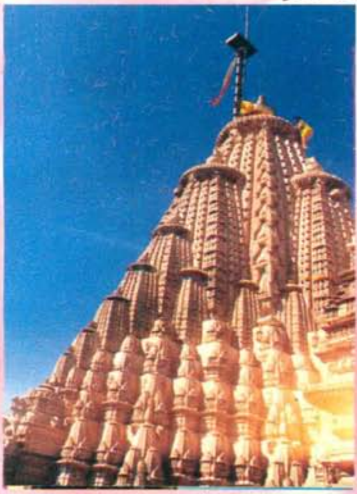

आज तो तीर्थयात्राएँ 'फ्लाइंग; विजिट' तुल्य होती हैं। बम्बई से वायुयान के द्वारा ४० मिनिट में भावनगर, वहाँ से कार में बैठकर पालीताना, वहाँ से डोली में बैठकर भगवान श्री आदीश्वर दादा के दरबार में दर्शन करके विपरीत क्रम से उन्हीं वाहनों के द्वारा चौबीस घण्टों में बम्बई पहुँच जाते हैं। यदि कोई पूछ बैठे कि तीर्थयात्रा में दर्शन करते समय भगवान के शीर्ष पर मुकुट कैसा था ? तो शायद ही उसका उत्तर प्राप्त हो सकेगा।

चार चार 'निन्नाणवे यात्रा' करने वाले को भी यदि कोई पूछ ले, कि थावच्चा पुत्र की मूर्ति कहाँ है ? बाघिन द्वारा चीरे गये सुकोशल मुनि की चरण-पादुकाएँ कहाँ हैं ? आदि प्रश्नों का उत्तर शायद ही प्राप्त होगा। अनन्त आत्माओं में से संख्यात आत्माओं का व्यवस्थित परिचय ज्ञात हो, इस दृष्टि से इस पुस्तिका में 'भाव-यात्रा' का महत्त्व प्रदर्शित किया गया है।

अहमदाबाद में शान्ति नगर, भगवान नगर का टेकरा, ऑपेरा सोसायटी, नवरंगपुरा तथा सोजत शहर, जोधपुर, बीकानेर, पाली, सिरोही, पिण्डवाडा, पालनपुर, ब्यावर आदि नगरों में भावयात्रा के कार्यक्रम आयोजित हुए, उनमें लोगों को साक्षात् यात्रा करने से जितनी ज्ञान की प्राप्ति नहीं हुई थी और जितना आनन्द प्राप्त नहीं हुआ था, उससे अधिक ज्ञान प्राप्ति व आनन्दानुभूति हुई। अब यदि ऐसी जानकारी युक्त साक्षात् यात्रा की जाये, तो अनन्य आनन्द की ऊर्मियाँ हिलोरें लेने लगें, यह एक निस्सन्देह तथ्य है।

फिर भी कोई व्यक्ति यदि किसी कारण-वश साक्षात् शत्रुंजय की यात्रा न कर सके अथवा रुग्णावस्था आदि के समय भाव-यात्रा करने की भावना हो जाये, तो वह व्यक्ति इस पुस्तक के माध्यम से यात्रा कर सकता है। इसमें 'चेतन' नामक एक काल्पनिक पात्र की कल्पना करके ऐसे भाव

व्यक्त किये गये हैं कि मानो हम सब एक साथ गिरिराज पर चढ़ रहे हैं।

देव और देवालयों की नगरी तुल्य श्री शत्रुंजय का संपूर्ण परिचय तो साक्षात् यात्रा द्वारा भी मिलना मुश्किल है, तो इस शाब्दिक यात्रा द्वारा तो इसका पूर्ण परिचय किस प्रकार करवा सकते हैं?

महाविदेह क्षेत्र में विचरण कर रहे श्री सीमंधर स्वामी तीर्थंकर बारह पर्षदा के आगे जिसकी महिमा का वर्णन कर रहे हैं, ऐसे महान तीर्थ के दर्शन-स्पर्शन की मानव-तिर्यंच तो इच्छा रखते ही हैं, लेकिन देव-देवेन्द्र भी इच्छा रखते हैं। ऐसे सिद्ध प्रभावी तीर्थराज संबंधी जानकारी प्राप्त करने की आवश्यकता होने से तलहटी से लगाकर शिखर तक यत्किंचित् परिचय इसमें कराया है क्योंकि पर्वत पर बहुत मंदिर हैं, अतः यदि इन सभी का संपूर्ण इतिहास लिखने जाये, तो एक बडा ग्रंथ हो जायें।

अनंत आत्माओं को मुक्ति दिलाने वाला यह गिरिराज कितना महान बन गया है? यह तो आप शास्त्रों के पन्ने खोलकर इसकी महिमा पढेंगे, तभी ख्याल आयेगा, लेकिन शत्रुंजय माहात्म्य की रसधारा बहाती यह भावयात्रा पुस्तक पढ़ते पढ़ते अपनी आंखों के सामने शत्रुंजय तीर्थ खडा हो जायेगा।

इस पुस्तक में फोटों की पसंदगी व संयोजना का क्रम यात्रियों को बहुत ही उपयोगी बनेगा, अर्थात् फोटों के क्रम अनुसार यात्रियों को किसी की सहायता के बिना सरलता से दर्शनीय-वंदनीय स्थानों की यात्रा आनंदपूर्वक हो सकेगी। ऐसी इसकी संयोजना है। सामान्य आदमी को भी ये फोटो आकर्षित करते हैं व इस तीर्थ का महत्व बताते हैं। और यह पुस्तक बहुत सारी अप्रसिद्ध जानकारियों से भरपूर है। हाथ में लेने के बाद इसको पूरी करके ही छोडेंगे, ऐसी इसकी रचना है। हरेक पृष्ठ चार कलर में छपा हुआ है। पुस्तक का आंतर-बाह्य वैभव बहुत ही सुंदर है। घर बैठे -२ शत्रुंजय तीर्थ के मंदिर, मूर्ति, देहरी व पादुकाओं को भाव से यात्रा कर सकें, इस हेतु से इस पुस्तक में मंदिरादि के मनोरम फोटो दिए गए हैं। इससे वाचकों को ज्यादा रस आयेगा और मुझे पूर्ण आशा है कि वाचक गण इस पुस्तक द्वारा श्रद्धा व प्रेम पूर्वक वंदनीय स्थानों का अवलोकन कर यात्रा का समुचित लाभ उठायेंगे...।

पूर्व महर्षियों ने बताया है कि ''सिद्धगिरि ध्यावे, सिद्धगिरि ध्यावे, घेर बैठा पण घणुं फल पावे।'' सिद्धगिरि का ध्यान करने से घर पर बैठे बैठे भी अत्यन्त फल की प्राप्ति होती है। अत: इस लघु पुस्तक के माध्यम से यदि हम नित्य सिद्धगिरि की भाव-यात्रा करेंगे, तो एक दिन भ्रमर-ईलिका की तरह हम भी भवान्तर में सिद्ध बन सकेंगे। इसी उत्तम आशय से प्रस्तुत पुस्तक की रचना की गई है। करीब दो वर्ष पहले इस पुस्तक का ब्लॅक एन्ड व्हाइट फोटो वाला गुजराती प्रकाशन हुआ था। उसकी १० हजार प्रतियाँ शीघ्र ही पूर्ण हो गई। वही इस पुस्तक की लोकप्रियता का प्रमाण है। इसके बाद रंगीन चित्रों सहित हिन्दी प्रकाशन की भी मांग आने लगी। अत: चार रंग में इस पुस्तक का हिन्दी संस्करण प्रकाशित हो रहा हैं एवं इसके साथ ही गुजराती व अंग्रेजी आवृत्ति भी चार रंग में प्रकाशित हो रही है। ऐसी पुस्तक मेरे ख्याल से सर्वप्रथम ही प्रकाशित हो रही है। महातीर्थ शत्रुंजय की रनिंग कॉमेन्ट्री प्रवाहित करने वाली व आध्यात्मिक आकर्षण से भरपूर इस पुस्तक का मूल्यांकन वाचकों के हेड और हार्ट पर छोडता हूँ। पुन: प्रकाशन में उनके अभिप्राय ही लोकप्रियता बतायेंगे।

प्रस्तुत पुस्तक के आलेखन में शत्रुंजय माहात्म्य, शत्रुंजय कल्पवृत्ति, शत्रुंजय गिरिराज दर्शन एवं स्थापत्य कला में 'श्री शत्रुंजय', 'गिरिराज स्पर्शना', 'पुण्य पाप नी बारी', 'शत्रुंजय-सौरभ' एवं 'तीर्थदर्शन', 'श्री सिद्धप्रभावी सिद्धगिरिराज नी यात्रा नो अनुभव', 'गिरिराज-यात्रा' सिद्धाचलनुं वर्तमान वर्णन, श्री शत्रुंजय प्रकाश, सिद्धाचलनी यात्रा करवा चालो आपणे जइअे, शत्रुंजय तीर्थोद्धार प्रबंध, भारत के जैन तीर्थ दर्शन व शत्रुंजयनी गौरव गाथा आदि पुस्तकों की सहायता ली गई है। उन सबका यहाँ मैं आभार व्यक्त करता हूँ।

'चलो सिद्धगिरि चलें' इस सचित्र हिन्दी पुस्तक के संपादन व संकलन में मुनिराज श्री वैराग्यरत्न विजयजी ने प्रूफ-संशोधन करने तथा चित्र-समायोजना करने में अमूल्य योगदान दिया है। अत: उन्हें भी कैसे विस्मृत किये जा सकते हैं ?

''सौ चालो सिद्धगिरि जईये रे'' नामक गुजराती पुस्तक का हिन्दी में अनुवाद साहित्यरत्न नेनमलजी सुराणा एम.ए.बी.एड. सिरोही वालों ने

नि:स्वार्थ भाव से किया है। उनकी ज्ञान व तीर्थ भक्ति सराहनीय है। एवं फ्रांस-पेरिस के फोटोग्राफर थिओडोर वोगेल ने भी इस पुस्तक हेतु शत्रुंजय तीर्थ की देहरियाँ आदि की विशेष फोटोग्राफी कर इसमें योगदान दिया है। जिज्ञासु वाचक वर्ग इस पुस्तक का सदुपयोग करके श्री सिद्धगिरिराज की यात्रा कर सिद्ध गति को प्राप्त करें। संक्षिप्तीकरण में अनुभवों के आधार पर तथा अन्य पुस्तकों के आधार पर पुस्तक की रचना की जाने के कारण यदि कोई बात शास्त्र-विरुद्ध लिखी गई हो तो मिच्छामि दुक्कडम्......।

बामनवाडजी जैन तीर्थ

दिनांक १०-५-९६ **आचार्यविजय गुणरत्न सूरि**

धन्यवाद

जिनदास भाई, मुकेश भाई (Multy Graphics) जया तोंडवलकर, लालचंद बी. काठेड शिखराणी (अजमेर), महावीर स्टूडिओ (पालीताणा) और मुख्य सौजन्य कर्त्ता, पेट्रन, उपपेट्रन व अन्य सज्जनों का प्रशंसनीय सहयोग रहा हैं। एवं पेरिस (फ्रांस) के जिओमेगेज़ीन के प्रेस फोटोग्राफर श्री थियोडोर वोगेल ने जिस श्रद्धा और समर्पण से अपने कॅमेरा में सिद्धगिरि को समाहित कर यादगार मोहक फोटोग्राफी कर इस पुस्तिका में एक सम्मोहन पैदा किया है, उन्हें भी कैसे भूलें ? उन सभी को साभार धन्यवाद।

इस बेनमून रंगीन हिन्दी आवृत्ति और इसके साथ गुजराती व अंग्रेजी संस्करण प्रकाशित करते हुए हम आनंद व गौरव अनुभव कर रहे हैं।

- आध्यात्मिक शिक्षण केन्द्र, बम्बई.

विषयानुक्रमणिका

श्री सिद्धगिरिराज की भावयात्रा

श्री शत्रुंजय महातीर्थ की महिमा अवर्णनीय है तीनों लोक में ऐसा तीर्थ नहीं है। इस तीर्थ की जो यात्रा करता है, वह भव्य जीव कहलाता है, लेकिन इस गिरिराज पर रहे हुए मंदिर, देहरी व पादुका वगैरह की पूर्ण जानकारी उसके पास नहीं होती है, इससे उसके मन में अनेक जिज्ञासाएँ उठती है। उन जिज्ञासाओं की पूर्ति के लिए इसमें प्रयत्न किया गया है। जैसे तलहटी शिला का महत्व, द्राविड वारिखिल्ल दो भाईयों का युद्ध व १० करोड के साथ दीक्षा व मोक्ष, रामायण के मुख्य पात्र राम व भरत की दीक्षा व ३ करोड के साथ दीक्षा व मोक्ष, सुकोशल मुनि को वाधिन ने चीरा, उस वाधिन का तीसरे भव में मोक्ष, वीर विक्रमशी का यात्रा के लिए शहीद बनना, सुरज कुंड के नाम का रहस्य व दादा आदीश्वर की मूर्ति में सात बार श्वासोश्वास होना वगैरह वर्णन। पृ.क्रं.१

नौ टूंक की भावयात्रा – पृ.क्रं.१०९

नलिनी गुल्म विमान जैसी मोतीशा टूंक अद्‌भुताजी की १८ फुट ऊँची, १४ फुट चौडी सबसे बडी प्रतिमा, तीन पुतलियों के शिल्प से मूक उपदेश अजित-शांति स्तवन की रचना व दो देहरियों का पास में होने का चमत्कार महाभारत युद्ध के बाद २० करोड के साथ मोक्ष, सवा सोमा की टूंक के पीछे साधर्मिक भक्ति का उदाहरण पेश किया गया है।

घेटी पाग की भावयात्रा – पृ.क्रं.१३३

२४ तीर्थंकरों की देहरी, घेटीपाग की देहरी का महत्व, घेटी पाग की देहरी के निर्माण का इतिहास, सिद्धाचल शणगार टूंक व आदपुर में ९९ इंच की भव्य प्रतिमा वगैरह का वर्णन...।

छः कोस (छःगाउ) की भावयात्रा – पृ.क्रं.१३७

देवकी के छः पुत्रों की हत्या करने में कंस का निष्फळ प्रयास। चंदन तालाब के निर्माण का रहस्य, रत्न प्रतिमा वर्तमान में कहाँ पर, छः कोस की यात्रा क्यों ?, श्री कृष्णाजी के पुत्र का साढे आठ करोड के साथ भांड़वा पर्वत पर मुक्ति गमन वगैरह...।

निन्नानवें यात्रा की विधि

शत्रुंजय नदी का रहस्य एवं गिरिपूजन में प्राचीन तलहटी आदि का वर्णन एवम् श्री शत्रुंजय का सामान्य ज्ञान वगैरह....

क्या पढेंगे

श्री सिद्धगिरिराज की भावयात्रा
पृ. क्रं. १
नौ टूंक की भावयात्रा
पृ. क्रं. १०९
घेटीपाग की भावयात्रा
पृ. क्रं. १३३
छ:कोस की भावयात्रा
पृ. क्रं. १३७
तलहटी का चैत्यवंदन स्तवनादि
पृ. क्रं. १४५
शांतिनाथ जी का चैत्यवंदन स्तवनादि
पृ. क्रं. १४६
रायण पादुका का,,,,
पृ. क्रं. १४६
पुंडरिक स्वामी का,,,,
पृ. क्रं. १४७
दादा के दरबार में,,,,
पृ. क्रं. १४८
निन्नानवें यात्रा की विधि
पृ. क्रं. १४९
नौ खमासमणा
पृ. क्रं. १५३
शत्रुंजय तप की विधि
पृ. क्रं. १५३
कार्तिक पूर्णिमा के २१ खमासमणा
पृ. क्रं. १५५
शत्रुंजय लघु कल्प
पृ. क्रं. १५८
सामान्य ज्ञान
पृ. क्रं. १६०
गणित से सच्चाई
पृ. क्रं. १६३
सिद्ध.१७ उद्धार
पृ. क्रं. १६३
सिद्धगिरि पर मोक्ष गई आत्माओ की सूचि
पृ. क्रं. १६५
यात्रा के पर्व दिन
पृ. क्रं. १६६
कालेज प्रिन्सीपल के उद्‌गार
धर्मशाला व मंदिरों की सूचि-पृ.क्रं.१६७
भावयात्रा का नक्शा
अंत में
आर्ट गेलेरी

घर बैठे भाव-यात्रा किस दिशा में करेंगे ?

श्री शत्रुंजयादि चार महातीर्थ दिशा-दर्शक यन्त्र

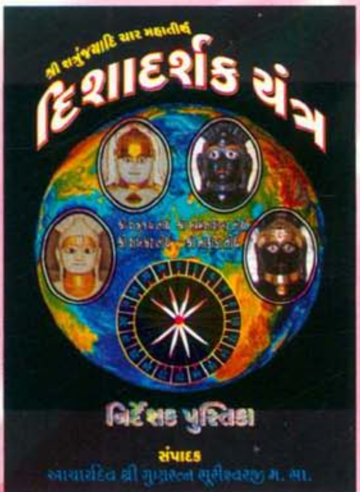

जिन-शासन में दिशा का विशेष महत्व है। जिस दिशा में भगवान के च्यवन कल्याणक आदि होते हैं, अपने सिंहासन पर से उठकर इन्द्र उस दिशा में ७-८ कदम चलकर वन्दन करता है। नेमिनाथ भगवान जिस दिशा में थे, उस दिशा में शाम्ब कुमार ने भी प्रातः ७-८ कदम आगे बढ़कर उन्हें वन्दन किया था। इसी प्रकार से हमें घर बैठे किस दिशा में सिद्ध-गिरिराज, श्री शंखेश्वरजी, नाकोडाजी व सम्मेत शिखरजी तीर्थ की अथवा सीमंधर स्वामी की भाव-यात्रा करनी चाहिये ? जवाब-राजस्थान के निवासी को दक्षिण-पश्चिम में, बम्बई निवासी को उत्तर-पश्चिम में, लंदन एवं उत्तरी अमेरिका में न्यूयोर्क के निवासियों को दक्षिण-पूर्व में और अफ्रीका में मोम्बासा-नैरोबी निवासी को उत्तर-पूर्व दिशा में स्थित होकर उस ओर सिद्धगिरिराज की भाव-यात्रा करनी चाहिये। इसके लिए "Direction of Shatrunjay" एक कम्पास का निर्माण किया गया है, जिसके उपयोग से किसी भी नगर से आप सही दिशा में सिद्धगिरिराज की भाव-यात्रा कर सकेंगे। परम पूज्य आचार्य देवश्री गुणरत्नसूरीश्वरजी म.सा. व मुनिराजश्री वैराग्यरत्नविजयजी महाराज के मार्गदर्शन से विश्व में सर्वप्रथम इसका आविष्कार किया गया हैं।

एवं यह यंत्र शंखेश्वर पार्श्वनाथ तीर्थ, नाकोडा पार्श्वनाथ तीर्थ, सम्मेतशिखर जी महातीर्थ और श्री सीमंधर स्वामी की भी दिशा को बताएगा। यह दिशा - दर्शक यंत्र (Compass) जैन संघ में सर्व प्रथम आविष्कृत हो रहा है। चार तीर्थ के रंगीन चित्र (Photos) आकर्षक बॉक्स और मार्गदर्शक-पुस्तिका (Gauid-Book) के साथ मूल्य ७० रुपया।

आध्यात्मिक शिक्षण केन्द्र, बम्बई

सिद्धगिरिराज की भावयात्रा

चलो सिद्धगिरि चलें .... !

दादा की टूँक का सुहावना दृश्य

चेतन ! आज हमें तीर्थाधिराज शत्रुंजय महातीर्थ की भाव-यात्रा करनी है। यह सिद्धगिरिराज एक महान् पावन भूमि है। जगत के अन्य धर्मों में किसी न किसी स्थान विशेष को पवित्र माने जाने के उदाहरण दृष्टिगोचर हो रहे हैं। जैसे हिन्दू हिमालयादि को, मुसलमान मक्का-मदीना को, क्रिश्चियन जेरुसलम तथा बौद्ध गया-बोधिवृक्ष वगैरह स्थानों को पवित्र मानते आ रहे हैं। इन धर्मों के अनुयायी मनुष्य जिंदगी में एक बार अपने अपने इन पावन स्थानों में जाकर जन्म को सफल हुआ मानते हैं। जैन धर्म में भी ऐसे कितने ही स्थान पूजनीय व स्पर्शनीय माने गए हैं। जैसे शत्रुंजय, गिरनार, आबू, तारंगा व सम्मेतशिखर आदि स्थान। इनमें भी शत्रुंजय गिरिराज को सबसे अधिक श्रेष्ठ महापवित्र एवं पूज्य माना जाता है।

जगत में पर्वत-गिरि तो बहुत हैं, लेकिन वह गिरि ऐसा होना चाहिए जिसकी परम पावन भूमि अपनी आत्मा की उच्चता के लिए भावों की धारा को ऊपर चढाये, उस धारा को चढ़ाने वाला जो कोई परम पावन गिरि हो,

तो यह सिद्धगिरी है। इस कारण से इसको गिरिराज कहते हैं।

अन्य स्थान तीर्थंकरों व मुनिओं के कल्याणकादि से तीर्थ बने हैं, लेकिन यहां क्षेत्र के प्रभाव से कल्याणकादि हुए। अतः संपूर्ण गिरिराज तीर्थ स्वरूप है, दूसरे तीर्थ अनियत व अमुक काल के लिए होते हैं, किंतु यह सदा तीनों काल में तीर्थ रूप है। दृष्ट आकाश में तारे और ग्रह व नक्षत्र अनेक हैं, लेकिन सूर्य व चंद्र तो एक एक ही हैं। धरती को धन्यता दिलाने वाले तीर्थ तो अनेक हैं, परंतु इन सभी तीर्थों में 'तीर्थाधिराज' के रूप में ताज के समान शोभित ऐसा तीर्थ तो अनादि काल से एक ही आता रहा है, और अनंत काल तक एक ही रहने वाला है वह है श्री शत्रुंजय गिरि महातीर्थ।

परम पवित्र गिरि प्रदेशों में ये तीर्थ धाम यात्रियों के अंदर प्रकाश को प्रकट करते हैं, जीवन की उच्च भूमिका तरफ ले जाते हैं, विचारों में निर्मलता लाते हैं, भावनाओं की बाढ लाते हैं, आत्म शुद्धि की उर्मियों को उछालते हैं। पूर्व पुरुषों के जीवन प्रसंग से पवित्र हुई यह भूमि, किसी तीर्थ सलिल में स्नान करते हो, ऐसी अनुभूति कराती है। भावनाशाली यात्रियों की आत्मा तेजस्वी, प्रफुल्लित व प्रशांत बनती है। इस तीर्थ भूमि के दर्शन से आत्म दर्शन की झांकी होती है।

तीर्थ के वाणी नहीं होती है, लेकिन ये तीर्थ धाम खडे-खडे हजारों वर्ष की संस्कृति व पवित्रता का प्राणप्रेरक मौन संदेश देते हैं। तीर्थंकर व साधु संतो की तप गाथा, जीवन साधना व आत्मा की अमर कहानी ये तीर्थ सुना रहे हैं। एक-एक तीर्थ जैन समाज की प्राचीन जाहो-जलाली, भव्य भूतकाल का ज्वलंत इतिहास, मूर्तिमंत कला तथा अनुपम गौरव गाथा के अशाब्दिक महान ग्रंथ हैं।

कितने ही लेखक-कविओं ने इस तीर्थ की तारकता लोगों को बताने के लिए शब्दों को शणगार कर, वाक्य-वाक्य में वैभव व पद-पद पर प्राचीन प्रभाव को विस्तार कर इतिहास आलेखित किए हैं।

विश्व ज्ञान कोष के लेखक **रजनी ब्यास** ने भी अपनी लिखी हुई **''गुजरात नी अस्मिता''** नामक पुस्तक में पालीताणा के वर्णन में उल्लेख किया है कि *''भावनगर जिल्ला नुं सौथी मोटुं अने विश्व प्रसिद्ध आकर्षण तो पालीताणा पासे ना ''शेत्रुंजो'' पर्वत पर ना विख्यात जैन मंदिरो छे. पालीताणा जैनोनु भारत विख्यात महातीर्थ छे, ६०३ मीटर उँची शेत्रुंजय पर्वत माला पर ८६३ मंदिरोअे आखा पर्वत ना अनेक शृंगोने लगभग ढांकी दीधा छे. भारतीय कला ना विश्व मान्य अभ्यासी* ***बर्जेसे*** *नोध्युं छे के गिरिशृंगो पर आटली मोटी संख्या मां आवा मंदिरोंनो*

समुह जगत मां अन्यत्र कयांय नथी। मोटे भागे आरस पहाण थी अने सफेद पत्थरों थी बंधायेला आ मंदिरों नुं स्थापत्य अने बेनमून कारीगरी वालुं उत्कृष्ट कोटिनुं शिल्प-कोतरकाम हेरत पमाडे तेवुं सुंदर छे. पर्वत नी टोच पर रचायेली आ मंदिर नगरी देवनगरी जेवी पवित्र अने मनोरम लागे छे. अेनी पाषाणी प्रतिमाओ देव मूर्तिओ गंधर्वो-अप्सराओ अने अन्य अनेकनी अे सृष्टि गिरि शिखर ने दूध धाराअे नवरावती चांदनीमां अे जीवंत अने दिव्य बनी जती लागे छे, धरतीना मानवीओअे जाणे ऊंचा हाथ उठावी ने प्रभु ने प्रार्थना साथे उपहार धर्यो होय, तेवुं देखाय छे. शत्रुंजय तीर्थ मात्र जैनो नुं ज नहीं श्रद्धावान अने सौन्दर्य प्रेमी अेवा सौनुं आराध्य तीर्थ छे.''

इसी प्रकार फ्रेंच कलाकार **ज्युटिर्नो** कहता है, कि *''स्थापत्य कला के प्रदेश में जैनों ने ऐसी पूर्णता सिद्ध की है, कि अन्य कोई उनकी तुल्यता में नहीं आ सकता, अन्य धर्मिओं के विशाल तथा सुंदर मंदिर हैं, लेकिन जैनों ने मंदिरों के नगरो की प्रतिष्ठा करके हद कर ली है, वह एक अद्‌भुत कला सर्जन है।''*

कषाय और विषय रूप शत्रु पर विजय प्राप्त कराने वाला यह तीर्थ शत्रुंजय जिस देश में आया हुआ है, उसका नाम कितना सार्थक है सौराष्ट्र! जिसमें सभी राष्ट्रों का समावेश हो जाय, जहां सौ+राष्ट्र, गुजराती में सौ शब्द का अर्थ होता है 'सभी' यानी सभी राष्ट्रवासियों को इधर आने की इच्छा हो जाय, और जहां आने पर अन्य जगह पर जाने की जरुरत नहीं रहे, तथा जहां जाने के साथ सभी को स्वराष्ट्र अर्थात् बाह्य दृष्टि से खुद की व आंतरदृष्टि से आत्मिक साम्राज्य की अनुभूति हो, वह सौराष्ट्र! सौराष्ट्र के भाल पर ऐसा सौभाग्य तिलक अंकित करने वाला केवल एक तत्व है - महातीर्थ श्री शत्रुंजय !!

ऐसे देखा जाये तो ढाई द्वीप के प्रांगण में ऐसा एक भी प्रदेश नहीं है, जहां से मुक्ति को पाने वाले साधकों की संख्या अनन्त न हो! इसमें उस पृथ्वी के प्रदेश का प्रभाव कारण नहीं है, लेकिन वहां से मोक्ष में जाने वाले मुमुक्षुओं के स्वयं का प्रबल पुरुषार्थ है, जबकि इस गिरिराज पर जिन आत्माओं ने सिद्धि हासिल की है, उसमें उस पुरुषार्थ के साथ-साथ इस गिरि का प्रभाव मुख्य कारण बना है। यह गिरिराज मात्र पत्थरों का समूह नहीं है, लेकिन पत्थरों के कंकर कंकर पर अनंत सिद्धों का स्पर्श है।

टूंक-टूंक पर श्रद्धा, भक्ति व समर्पण के विकसित पुष्प के उद्यान है। इस तीर्थ व राजा ऋषभदेव का इस पुस्तक में महागान है।

समस्त विश्व में अजोड ऐसे शत्रुंजय पर बिराजमान भगवान आदिदेव का दर्शनरुपी अमृत यही सच्चा पान है...।

जो यात्री इस महागान के फव्वारे में स्नान करता है, उसके प्राण में भी

महाचेतना का सिद्धरस झलकने लगता है। इसीलिये यह तीर्थ श्री सिद्धक्षेत्र-सिद्धगिरि के रूप में प्रसिद्ध है व गिरिराज के रूप में इसका गौरव स्वयंसिद्ध है।

यह तीर्थ इस संसार व शिवनगरी के मध्य का अखंड अभंग सेतु है। इस सेतु पर आपका पर्यटन चालू रखना। एक मंगल दिन में व मंगल घडी में हंसते हृदय से आप शिवनगरी में निश्चय ही प्रवेश कर सकेंगे...। जैसे यहाँ पाण्डवों के साथ २० करोड़ आत्माएँ मोक्ष सिधारी हैं, अजितसेन मुनि १७ करोड़, सोमयश १३ करोड, शाम्बप्रद्युम्न साढ़े आठ करोड़, राम-भरत ३ करोड़, नमि-विनमि दो करोड़, श्रीसार मुनि-सागर मुनि एवं कदम्ब गणधर एक-एक करोड़, नारदजी ९१ लाख, आदित्य यश एक लाख, वसुदेव की भूतपूर्व पत्नियाँ ३५०००, साध्वीजी दमितारी १४ हजार, अजितनाथ भगवान के १०००० मुनि, थावच्चा गणधर १००० मुनि, थावच्चा पुत्र १०००, शुकाचार्य १०००, शेलकजी ५०० मुनि, प्रद्युम्न की पत्नी वैदर्भी वगैरह ४४०० साध्वियाँ एवं सुभद्र मुनि ७०० मुनियों के साथ मोक्ष गये हैं। अधिक क्या कहें - यह तीर्थ शाश्वत होने के कारण अनादि अनंत अतीत काल में इस भूमि के एक-एक कण पर अनन्त आत्माएँ मोक्ष सिधारी हैं। एवं अनंत आत्माएँ भविष्य में मोक्ष जायेगी। इसी कारण स्तवन में गाया है-कि **'इण गिरि साधु अनन्ता सिध्या'....**

चेतन! अनागत (भावी) चौबिशी के सभी तीर्थंकर यहां पधार कर देशना देंगे और मोक्ष सिधारेंगे।

चेतन! जिसका एक एक कण ऐसा पवित्र हो, उस पर भला पैर कैसे रखा जा सकता है? यदि हम में शक्ति व सामर्थ्य हो, तो गुलांछ खा-खाकर ऊपर चढ़ें, परन्तु ऐसी शक्ति नहीं है, अतः कम से कम पांवों में चप्पल, बूट अथवा जूते, ट्रान्जिस्टर अथवा बिस्किट-खाखरे, पान-पराग आदि पदार्थ महापवित्र तीर्थ पर न ले जायें। गिरिराज पर चढ़ने से पूर्व चप्पल आदि आगम मन्दिर धर्मशाला में अथवा अन्यत्र छोड़ कर ही ऊपर चढ़ना है। पहाड पर चढ़ते हुए हीरे-ज़वाहरात-फल वगैरह से गिरिराज को वधाकर ऊपर चढना चाहिए।

चेतन! द्रव्य-यात्राएँ तो तूने अनेक की होगी, परन्तु आज भाव-यात्रा करनी है।

चेतन! सम्पूर्ण जगत् में भटक कर तूने भयंकर कर्म-बन्धन करके अपने विनाश को निमन्त्रण दिया है। जलवायु परिवर्तन का बहाना करके तू अनेक डुबाने वाले ऊटी, माथेरान, जम्मू-काश्मीर, महाबलेश्वर, दार्जिलिङ्ग, शिमला, जापान, होंगकोंग और होलीवुड़ आदि स्थानों पर घूम

आया और पाप - कर्म का अपार बन्ध किया, जहाँ धन का धुँआ उड़ाकर कलहंस का पंख बनने के बजाय अपने कर्मों से काली स्याही जैसी तेरी आत्मा बन गई। ग्रीष्मावकाश में हिल-स्टेशन पर भ्रमण हेतु जाने की एक फैशन सी बन गई है, परन्तु स्मरण रहे, कि वे हिल स्टेशन तुझे डुबाने वाले हैं और तीर्थ-स्थान तिराने वाले हैं।

चेतन ! पुण्यशाली जैन एवं अजैन व्यक्ति श्री सिद्धगिरिराज के महातीर्थ पर जाकर आदीश्वर दादा को भाव पूर्वक वन्दन करते हैं और अपने कर्मों का क्षय करते हैं। सिद्धगिरि की महिमा केवलज्ञानी जानते हैं, परन्तु वे कह नहीं सकते। तीनों कालों में यह तीर्थराज प्राय: शाश्वत है। इस तीर्थ की महिमा प्रदर्शित करने वाली पंक्तियाँ तूने सुनी ही होंगी - *''पापी अभव्य नजरे न देखे''*, *''गिरिवर फरसण नवि कर्यो ए, ते रह्यो गर्भावास.....''*, *''पशु पंखी जे इण गिरि आवे, भव त्रीजे ते सिद्ध ज थावे''*, *''कांकरे कांकरे अनन्ता सिद्धया''* ऐसे अनुपम महातीर्थ की आज तुझे भाव पूर्वक यात्रा करनी है, जिससे भव यात्रा मिट जायें। इस भावयात्रा का अर्थ ही यह है कि ''**A Complete Concentration; a Peaceful yoga and meditation of Shatrunjay.**''

चेतन ! शत्रुंजय तीर्थ जगत के तीर्थों में महान प्रभावक और चमत्कारी है व आकाश में लाखों ताराओं के बीच में जैसे चंद्र शोभता है, उसी तरह शत्रुंजय शोभित हो रहा है। पुण्य पुंज का यह धाम है। जैसे रजनी के गाढ अंधकार में किसी मार्ग भूले प्रवासी को ध्रुव का तारा या झोंपडी का दीपक सच्ची राह बताते हैं, उसी प्रकार संसार के आधि, व्याधि तथा उपाधि में ग्रस्त संतप्त मानव को पवित्र जीवन की राह शत्रुंजय गिरि का उत्तुंग शिखर बता रहा है। प्रेरणामय दर्शन दे रहा है।

तीर्थभूमि का मघमघायमान शांत वातावरण मनुष्य के संतप्त मन को परिशुद्ध, प्रशांत व प्रफुल्लित बनाता है.... तीर्थ यात्रा उच्च भावना, एकाग्रता, शांति, संयम, तपश्चर्या तथा आत्म शुद्धि पूर्वक की जाये, तो प्रत्येक मानव को प्राण प्रेरक रुप बने और जन्म जन्मांतर के फेरे मिट जायें ...।

इस प्रकार तीर्थ की महिमा व प्रभावकता को जानकर ऐसा कौन मूर्ख होगा जो उसका लाभ लेने में आलस्य करे ? तीर्थ भक्ति के फल अगणित हैं, लेकिन वे हमें नहीं मिलते हैं, क्योंकि अपनी आत्मा के भावों की कमी है। जब तीर्थ के प्रति पूर्ण भक्ति जागृत होगी, तब कोई अद्भुत प्रकाश अपनी आत्मा में तथा तीर्थ में झलकेगा...। अत: तीर्थ के प्रति भक्ति व श्रद्धावाले

भव्य जीव आचरण का ध्यान रखें, यही सच्ची भक्ति है ...। चेतन ! तनिक ध्यान रखना और चलते समय अन्य कुछ भी बात मत करना। सिद्धगिरिराज की महा पवित्र धरती में मोक्ष सिधारे ऐसे महा पुण्यशाली आत्माओं का चिन्तन करते करते चलो आगे बढ़ें, चेतन !

केवली भगवंत अईमुत्ता मुनि ने श्री शंत्रुजय लघुकल्प में कहा है कि

नवकार सहिय, पोरिसि, पुरिमड्ढेगासणं च आयामं ।
पुंडरियं च सरंतो, फलकंखी कुणई अभतट्ठं ।।१६।।
छट्ठाट्ठमदसदुवालसाणं मासद्ध मासखवणाणं !
तिगरण सुद्धो लहई, सेत्तुजं संभरतो अ ।।१७।।

अर्थात् जो व्यक्ति एक उपवास करके सिद्धगिरिराज का स्मरण (भाव-यात्रा) करता है, उसे एक मासक्षमण के तप का लाभ प्राप्त होता है, यदि आयंबिल करता है तो पन्द्रह उपवास का, एकासना करता है तो पांच उपवास का, पुरिमड्ढ करता है उसे चार उपवास का, पोरिसी करता है उसे तीन उपवास का और जो नौकारसी करता है उसे दो उपवास का लाभ प्राप्त होता है।

अरे चेतन ! इस प्रकार की भावयात्रा के लिए समय निकालना। आज तुझे मैं विस्तार पूर्वक भावयात्रा कराता हूँ। बीच-बीच में जहाँ तीर्थंकरों की चरण - पादुकाएँ एवं प्रतिमाजी आयें, वहां **'नमो जिणाणं'** और जहाँ सिद्ध परमात्मा की चरण-पादुकाएँ एवं प्रतिमाजी आयें, वहाँ **'नमो सिद्धाणं'** बोलना। इससे तेरा कर्ममल जल कर भस्म हो जायेगा।

गुरुदेव ! धन्य है, आज के दिन को, क्योंकि मैं भाव से पवित्र सिद्धगिरिराज पर चढ़ रहा हूँ। जहाँ कण-कण पर अनंतानंत आत्माएँ सिद्धपद को प्राप्त हुई हैं। युगादि श्री आदिनाथ भगवान जहां पर पूर्व ९९ बार समवसरे हैं। अहो! अहो! इस चोबीशी के चोबीश भगवान जिधर पधारे तथा अनागत चौबीशी के भी पद्मनाभादि चौवीश तीर्थंकर भी पधारेंगे। और श्री अजितनाथ व श्री शांतिनाथ जी जहां पर चातुर्मास रहे...।

चेतन ! भावयात्रा के लिये आँख बंद कर दे और कल्पना करना, कि अनंतोपकारी देवाधिदेव तथा परम गुरुदेव की कृपा से हमें आकाशगामिनी विद्या प्राप्त हुई है और हम आकाश के रास्ते से श्री सिद्धाचल महातीर्थ पर जा रहे हैं। बीच में शंखेश्वर वगैरह तीर्थ आते हैं। **नमो जिणाणं** करके वल्लभीपुर होकर जा रहे हैं। आँखे खोलकर अहहा... हा ! देखो, अपन देखते-देखते तो शत्रुंजय के समीप पहुँच गए हैं, देखो यह जो दिख रहा है,

वह श्री गिरिराज। बोलो "**श्री शत्रुंजय गिरिराज की जय**" चलो अपन नीचे उतरें।

चेतन ! चलते रहें। अब हम जय तलहटी के समीप आ पहुँचे हैं। यहाँ दोनों ओर दो हाथी शोभायमान हैं। जब राजा, महाराजा सिद्धगिरि की यात्रा पर आते, तब वे हाथी से नीचे उतर कर पैदल यात्रा करते थे। उसके प्रतीक स्वरूप दोनों ओर हाथी के पुतले खड़े किये हुए प्रतीत होते हैं मानो वे तीर्थयात्रियों का स्वागत कर रहे हों।

चेतन ! हम '**निसीहि**' कह कर एक एक कदम बढ़ाते-बढ़ाते हुए करोड़ों भवों के अपने पापों को झटकते हुए एक-एक सीढ़ी चढ़ रहे हैं । सीढ़ियें समाप्त होने पर चौक आया। चेतन ! अपन चलते जाये, और मन में सिद्धगिरि की महिमा का गुंजन करते जाये।

बोलिये, श्री सिद्धगिरिराज की जय !
बोलिये, श्री आदीश्वर भगवान की जय !

जय (तलेटी) तलहटी

वन्दना, वन्दना, वन्दना रे,
गिरिराज को सदा मोरी वन्दना रे --

'गिरिवर दर्शन विरला पावे, पूरव संचित कर्म खपावे'

चेतन ! यह जय तलेटी (तलहटी) आई । यह स्थान एक युग में ''मनमोहन पाग'' के नाम से विख्यात था । परन्तु यहाँ पर चैत्यवंदन के बाद भक्तों के हृद्‌य में से ''बोलो आदीश्वर भगवान की जय'' यह उद्‌गार निकल पडता है। 'जय' शब्द से इसका नाम जय तलेटी (तलहटी) प्रसिद्ध हुआ। चेतन! सम्मुख स्थित देहरियों में चरण-पादुकाएँ हैं, जिनमें सामने निन्नाणवे पूर्व बार इस गिरिराज पर पदार्पण करने वाले श्री ऋषभदेव, यहाँ वर्षावास करने वाले श्री अजितनाथ एवं शान्तिनाथ, आठवें उद्धार के उपदेशक श्री अभिनन्दन स्वामी आदि की चरण-पादुकाएं हैं। दाहिनी एवं बायीं ओर की विभिन्न देहरियों में भी चरण - पादुकाएं हैं।

चेतन! आओ 'नमो जिणाणं' बोल कर सबको वन्दन करें। देहरियों के नीचे पर्वत का एक छोटासा भाग महा पवित्रता के प्रतीक के रूप में

स्थापित किया गया है। यों तो सम्पूर्ण गिरिराज पूजनीय एवं महापवित्र है, परन्तु इतनी सारी पूजनीयता कैसे सम्हाली जा सकती है ? अत: महापुरुषों ने अमुक भूमि को सीमित कर दी है। इस संपूर्ण गिरिराज को अर्पित पूज्यता व पवित्रता के प्रतीक सम 'गिरिशिला' जय तलहटी का यह मुख्य पूजा स्थान है, प्रतिदिन इस गिरिशिला की केशर-चंदन से द्रव्य पूजा व स्तुति स्तवना द्वारा भावपूजा होती है, और जिसका नित्य अभिषेक होता है, केशरादि से आँगी (अंगरचना) होती है, पुष्पारोपण होता है। इस पावन धरा का मस्तक से स्पर्श करके यहाँ हम प्रथम चैत्यवन्दन करें।

(चैत्यवन्दन, स्तवन, स्तुति पेज नं. १४५ पर दिये गये हैं।)

जय (तलेटी) तलहटी का मुख्य पुजा स्थान
''गिरिशिला''

श्री पुण्डरिकस्वामी की चरण पादुकाएँ

नोट :- इस देरी की चरण पादुकाएँ पेज नं. ९९ पर है ।

चेतन ! गिरिराज चढने से पहले दाहिनी तरफ की देवकुलिका में आदीश्वर भगवान के प्रथम गणधर पुण्डरिक स्वामी की चरण पादुका के दर्शन करते हुए "**नमो सिद्धाणं**" बोलें ।

चेतन ! प्रभु ऋषभदेव ने विहार करने की इच्छा वाले अपने गणधर पुंडरिक स्वामी को ५ करोड मुनिओं के साथ इस गिरिराज पर रहने हेतु कहा था, क्योंकि इनको परिवार सहित केवलज्ञान व मोक्ष इस गिरिराज के आलंबन से होने वाला है, ऐसा भगवान ने जाना था। कितने ही अल्पमति वाले स्थापना तीर्थंकर यानि मूर्ति व स्थावर तीर्थ को जड कहकर पूज्य नहीं मानते और वन्दन आदि का निषेध करते हैं। उन्हें यह सोचना चाहिये, कि साक्षात् तीर्थंकर प्रभु यानी जंगम तीर्थ (भाव निक्षेप से रहे हुए) ने अपने साथ में आने की इच्छा वाले पुंडरिक स्वामी आदि को भी इस स्थावर तीर्थ के

आश्रित रहने को कहा था। इसका मतलब यह है कि स्थावर तीर्थ (स्थापना निक्षेप) योग्य आत्माओं को संसार से पार उतरने के लिए पुष्टालंबन है। यह निःसंदेह आगम सत्य है।

चेतन! पांच करोड आत्माओं का स्मरण करते हुए पुंडरिक स्वामी को "**नमो सिद्धाणं**" बोलकर वंदना करें उसके बाद तनिक आगे बढ़ें।

चेतन! अब अपन गिरिराज पर चढने की तैयारी करें। बायीं तरफ श्री गोविंदजी जेवतजी खोना द्वारा निर्मित धर्मनाथ प्रभु के जिनालय में "**नमो जिणाणं**" कहकर वंदना करें।

श्री अजितनाथजी की चरण-पादुकाएँ

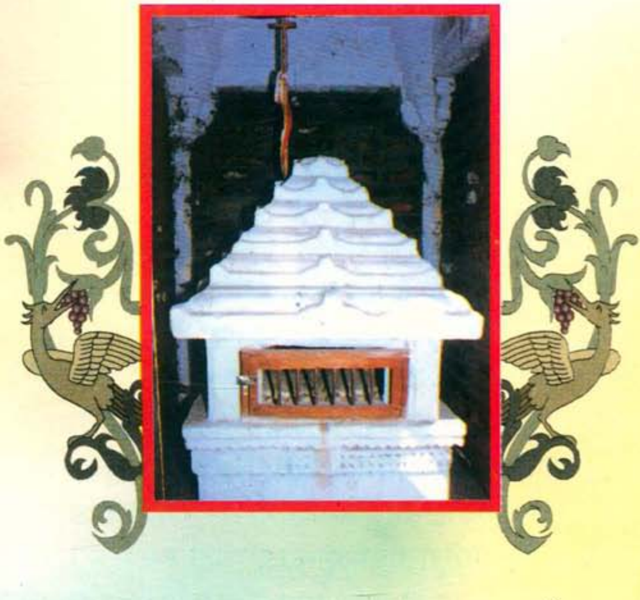

चेतन! अब हम बाबू के जिनालय की ओर सीधी सीढियों से ऊपर न चढ़कर दाहिनी ओर की सीढ़ियों के द्वारा ऊपर चढ़ें। मार्ग की बायीं ओर श्री अजितनाथ भगवान की चरण-पादुकाएँ हैं क्योंकि श्री अजितनाथ परमात्मा ने यहाँ वर्षावास किया था और यहाँ उनके दस हजार मुनिगण मोक्ष सिधारे थे। निन्नाणवे प्रकार की पूजा में कहा है - कि "**अजितनाथ मुनि चैत्र नी रे, पूनमे दस हजार सलूणा।**" '**नमो जिणाणं**'

श्री गौतम स्वामी की चरण पादुकाएँ

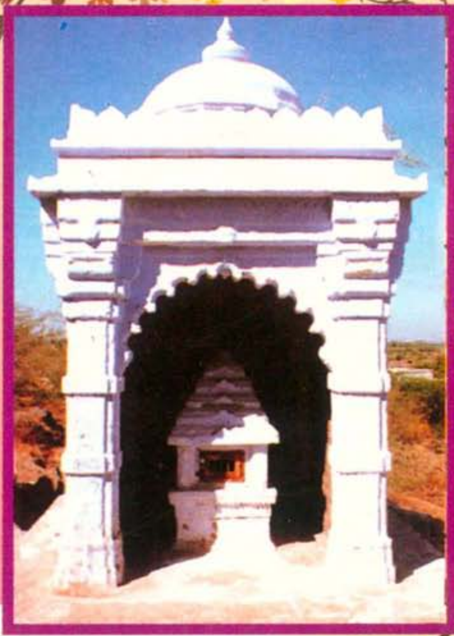

चेतन ! गिरिराज की सीढ़ियों के दाहिनी ओर की तीन देहरीयाँ हैं, उसमें प्रथम देहरी में श्री गौतम स्वामी की चरण - पादुकाएं हैं। श्री शत्रुंजय गिरिराज दर्शन पुस्तक के अनुसार जंबुद्वीप के पूर्व महाविदेह क्षेत्र की पुष्कलावती विजय के वैताढ्य पर्वत के दक्षिण श्रेणी में वेगवती नगरी है, उसमें श्री गौतमस्वामीजी का जीव पूर्व के चौथे भव में सुवेग विद्याधर राजा का वेगवान नामक पुत्र था। वहां पर साधना करने पर भी सिद्धि नहीं मिलने पर वेगवान ने शत्रुंजय गिरिराज पर आकर साधना प्रारंभ की, तब केवल दो महिनों में ही सिद्धियां प्राप्त हो गई। बाद में वैराग्य आने पर धीसखा मंत्री के साथ दीक्षा ली व सुंदर संयम का पालन करके आठवें देवलोक में गये।अंतिम भव में अनेक लब्धियों के धारक श्री गौतम स्वामी गणधर बने । उनके दर्शन करके **'नमो सिद्धाणं'** बोलना है।

चेतन ! ध्यान रखना, कहीं नीचे का दोहा बोलना भूल न जाये।

''अंगूठे अमृत वसे, लब्धि तणा भंडार ।
ते गुरु गौतम समरिये, वांछित फल दातार॥''

श्री आदीश्वर भगवान की चरणपादुकाएँ

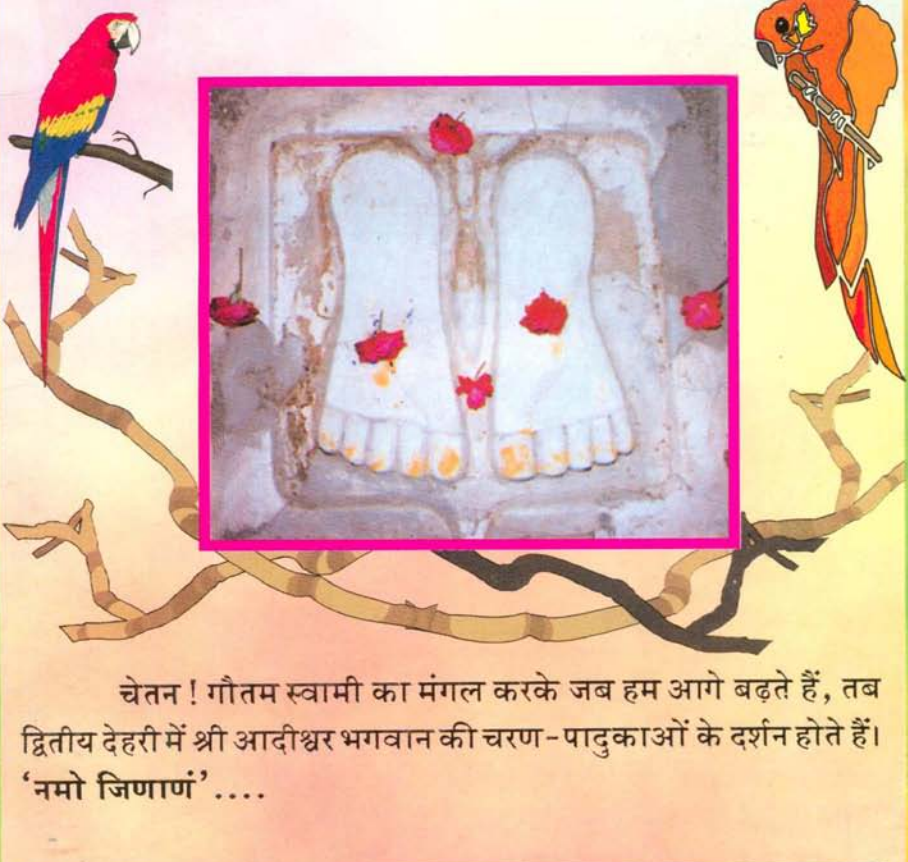

चेतन ! गौतम स्वामी का मंगल करके जब हम आगे बढ़ते हैं, तब द्वितीय देहरी में श्री आदीश्वर भगवान की चरण-पादुकाओं के दर्शन होते हैं। **'नमो जिणाणं'....**

तित्थस्स वण्णवाओ एवं लोगम्मि बोहिलाभो य।
केसिंचि होई परमो अन्नेसिं बीयलाभो त्ति ॥

अर्थात् तीर्थ की कथा सुनकर कई जीव बोधिबीज को अपनी आत्मा में बो देते हैं, और बोया हो उसे अंकुरित कर देते हैं।

(यात्रा पंचाशक)

श्री शान्तिनाथ की चरण पादुकाएँ

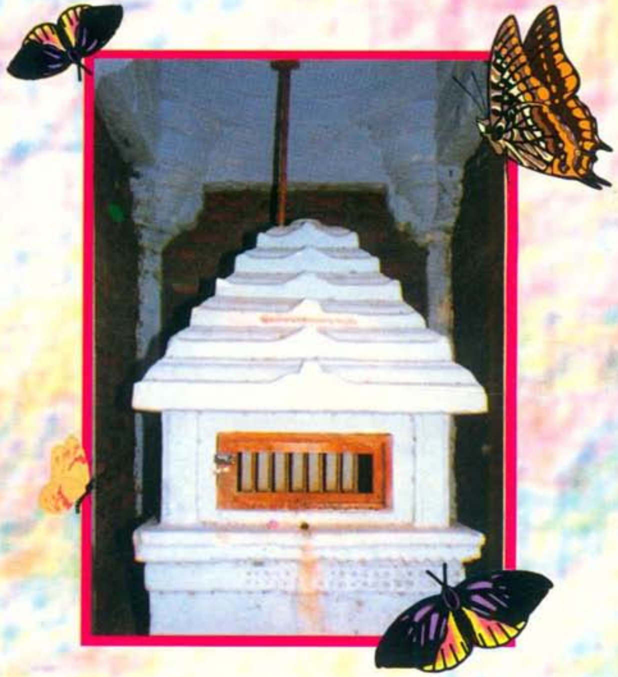

चेतन ! समीप ही तीसरी एक देहरी में श्री शान्तिनाथ की चरण-पादुकाएँ हैं। श्री शान्तिनाथ भगवान ने १,५२,५५,७७७ मुनिवरों के साथ यहाँ वर्षावास किया था। वे समस्त मुनिवर इस गिरिराज से मोक्ष सिधारे हैं। अत: श्री शान्तिनाथ भगवान की स्मृति में यहाँ उनकी चरण-पादुकाएँ स्थापित की गई हैं। निन्नाणवे प्रकार की पूजा में कहा है कि :-

"लख बावन ने एक कोडी रे, आदीश्वर अलबेलो छे।
पंचावन सहस ने जोडी रे, आदीश्वर अलबेलो छे।
सात सौ सत्तोतेर साधु रे, आदीश्वर अलबेलो छे।
प्रभु शान्ति चौमासुं कीधुं रे, आदीश्वर अलबेलो छे।
तव वरिया शिवनारी रे, आदीश्वर अलबेलो छे।
सिद्धाचल शिखरे दीवो रे, आदिश्वर अलबेलो छे।

चेतन ! **'नमो जिणाणं'** कहकर चलें।

सरस्वती मन्दिर

चेतन ! वहाँ से तनिक आगे चलने पर मार्ग के दाहिनी ओर सरस्वती माता का मन्दिर दृष्टिगोचर होता है। अब मूल सीढ़ियों को छोड़कर एक छोटी सी गली से चलो सरस्वती देवी के मन्दिर की ओर चलें ।

चेतन ! यहां पर ध्यान रखना, क्योंकि देहरी छोटी है, अत: तनिक सिर झुकाकर श्री सरस्वती देवी के दर्शन कर लें । श्रावक को प्रणाम व साधु-साध्वीजी को धर्मलाभ कहना चाहिए ।

चेतन ! भगवती सरस्वती के समक्ष निम्न स्तुति बोलें -

''सुअ -देवया भगवई, नाणावरणीयकम्मसंघायं ।
तेसिं खवेउ सययं, जेसिं सुअ सायरे भत्ती ।।''

अर्थात् जिन व्यक्तियों की श्रुतज्ञान रुपी सागर में भक्ति हो, उनके ज्ञानावरण कर्म के समूह का भगवती सरस्वती क्षय करें ।

चेतन ! अब हम वापस लौट चलें और तनिक चलकर मूल सीढ़ियों पर पहुँचें।

श्री धर्मनाथ, कुन्थुनाथ एवं नेमिनाथ की चरण-पादुकाएँ

चेतन ! यहाँ दाहिनी ओर भिन्न-भिन्न तीन देहरियों में श्री धर्मनाथ प्रभु, श्री कुन्थुनाथ और श्री नेमिनाथ की चरण-पादुकाओं के दर्शन करें।

चेतन ! नेमिनाथ प्रभु इन्द्र की विनंति से शत्रुंजय तरफ पधारे थे, परन्तु तलहटी तक ही पधारे थे। ऊपर नहीं चढे। अत: उनकी चरण-पादुकाएँ यहाँ पर प्रतिष्ठित की गई, एवं जो वयोवृद्ध श्रद्धालु गिरनार पर नहीं चढ़ सकें, उन्हें गिरनारजी के श्री नेमिनाथ दादा की यात्रा का लाभ प्राप्त हो जाये, क्योंकि गिरनार भी इस गिरिराज का एक विभाग है। व श्री धर्मनाथ प्रभु इधर समवसरे थे, और भव्य जीवों को देशना दी थी। प्रभु का उपदेश सुनकर अनेक जीव इस शत्रुंजय पर मोक्ष में गये। श्री कुंथुनाथ भगवान भी इधर पधारे व देशना दी थी। इसलिए यहाँ उनकी चरण - पादुकाएँ प्रतिष्ठित की गई हैं। अत: उसी उत्तम भावना से इस देहरी में श्री नेमिनाथ भगवान आदि की चरण-पादुकाओं को '**नमो जिणाणं**' कहकर वन्दन करें।

बाबू का मन्दिर (धनवसी टूँक)

अरे चेतन ! अब हम बायीं ओर की सीढ़ियों से बाबू के मन्दिर की ओर दर्शन करने के लिये चलें। सीढियाँ चढ़ने पर यह बाबू के मन्दिर का द्वार आ गया है।

जल मन्दिर

अभी जहाँ बाबु धनपतसिंह का मंदिर है, वहाँ पर आशुक मंत्री ने बारहवीं शताब्दी के दूसरे चरण में लगभग वि.सं. ११७६-८६ (सन् ११२०-३०) के बीच में भ. नेमिनाथजी का मंदिर निर्मित करवाया था, जिसका उल्लेख सोलहवी शताब्दी तक परिपाटीकार करते आये हैं।

भीतर प्रविष्ट होकर बायीं ओर चलें, जहां भगवान श्री महावीर स्वामी का जल-मन्दिर है। यहाँ भगवान महावीर परमात्मा के दर्शन करके सामने गौतम स्वामी के दर्शन कर लें। भगवान महावीर स्वामी का इस तीर्थ पर पदार्पण हुआ था, तब शत्रुंजय माहात्म्य ग्रंथ के अनुसार इन्द्रों के सिंहासन कम्पायमान होने से देवों से परिवृत ६४ इन्द्र यहाँ आये थे और समवसरण की रचना हुई थी। उस प्रसंग की स्मृति में यहाँ भगवान् महावीर स्वामी के जिनालय का निर्माण कराया गया है और पहाड पर प्राचीन मार्ग पर समवसरण के आकार की देहरी में उनकी चरण - पादुकाएँ स्थापित की गई थी। वे अब श्री पूज्यजी की टूंक में बिराजमान की गई हैं।

'वीरजी आव्या रे, विमलाचल के मैदान'
सुरपति पाया रे, समवसरण मंडाण......।

चेतन ! यहाँ से वापस लौट कर हम चौक में आ जायें। यहाँ चौकीदार को कहेंगे, तो वह हमें रत्न मन्दिर के दर्शन करायेगा।

रत्न मन्दिर

चेतन ! यह रत्न मंदिर है। इसमें भिन्न-२ रत्नों की प्रतिमाएँ हैं। प्राचीन महापुरुषों ने स्वयं के पास संचित रत्नों की प्रतिमा भरवा कर एक अद्भुत उदाहरण प्रस्तुत किया है । आओ, हम समस्त प्रतिमाओं को वन्दन करें । नमो जिणाणं

चेतन ! अब हमें मंदिर के अंदर थोडा ऊपर चढ़ना है। यह बाबू का विशाल जिनालय लगभग 'दादा की टूँक' का अनुकरण है। कतिपय अशक्त नर-नारी चरम जिनालय तक ऊपर न चढ़ सकें, उनकी सुविधा के लिए मुर्शिदाबाद के राय बहादुर बाबू धनपत सिंहजी ने अपनी मातुश्री मेहताब कुमारी की प्रेरणा से विक्रम संवत् १९५० में इस भव्य एवं विशाल जिनालय का निर्माण कराया था ।

बाबू मंदिर के मूलनायकजी

चेतन ! इस जिनालय में मूलनायक श्री ऋषभदेव, पुण्डरीक स्वामी, रायण पादुका आदि दादा की टूंक की तरह सब सुव्यवस्थित हैं। कुल ८४ देहरियाँ हैं। 'नमो जिणाणं' जिनालय में से समीपस्थ मार्ग से मूल सीढ़ियों पर आकर चलो अब हम गिरिराज के ऊपर चढ़ें।

समवसरण मन्दिर

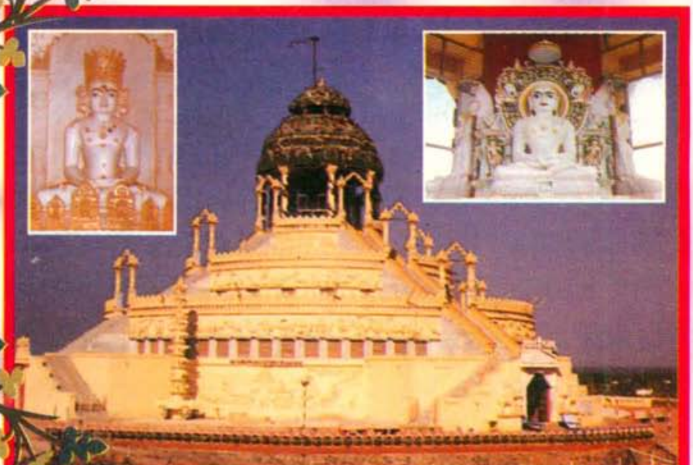

चेतन ! नीचे से आ रहे सोपानों का रास्ता यहां पर जुडता है। अब हम गिरिराज पर कुछ सीढियाँ चढ़ें। दाहिनी ओर हमें विशाल 'समवसरण मन्दिर' के दर्शन होते हैं। समवसरण के भव्य आकार के इस जिनालय में सबसे ऊपर और नीचे मूलनायकजी चौमुखजी के दर्शन और भीतर देहरियों में बायीं ओर से गोलाकार दीवार में १०८ पार्श्वनाथ की प्रतिमाओं के तथा चौबीश तीर्थंकरों के दर्शन होते हैं। ध्यान रखना चेतन ! **'नमो जिणाणं'** बोलना, कहीं भूल मत जाना। दायीं ओर गोलाकार गेलेरी की दीवार में अनेक आचार्य श्री, मुनिश्री एवं श्रावक श्राविकाओंके सचित्र जीवन चरित्र हैं।

प्रथम विश्राम

चेतन ! कुछ सीढियाँ चढ़ने पर प्रथम विश्राम आता है। गिरिराज पर चढ़ते - चढ़ते थक जाये, तब थकान मिटाने के लिए ऐसे विश्राम- स्थलों का निर्माण कराया गया है। चेतन ! वहाँ बैठकर कुछ समय तक सिद्धात्माओं का ध्यान करें, ताकि साँस बैठ जायेगी और थकान भी उतर जायेगी।

दूसरा विश्राम

धोली परब (श्वेत प्याऊ)

चेतन ! इस प्रकार बैठे रहने से तो काम नहीं चलेगा ! जहाँ प्रबल पुरुषार्थ करके अनंत आत्माएं मोक्ष सिधारी हों, वहां फिर थकान उतारने की बात क्या ? चल उठ, खड़ा हो; हम शीघ्र सीढ़ियाँ चढ़ना प्रारम्भ करें।

चेतन ! देख यह दूसरा विश्राम-स्थल आया। इसे ''धोली परब'' (श्वेत प्याऊ) कहते हैं। यहाँ गर्म पानी भी उपलब्ध होता है।

भरत चक्रवर्ती की चरण पादुकाएँ

चेतन ! प्रथम चढाव पूरा होने पर दाहिनी ओर चक्रवर्ती भरत महाराजा की अलौकिक अनासक्ति व आत्म समृद्धि की स्मृति कराते हुए चरण चिन्हों से अंकित एक देहरी अपने समक्ष एक भव्य भूतकाल को ताजा करती हुई खड़ी है। महाराजा भरत भगवान श्री ऋषभदेव के पुत्र और चक्रवर्ती थे। उन्होंने पूर्व भव में श्री शत्रुंजय कल्पवृत्ति ग्रंथ के अनुसार शत्रुंजय की महिमा श्रवण कर अभिग्रह किया था कि जब तक शत्रुंजय पर बिराजमान तीर्थंकरों को वंदन नहीं करूं, तब तक दिन में दो बार भोजन और एक विगई से ज्यादा नहीं खाऊंगा। एवं इस अवसर्पिणी काल में उन्होंने इस महा तीर्थ का प्रथम उद्धार कराया था और वे यहाँ 'छः' री पालक संघ लेकर सर्व प्रथम आये थे। तत्पश्चात् अनित्य भावना का चिंतन करते हुए उन्होंने घातिकर्मों का खात्मा बुलाकर महल (आरीसा भुवन) में केवलज्ञान प्राप्त किया और वे मोक्ष में गये थे।

चेतन ! उन भरत महाराजा के चरणपादुकाओं को नमन कर लें। ये चरणपादुकाएँ विक्रम संवत् १६८५ में स्थापित की गई थी।

सीधाचल

चेतन! अब चलने का सीधा मार्ग आ गया है। अब हमारा साँस नहीं फूलेगा। पालीताना का द्वितीय नाम है - सिद्धाचल; सिद्धाचल की अनुभूति हमें यहाँ होती है। और यह शब्द हमें शिक्षा देता है कि माया-कपट की टेढ़ी चाल से हम अत्यन्त दु:खी हुए हैं। अब सीधे होकर चलें। सीधा चल; अत: साँस नहीं परंतु भावयात्रा की सुवास चढेगी। बातें किये बिना नीचे देख कर ईर्यासमिति का पालन करते हुए हम धीरे धीरे चलते रहें। और चेतन! हम सिद्धाचल का नाम जपते चलें।

इच्छा कुण्ड

चेतन! थोडा चलने पर बायीं ओर यह कुण्ड जो दृष्टिगोचर हो रहा है, इसका निर्माण सूरत निवासी सेठ इच्छाचंद ने विक्रम संवत् १६८१ में कराया था। अतः इसका नाम 'इच्छा कुण्ड' रखा गया है। यहां पर शिलालेख एवं शेठश्री की मूर्ति है। चेतन! ध्यान रखना, ऐसे कुण्ड देख कर कहीं कच्चा पानी पीने की तेरी इच्छा न हो जाये। प्यास लगे तो तनिक सहन करना। यहाँ से आगे भी कुण्ड आयेंगे।

श्री ऋषभदेव, नेमिनाथ एवं वरदत्त गणधर की पादुकाएँ

चेतन ! तनिक ऊपर चढ़ने पर दाहिनी ओर एक देहरी में ऋषभदेव, नेमिनाथ एवं नेमिनाथजी के गणधर वरदत्त की चरण-पादुकाएँ दृष्टिगोचर होती हैं। उनके दर्शन करके 'नमो जिणाणं', 'नमो सिद्धाणं' बोलकर हम कृतार्थ बनें। वरदत्त गणधर का वैसे निर्वाण तो गिरनार पर हुआ था, फिर उनकी चरण-पादुकाएँ यहाँ क्यों ? यह प्रश्न अनेक महानुभावों के मन में उठता होगा। उसका उत्तर यह है कि श्री वरदत्त गणधर ने शत्रुंजय की महिमा का वर्णन किया था। इसी कारण से उनकी चरण पादुकाओं की यहाँ स्थापना की गई है।

लीली परब (हरी प्याऊ)- तीसरा विश्राम

चेतन ! तनिक ऊपर चढ़ने पर बायीं ओर लीली परब (हरी प्याऊ) आती है। यहाँ तीसरा विश्राम - स्थल है। चेतन ! देखना, कहीं 'बैलगाड़ी देखकर पाँव थक न जायें।' चेतन हमें थकान प्रतीत हो और विश्राम लेना पड़े, यह बात भिन्न है, परन्तु देहरियों में तीर्थंकरों एवं मुनिवरों की चरण-पादुकाओं के दर्शन होने पर हम स्वयं को धन्य मानें। चेतन ! हमें बैठना नहीं है, शीघ्र चलेंगे, तो आदीश्वर दादा के शीघ्र दर्शन होंगे।

आदीश्वर की चरण पादुकाएँ

W-91021

चेतन ! यहाँ प्याऊ के सामने दाहिनी ओर की एक देहरी में श्री आदीश्वर भगवान की चरण -पादुकाएँ हैं। 'नमो जिणाणं'

कुमार कुण्ड

GYANMANDIR
MAHAVIR JAIN ... KENDRA
Koba, Gandhinagar-382 009
Phone : (079) 23276252, 23276204-0

चेतन ! हम तनिक ऊपर चढें। दाहिनी ओर यह कुमार-कुण्ड आ गया। अठारह देशों के महाराजा कुमारपाल परम पूज्य कलिकाल सर्वज्ञ श्री हेमचन्द्र सूरीश्वरजी म.सा. के उपदेश से 'छः' री' पालक संघ लेकर यहाँ आये थे। उस समय सवा करोड मूल्य का रत्न अर्पण करके सेठ जगडूशाह ने अपनी मातुश्री को संघमाला पहनाई थी। ऐसे अद्‌भुत संघ की स्मृति में महाराजा कुमारपाल ने इस कुण्ड का निर्माण कराया था और गिरिराज पर 'कुमारपाल विहार' नाम की टूँक का भी निर्माण कराया था।

चेतन ! यहाँ एक विशेष घटना भी हो चुकी है। एक बार वस्तुपाल-तेजपाल संघ लेकर गिरिराज आये थे। दादा आदीश्वर भगवान के दर्शन करके संघ लौटता हुआ यहाँ तक आया, उस समय सामने ढ़ेर के ढ़ेर पुष्प लेकर माली चढ़ रहा था। संघ को लौटता देख कर वह अत्यन्त निराश हो गया। माली को इस प्रकार निराश होता देख कर संघवी वस्तुपाल - तेजपाल ने कहा, ''अरे भाई ! जिस प्रकार आदीश्वर दादा पूजनीय हैं, उसी प्रकार यह गिरिराज भी पूजनीय है। ला तेरे पुष्प, हम यहाँ से गिरिराज का सम्मान करें, उसे बधायें।'' माली को उदारता पूर्वक खूब धन दिया, माली अत्यंत खुश हो गया।

वाह रे संघवी ! धन्य है तेरी उदारता !!

हिंगलाज का चढाव (हडा)

प्रभुजी आव्यो हिंगलाज नो हडो के, केड़े हाथ दई चढ़ो रे लोल.

चेतन ! अब तो सामने की ओर सीढियाँ ही सीढ़ियाँ दृष्टिगोचर हो रही हैं, और वह है, हिंगलाज की चढ़ाई (हडा) है। घबराना मत। पहले जब सीढियाँ नहीं थीं, तब यह चढ़ाई अत्यन्त भयानक प्रतीत होती थी। अच्छे अच्छे बलिष्ठ व्यक्ति भी थक जाते थे और इसीलिये कहावत प्रसिद्ध हुई थी कि -

आव्यो हिंगलाजनो हड़ो, केड़े हाथ दई ने चढो।
फूट्यो पाप नो घडो, बाँधो पुण्य नो पड़ो।

इस प्रकार पुजारी वहाँ खड़ा - खड़ा इन पंक्तियाँ का उच्चारण करता था और यात्रियों के उत्साह में अभिवृद्धि करता था।

(कुछ सीढियाँ चढ़ने के पश्चात् चेतन प्रश्न करता है)

गुरुदेव ! दाहिनी ओर की इस दीवार के गोख में जिस हिंगलाज माता की पूजा होती है, वह कौन है ?

हिंगलाज देवी

चेतन! यह श्री नेमिनाथ भगवान की अधिष्ठायिका हिंगलाज माता सौराष्ट्र की रक्षक मानी जाती थी, गिरिराज पर चढ़ते समय हिंगुल नामक राक्षस यात्रियों को सन्तप्त करता था। अम्बिका देवी ने उसके साथ संघर्ष करके उसे पराजित किया। तब उसने अपना नाम स्थायी रखने का निवेदन किया। उस समय अम्बिका माता ने उसकी प्रार्थना स्वीकार की। तब से अम्बिका देवी की हिंगलाज माता के रूप में पूजा होती है। 'प्रणाम... धर्मलाभ...'

चौथा विश्राम
कलिकुण्ड पार्श्वनाथ की चरण-पादुकाएँ

चेतन ! हँसते हुए हृदय से चढाव चढ़ें, तो पाप का घडा फूट जाए व पुण्य का पुडा बंध जाये, ऐसे हिंगलाज का चढाव सीधा चढ जाए। तब मानो उस थकान को दूर करने के लिए छोटे चौक में श्री कलिकुंड पार्श्वनाथ की चरण पादुकाएँ दाहिनी ओर की देहरी में प्रतिष्ठित की गई हैं। उन श्री कलिकुण्ड पार्श्वनाथ की चरणपादुकाओं के दर्शन होते हैं। चेतन ! कादम्बरी नामक वन में भगवान श्री पार्श्वनाथ कायोत्सर्ग ध्यान में थे। उस समय वहाँ वन के हाथी ने श्रद्धा-भक्ति से अपनी सूँड़ में पानी भरकर उससे प्रभुजी को स्नान कराया यानि उनका पक्षाल किया और कमल पुष्प चढ़ाये। वह हाथी मर कर देवलोक में गया। वहाँ कलिकुण्ड पार्श्वनाथ के तीर्थ की स्थापना हुई। पंचकल्याणक पूजा में कहा है कि -

''काउसग्ग मुद्रा प्रभु ठावे, वन हाथी तिहाँ एक आवे।

जल सूँड़ भरी न्हवरावे, जिन अंगे कमल चढ़ावे रे। मन मोहन सुन्दर मेला।

कलिकुण्ड तीर्थ तिहां थावे, हस्ति गति देव नी पावे रे।''मन०

उन कलिकुण्ड पार्श्वनाथ की चरण - पादुकाएँ यहाँ वि. संवत् १८३५ में स्थापित की गई। अतः उस तीर्थ का भी स्मरण होने से अनेक कर्मों की निर्जरा होती है।

चेतन ! जब भी तू पालीताना आये, तब इन कलिकुण्ड पार्श्वनाथ की चरण - पादुकाओं को वन्दन करके **'नमो जिणाणं'** कहना मत भूलना।

गुरुदेव ! मैं पालीताना तो अनेक बार आया हूँ, परन्तु कलिकुण्ड तीर्थ का ऐसा संक्षिप्त इतिहास आज तक मैं नहीं जान पाया था। ऐसी नवीन बातें जानकर गुरुदेव ! मेरे भावोल्लास में ज्वार उठ रहा है परंतु गुरुदेव ! अब शीघ्रता कीजिये।

चेतन ! शीघ्रता मत कर। अभी तो बहुत नवीन नवीन बातें जानने को मिलेगी। शान्ति पूर्वक सिद्ध आत्माओं का ध्यान करते हुए धीरे धीरे चलना हैं हमें।

चेतन ! थोडा ऊपर चलने पर कुछ वर्षों पहले 'नानो मान मोडीओ' व 'मोटो मान मोडीओ' नामक प्रसिद्ध दो चढाव यहाँ थे, जिसको चढ़ते हुए छोटे-बडे सभी के मान मुड-टूट जाते थे। लेकिन अभी चेतन ! यहाँ नया रस्ता हो जाने से ये दो चढाव अब लोग भूल गए हैं।

पाँचवा विश्राम

चेतन ! कलिकुण्ड की चरण-पादुकाओं की देहरी से दो मार्ग निकलते हैं-प्राचीन मार्ग एवं नवीन मार्ग। प्राचीन मार्ग ऊबड-खाबड व पत्थरों वाला है क्योंकि वहाँ सीढियाँ नहीं हैं। अनेक पुण्यशाली महानुभावों के चरण-स्पर्श किये हुए ये पत्थर चिकने और गोल हो गये हैं। पुराना रास्ता शेठश्री आनंदजी कल्याणजी जैन पेढी द्वारा बंद कर दिया गया है। फिलहाल लोग प्रायः वहाँ से जाते नहीं है। वहाँ की एक सुन्दर घटना तुझे सुनाता हूँ- प्राचीन मार्ग से तनिक ऊपर चढ़ने पर वहाँ दाहिनी ओर बैठने का चबूतरा है। कहते हैं कि भरुच के तत्त्वज्ञ श्रावक सेठ अनूपचन्द मलुकचन्द एक चारण के साथ यात्रा कर रहे थे। वे विश्राम के उद्देश्य से यहाँ बैठे। सेठ ने पूछा, "चारण ! यदि यहाँ किसी की मृत्यु हो जाये, तो वह मृत्यु कैसी कही जायेगी ?"

चारण ने कहा, ''सेठ! ऐसा सौभाग्य पापियों को तो प्राप्त होता ही नहीं। महापुण्यशाली व्यक्ति की ही सिद्धाचल के पवित्र स्थान पर मृत्यु होती है। 'अच्छा तो ले' - कहते हुए सेठ ने चारण के कंधे पर अपना सिर लुढ़का दिया। सेठ का महाप्रयाण हो गया। चारण तो आश्चर्य - चकित हो गया और 'इच्छा मृत्यु' प्राप्त करने वाले उस धन्य आत्मा को वन्दन करता रहा।

महावीर स्वामी की चरण पादुकाएँ

चेतन ! पुराने मार्ग में समवसरण के आकार की छोटी देहरी भी थी, जिसमें आसन्न उपकारी भगवान श्री महावीर स्वामी की चरण- पादुकाएँ थीं, क्योंकि सिद्धगिरिराज पर भगवान श्री महावीर स्वामी का समवसरण रचा गया था। परंतु वे चरण पादुकायें अब श्री पूज्य की टूंक में श्री पद्मावती देवी के पास में बिराजमान की गई है। चेतन ! हम सीधे नवीन मार्ग से धीरे - धीरे सीढ़ियाँ चढते जायें। बीच में कुछ समतल मार्ग भी आता है। ऐसा करते-करते हम ऊपर आ गये। वहाँ लम्बा समतल मार्ग हमें मिल गया। अब हमें श्वास नहीं चढ़ेगा।

शाश्वत जिन की चरण पादुकाएँ व छाला कुंड

चेतन ! हम तनिक आगे बढ़ें, जहाँ बायी ओर विक्रम संवत् १८७० में अहमदाबाद निवासी सेठ श्री हेमाभाई वखतचन्द द्वारा निर्मित कुण्ड एवं प्याऊ हैं और उसके समीप ही नक्कासी युक्त देहरी में कमलपत्र में ऋषभ, चन्द्रानन, वारिषेण तथा वर्द्धमान - इन चार शाश्वत तीर्थंकरों की चरण - पादुकाएँ वि. संवत् १८७० में स्थापित की हुई हैं। **''नमो जिणाणं''** कह कर उनके दर्शन करके हम अपना जीवन धन्य बनायें।

गुरुदेव ! यह बात तो सर्व प्रथम आज ही ज्ञात हुई।

चेतन ! इस देहरी के पीछे 'छाला कुण्ड' है। हमें इसकी कोई आवश्यकता नहीं है, क्योंकि इसमें कच्चा जल है।

श्री पूज्य की ट्रूँक

चेतन ! यहाँ से बायी ओर प्राचीन मार्ग ऊपर जाता है परन्तु हमें तो नूतन मार्ग से चढ़ना हैं। कुछ सीढियाँ चढ़ने पर हमें दायी ओर 'श्री पूज्य की ट्रूँक दृष्टिगोचर होती है। यहां से दादा के मंदिर तरफ नजर डाले तो नवटुंक सहित सेंकडों मंदिरों से शोभित देवनगरी के दर्शन होने से अपना हृदय नाच उठता हैं, शिखरों पर लहराती ध्वजा देखकर गिरिराज के समीप पहुँचने का हृदय में अनहद आनंद महसूस होता है। नीचे नजर करे तो अनेक मंदिरों व संख्याबद्ध धर्मशालाओं के नगर सदृश्य पालीताणा शहर का दृश्य चित्त में आल्हादकता उत्पन्न करता है। और मानो हम विमान में बैठे हो व उसकी खिड़की में से नीचे दृष्टि डालने पर नीचे रहे हुए मकान खिलौने जैसे तथा खेत मानो धरती पर नील मणी की फर्श बने हो ऐसा प्रतीत हो रहा है।

श्री पूज्य की टूंक से पालीताना का दृश्य

अरे चेतन ! देख, प्राकृतिक सुरम्य वातावरण में चारों ओर कितनी उत्तम अनुभूति हो रही है। ध्वजाएँ फहरा रही हैं, धर्मशालाएँ, मंदिर व स्वर्ण-कलश दृष्टिगोचर हो रहे हैं, अद्‌भुत आनन्द की अनुभूति हो रही है।

चेतन ! **'नमो जिणाणं'** कहकर धन्य बनें।

श्री पद्मावती देवी के ऊपर

श्री पार्श्वनाथ की पाँच फणों से युक्त प्रतिमा

चेतन ! इस श्री पूज्य टूँक का निर्माण तपागच्छीय श्री पूज्य देवेन्द्र सूरिजी म.सा. की प्रेरणा से हुआ है। यहाँ चौदह देहरियाँ हैं। एक देहरी में श्री पार्श्वनाथ की अधिष्ठायिका पद्मावती की सात फणों से युक्त सत्रह इंच की मूर्ति है। इसके मस्तक पर पार्श्वनाथ भगवान की पाँच फणों से युक्त प्रतिमा है।

चेतन ! पार्श्व प्रभु को **'नमो जिणाणं'** कहकर वन्दन करके साधर्मिक के रूप में पद्मावती देवी को करबद्ध प्रणाम करना। द्वितीय देहरी में मणिभद्रजी की प्रतिमा है। चेतन ! श्रावक - श्राविकाओं को उन्हें प्रणाम करना चाहिये और साधु - साध्वियों को चाहिये कि वे 'धर्मलाभ' कहें।

चेतन ! यहाँ एक कमरे में श्री गौतम स्वामी की मूर्ति है। लोग वहाँ पर एक लम्बा और मोटा साँप बहुत बार देखते हैं। शायद वह सांप वहाँ का अधिष्ठायक हो सकता है। वहाँ आस - पास की देहरी में श्री पूज्य की चरण - पादुकाएँ हैं। वहाँ एक विशाल कुण्ड भी है, जिसके चारों ओर चार देहरियाँ हैं। वहाँ क्रमशः गोडीजी पार्श्वनाथ, आदिनाथ, गौतम स्वामी और धर्मसूरिजी की चरण - पादुकाएँ हैं। 'जैन परंपरा इतिहास' पुस्तक के अनुसार यह टूंक जिनेन्द्र सूरि की प्रेरणा से बनी है, जिससे इस टूंक को जिनेन्द्र टूंक भी कहते हैं।

द्राविड, वारिखिल्लजी, अइमुत्ता एवं नारदजी की प्रतिमाएँ

चेतन ! श्री पूज्य टूँक से बाहर आकर कुछ कदम ऊपर चढ़ने पर समतल मार्ग आता है। तू शीघ्रता में दौड़ मत जाना। दाहिनी ओर के चबूतरे पर एक देहरी में काउस्सग ध्यान में खड़ी श्याम चार प्रतिमाएँ हैं। उन्हें **'नमो सिद्धाणं'** कहें । उसमें पहली और दूसरी प्रतिमा क्रमशः द्राविड़ और वारिखिल्लजी की हैं ।

द्राविड-वारिखिल्लजी

भगवान ऋषभदेव के पुत्र द्रविड ने अपने दो पुत्र द्राविड एवं वारिखिल्ल को राज्य का योग्य रीति से वितरण करके दीक्षा ग्रहण की थी। तत्पश्चात् अधिक भूमि प्राप्त करने के लिए बडे भाई द्राविड़ ने आक्रमण किया। लघु भ्राता वारिखिल्ल भी दबने जैसा नहीं था। दोनों भाई अपने - अपने दस-दस करोड़ सैनिकों को लेकर युद्ध करने के लिए संग्राम - भूमि में डट गये । युद्ध में दोनों पक्षों के मिल कर दस करोड़ सैनिक हताहत हो गये। तत्पश्चात् सुवल्गु तापस से प्रतिबोध प्राप्त करके दोनों भाई एवं उनके शेष बचे दस करोड़ सैनिक तापस धर्म स्वीकार करके तापस बन गये । बाद में

वे विद्याधर मुनि की प्रेरणा से मिथ्यात्व का त्याग करके विशुद्ध संयमी बनकर सिद्ध गिरिराज पर आये और कार्त्तिक शुक्ला पूर्णिमा के दिन दस करोड़ मुनियों के साथ अनशन करके केवलज्ञानी बन कर मोक्ष सिधारे।

निन्नाणवें प्रकार की पूजा में उल्लेख है कि -

'द्राविड ने वारिखिल्लजी दस कोटि अणगार, साथे सिद्धिवधूवर्या वंदूँ वारं वारा।''

चेतन ! उन्हें **'नमो सिद्धाणं'** कहना मत भूलना ! अरे चेतन ! कार्त्तिक पूर्णिमा के दिन हजारों यात्री गिरिराज की यात्रा करते हैं, परन्तु जिसके निमित्त से उस दिन की यात्रा है, उन दस करोड़ मुनियों में अग्रगण्य द्राविड़ एवं वारिखिल्ल के दर्शन भी वे नहीं करते और उन प्रतिमाओं का परिचय तक नहीं जानते। उनके लिए गुजराती में कहा जाता है कि - **''हीरो घोघे जई आव्यो, डेहली हाथ दई आव्यो।''**

चेतन! अब तू जब भी कार्तिक पूर्णिमा को यात्रा करने आये, तब यहाँ नमन अवश्य करना, भूलना मत। यहाँ कार्तिक पूर्णिमा के दिन नौबत भी बजती है।

अइमुत्ता मुनि

चेतन! तीसरी मूर्त्ति अइमुत्ता मुनि की है। वे कंस के भाई थे, दीक्षित होने के पश्चात् एक बार देवकी के विवाह के समय भिक्षार्थ आये थे। उस समय कंस की रानी जीवयशा ने देवर मुनिवर को नृत्य करने का आग्रह किया, परन्तु अइमुत्ता मुनि वैराग्य में दृढ़ रहे और परम्परा से केवलज्ञान प्राप्त करके नारदजी को शत्रुंजय का माहात्म्य सुनाते समय उन्होंने श्री शत्रुंजय लघुकल्प की रचना की थी, जिसकी प्रथम गाथा में कहा है कि - *''अइमुत्तय केवलिणा कहिअं सत्तुंजय तित्थ माहप्पं। नारयरिसिस्स पुरओ, तं निसुणह भावओ भविआ।''* उनका यहीं पर निर्वाण हुआ है।

अथवा भिक्षार्थ गये हुए गौतम स्वामी से जिन्होंने प्रेरणा प्राप्त करके अल्पायु में भगवान महावीर से दीक्षा अङ्गीकार की थी, वे अइमुत्ता मुनि एक बार स्थविरों के साथ जा रहे थे। मार्ग में खड्डे में जल भरा हुआ देखकर वे जल में पात्र तैराने लगे। स्थविरों ने आकर भगवान महावीर को कहा, 'यह बालक संयम को क्या समझे ?' तब भगवान ने उन्हें कहा, 'तुम इसकी आशातना मत करो, यह तुमसे पहले केवल ज्ञान प्राप्त करेगा।'

चेतन! पीछे रहने वाला ड्राइवर यदि Over-take करे, तो वह आगे जा सकता है। 'इरियावहिअं' प्रतिक्रमण करते समय 'दगमट्टी' का चिन्तन करते करते बालमुनि अइमुत्ता को केवलज्ञान प्राप्त हो गया और वे सिद्धाचल गिरिराज पर मोक्ष गये। धन्य है उन बाल-मुनि को !

बालदीक्षा के विरोधियों को यह दृष्टान्त पढ़कर विकृत मानस को सुधारने का विशेष परामर्श दिया जाता है। वे लोग भगवान के संयम पंथ के ही विरोधी बनकर सम्पूर्ण समाज को अपने विकृत मानस का शिकार बना रहे हैं और निर्दोष, भोली जनता को गुमराह कर रहे हैं। इसका भान उन्हें नहीं है। शासन की हित-चिन्ता के बहाने शासन का द्रोह करना कोई सामान्य एवं क्षम्य अपराध नहीं है। अरे, बाल-दीक्षा का विरोध अशिक्षित मनुष्य करें, तब तो कोई आश्चर्य नहीं है, परन्तु अभी-अभी तो इस भयानक छूत के रोग ने योग्य तथा सुधारक कहलाने वाले वक्ताओं एवं लेखकों को भी अपने विकराल शिकंजे में जकड़ लिया है। ऐसे विरोधियों ने कितने ही बाल अइमुत्ताओं की साधना में अन्तराय उत्पन्न किया होगा ? यह तो केवलज्ञानी ही कह सकते हैं। हमें तो मात्र उनकी भाव-दया ही सोचनी है। भगवान उन्हें सद्बुद्धि प्रदान करें।

इस स्थान पर अइमुत्ता मुनि को भावपूर्वक वन्दन करते हुए प्रतिज्ञा करें कि ''कदाचित् सूर्य पश्चिम में उदय हो, तो भी हम अपने मुँह से बाल-दीक्षा का विरोध कदापि नहीं करेंगे और न कानों से विरोध सुनेंगे !!

नारदजी

चेतन ! चौथी मूर्ति नारदजी की है। नारदजी यानि कौतुक-वृत्ति वाले पुरुष तथा कलह कराने में दक्ष ऐसी उनकी छाप थी। आज भी इधर की उधर और उधर की इधर बातों में भिडाने वाले व्यक्ति को 'नारद' का नाम दिया जाता है। परन्तु नारदजी उत्तम नैष्ठिक अखण्ड ब्रह्मचर्य के धारक थे। यह बहुत कम लोग जानते हैं। श्री कृष्णजी की द्वारिका का दाह एवं उसमें करोड़ो यादवों के भस्म हो जाने के भयानक दृश्य को देख कर वे विरक्त हो गये और दीक्षा ग्रहण करके एकाणवे लाख मुनियों के साथ इस गिरिराज पर आकर उन्होंने अनशन किया और वे मोक्ष सिधारे।

निन्नाणवे प्रकार की पूजा में कहा गया है कि -

''करे शिवसुन्दरी नुं आणुं रे, आदीश्वर अलबेलो छे।
नारद लाख एकाणुं रे, आदीश्वर अलबेलो छे ॥''

हीराबाई का कुण्ड

चेतन ! तनिक आगे बढ़ने पर, बायी ओर एक कुण्ड है, जो 'हीराकुण्ड' कहा जाता है। विमलवसही (दादा की टूँक) में जिनालय का निर्माण कराने वाली हीराबाई ने इस कुण्ड का निर्माण करवाया था।

राम, भरत, थावच्चापुत्र, शुक्राचार्य व शैलाकाचार्य की ५ मूर्तियाँ

चेतन ! कुछ सीढ़ियां चढ़ने पर दाहिनी ओर की एक देहरी में हमें काउस्सग ध्यान में खडी पाँच श्याम मूर्तियाँ खड़ी मुद्रा में दृष्टिगोचर होती हैं। उन्हें **'नमो सिद्धाणं'** कहें।

चेतन ! इन मूर्त्तियों को देखकर अनेक व्यक्ति जानकारी के अभाव में पांच की संख्या के अनुमान से पांच पांडवों की मूर्तियाँ कह देते हैं। इतना ही नहीं, श्री रजनी देवडी द्वारा किए गये महाअभिषेक महोत्सव में समाचार-पत्र वालों ने भी अपने दैनिक पत्रों मे इन्हें पाँच पाण्डवों की मूर्त्तियाँ होने का समाचार प्रकाशित कर दिया था, परन्तु यह बात सत्य नहीं है, क्योंकि मूर्त्तियों पर 'राम' आदि नाम अंकित हैं। पाँच पाण्डव, कुन्ती एवं द्रौपदी की मूर्त्तियाँ तो नौ टूँकों के भीतर 'छीपावसी टूँक' के समीप पांच पांडव के मंदिर में हैं।

राम - भरत

चेतन ! इनमें से प्रथम की दो मूर्तियाँ राम व भरत की हैं। दशरथ महाराजा के पुत्र रामचन्द्रजी तथा भरतजी ने इस शत्रुंजय का श्री मुनिसुव्रत

स्वामी के शासन में ग्यारहवाँ उद्धार कराया था। तत्पश्चात् राम एवं भरत संयम अंगीकार करके इस गिरिराज पर तीन करोड़ मुनियों के साथ अनशन करके मोक्ष गये हैं। निन्नाणवे अभिषेक की पूजा में कहा है कि -

दशरथ सुत रामचंद्रजी अग्यारमो उद्धार हो,
मुनिसुव्रत वारे कर्यो, जाणी निज निस्तार हो, श्री सिद्धाचल भेटिये।
राम भरत त्रण कोडीशुं, शिव सुन्दरी भरतार हो,
पाप पडल सवि धोईने, कीधो निज उद्धार हो, श्री सिद्धाचल भेटिये।

थावच्चापुत्र

चेतन! तीसरी थावच्चा पुत्रकी मूर्ति है। श्री नेमिनाथ भगवान की वैराग्यमय देशना सुनकर थावच्चा सेठानी का पुत्र ३२ पत्नियों तथा ३२ करोड़ स्वर्ण-मुद्राओं की सम्पत्ति का त्याग करने के लिए तत्पर हो गया। तब थावच्चा सेठानी श्री कृष्णजी के पास जाकर कहने लगी, "मेरा इकलौता पुत्र दीक्षा अंगीकार कर रहा है। आप प्रजा के पालक हैं। आप उसे समझा कर मुझे सान्त्वना प्रदान करें।"

इस पर कृष्णजी उसके पास गये और उसे कहा कि तुम दीक्षा अंगीकार क्यों कर रहे हो ? तब थावच्चापुत्र ने श्री कृष्णजी को कहा कि "मैं मृत्यु को जीतने के लिए दीक्षा अंगीकार कर रहा हूँ। यद्यपि मृत्यु तो निश्चित रूप से इस भव में होगी ही, परन्तु मृत्यु से पूर्व मैं ऐसी साधना करुँगा कि फिर कदापि मृत्यु नहीं होगी।" यह सुनकर श्री कृष्णजी अत्यन्त प्रसन्न हो गये और उन्होंने सम्पूर्ण राज्य में घोषणा करा दी कि जो व्यक्ति थावच्चा-पुत्र के साथ दीक्षा अंगीकार करेगा, उसके परिवार के पोषण का सम्पूर्ण उत्तरदायित्व कृष्णजी पर रहेगा। इस प्रकार की घोषणा कराने के पश्चात् एक हजार आत्माओं ने थावच्चा-पुत्र के साथ दीक्षा अंगीकार की। इस प्रसंग को लालच देकर श्री कृष्णजी ने दीक्षा प्रदान करा दी, ऐसा नहीं कहा जाता अथवा अनुचित किया है, ऐसा भी नहीं कहा जाता है। क्योंकि क्षायिक समकित दृष्टिवाले श्री कृष्णजी ने ये दीक्षाएं प्रदान कराई हैं और भगवान श्री नेमिनाथजी ने दीक्षा प्रदान की हैं। इसी प्रकार **प्रभावना आदि को लालच कहकर बदनाम नहीं किया जा सकता।** वह तो सन्मान, प्रोत्साहन सुविधा आदि है। थावच्चा - पुत्र एक हजार मुनियों के साथ इस गिरिराज पर अनशन

करके मोक्ष गये हैं। निन्नाणवे अभिषेक की पूजा में कहा है कि -

"थावच्चापुत्र संयमी, सहसमुनि संघात रे,
शैलेषीकरणे करी, कीधी कर्म नी घातरे, श्री सिद्धाचल सिद्ध थया।

शुकाचार्य

चेतन ! चौथी शुकाचार्य की मूर्ति है। एक बार चतुर्ज्ञानी आचार्य श्री थावच्चा - पुत्र के सम्पर्क में जल-शौच में धर्म मानने वाला गृहस्थ सुदर्शन आया। आचार्य श्री के उपदेश से जल शौच मूल धर्म का त्याग करके उसने दया व विनय-मूल जैन धर्म को स्वीकार किया।

यह सुनकर उसके भूतपूर्व गुरु शुक परिव्राजक अपने भक्त सुदर्शन को ठगा हुआ जान कर वहाँ आये। सुदर्शन उन्हें थावच्चा पुत्र के पास ले गया। थावच्चा - पुत्र ने अनेक युक्तियों एवं तर्कों से उसे समझाया कि जल का बार बार उपयोग करने से जीवों की हिंसा होती है और जल से यदि आत्म-शुद्धि होती हो, तो मछलियाँ पहले मोक्ष में जानी चाहिये, आदि तर्कों से वह परिव्राजक समकिती श्रद्धालू बना और अपने एक हजार शिष्यों के साथ थावच्चा - पुत्र के पास उसने संयम अंगीकार किया। शुक मुनि आचार्य पद प्राप्त करके एक हजार शिष्यों के साथ सिद्धगिरि पर आये और अनशन करके मोक्ष में गये हैं। अतः निन्नाणवे अभिषेक की पूजा में कहा है कि-

"शुक परिव्राजक तेहना, सहसमुनि संजोग रे,
उज्ज्वल गिरि मल क्षय करी, पाम्या निज गुण जोग रे,
श्री सिद्धाचल सिद्ध थया, मुनिवर गुण अभिराम रे।

शैलकाचार्य

चेतन ! पाँचवीं शैलकाचार्य की मूर्ति है। आचार्य श्री थावच्चापुत्र की देशना सुन कर मंडुक देश के राजा शैलकजी ने बारह व्रत आदि के पच्चक्खाण लिये। तत्पश्चात् वापस विहार करते करते शुकाचार्य वहाँ आये। उनकी वैराग्य-वाहिनी देशना श्रवण करके पंथकजी आदि अपने ५०० मंत्रियों के साथ राजा शैलकजी ने उनके पास दीक्षा अंगीकार की। शुकाचार्य के निर्वाण के पश्चात् शैलकाचार्य विहार करते हुए अपनी भूतपूर्व नगरी में आये। अशाता वेदनीय कर्म के उदय से काया रोगग्रस्त होने से क्षीण हो गई थी। उनके पुत्र मंडुक राजा ने वैद्य से चिकित्सा कराने का निवेदन किया।

चिकित्सा प्रारम्भ हो गई। वैद्य के निर्देशानुसार अनुपान व पथ्य के रूप में राजदरबार से निर्दोष मलाई, मिठाई आदि वस्तुएँ प्राप्त हो जाती थी। बाईस तीर्थंकरों के साधुओं को राजपिण्ड कल्पता है। अतः वे वहाँ से गोचरी ग्रहण करते थे। समय व्यतीत होते होते बाह्य रोग समाप्त हो गया, परन्तु रस की आसक्ति रूप भाव-रोग की वृद्धि हो गई। अतः वहीं स्थिरता करके इच्छानुसार मेवा - मिठाई का उपयोग करते रहे, पड़े - पड़े आराम करते रहे और अपना अधिकांश समय नींद करने में व्यतीत करने लगे। धीरे धीरे पंथकजी के अतिरिक्त अन्य समस्त शिष्य गुरु को शिथिलाचारी समझकर वहाँ से विहार कर गये। पंथकजी निष्ठा पूर्वक शिथिलाचारी गुरु की सेवा करने लगे। एक बार चौमासी प्रतिक्रमण करते समय क्षमापना करते हुए पंथकजी ने नींद में सोये हुए शैलकाचार्य के पाँव का स्पर्श किया, तो वे तुरन्त जग गये और क्रोधित हो... बोले, ''मेरी नींद में खलल क्यों डाली?''

तब पंथकजी ने विनय पूर्वक क्षमा याचना करते हुए कहा कि आज चातुर्मास की पूर्णाहुति के प्रसंग पर आपश्री से क्षमापना करने के लिए मैंने हाथ से आपके पाँव का स्पर्श किया था। तब विनीत शिष्य के ऐसे विनयपूर्वक वचन सुनकर शैलकाचार्य को भान हुआ कि 'अरे! मैं तो ऐसा शिथिल बन गया कि प्रतिक्रमण करना भी भूल गया।' अब उन्हें जागृति आई, प्रायश्चित लेकर उन्होंने आत्म-शुद्धि की। पाँच सौ शिष्य भी गुरुदेव शैलकाचार्य के पास लौट आये। शैलकाचार्य सिद्धगिरि पर जाकर ५०० शिष्यों के साथ अनशन करके मोक्ष गये। निन्नाणवे अभिषेक की पूजा में कहा है कि -

''पंचसया ऋषिराज शुं अनशन करी उदार रे
शैलग अणाहारी थया, सिद्धगिरि ने ठार रे ; श्री सिद्धाचल भेटिये।''

भूखणदास का कुण्ड

चेतन! तनिक आगे चलने पर बायीं ओर एक कुण्ड आता है। राणा बावडी तथा सात कमरों के समीप धर्मशाला का निर्माण कराने वाले सूरत के सेठ भूखणदास ने इस कुण्ड का निर्माण कराया है। मार्ग में आने वाले कुण्डों मे यह अन्तिम कुण्ड है। रामपोल के पश्चात् सूरज कुण्ड आदि अन्य कुण्ड भी हैं। वर्षा ऋतु में कुण्ड एवं टाँके जल से भर जाते हैं। कुण्डों का जल स्नान के लिए तथा निर्माण-कार्य आदि के उपयोग में लिया जाता है और टाँकों का जल पक्षाल करने के काम में लिया जाता है।

श्री आदीश्वर की चरण पादुकाएँ

चेतन ! थोडे सोपान चढते हैं, तब बायी ओर देहरी में आदीश्वर भगवान की चरण पादुकाएं हैं। वहां '**नमो जिणाणं**' बोल कर ऊपर चढें।

सुकोशल मुनि की चरण पादुकाएँ

चेतन ! तनिक और आगे बढ़ने पर बायीं ओर ही एक लघु देहरी दृष्टिगोचर होती है। इसमें सुकोशल मुनि की पादुकाएँ है। देहरी लघु है, परन्तु इसकी कथा अत्यन्त विस्तृत है। अच्छा, अब तू वह कथा सुन -

अयोध्या नगरी में रामचंद्रजी के पूर्वज सूर्यवंश का राजा कीर्त्तिधर राज्य करता था। उसकी रानी का नाम सहदेवी और पुत्र का नाम सुकोशल था। सुकोशल जब शिशु था और झूले में झूलता था, तब अमावस्या के दिन सूर्य ने गगन में विविध रंगो को फैलाये...सुहावने इन रंगों को देखने में राजा तल्लीन बना। लेकिन क्षणभर में सूर्यग्रहण हुआ, और ये रंग छिन्न-भिन्न हो गये। इस दृश्य को देख कर राजा को वैराग्य उत्पन्न हुआ। कि "अहो ! सूर्य जैसे महान को भी आपत्ति का शिकार बनना पडता है। इस काया तथा इन वैभवों के रंग भी इसी प्रकार क्षण भंगुर हैं !" ऐसा सोचकर विरक्त होकर उसने झूले में झूलने वाले बाल युवराज सुकोशल का राज्याभिषेक कर दिया और स्वयं ने दीक्षा अंगीकार कर ली। बहुत समय व्यतीत होने के पश्चात् वे विहार करके अयोध्या नगरी की ओर आये। एक दिन वे नगरीमें भिक्षार्थ जा रहे थे, तब राजमाता सहदेवी ने उन्हें देखकर विचार किया कि यदि मेरा पुत्र सुकोशल अपने पिता मुनि के सम्पर्क में आ गया, तो वह दीक्षा ग्रहण कर लेगा और लोग मुझे फिर राजमाता कह कर सम्बोधित नहीं करेंगे। ऐसे तुच्छ स्वार्थवश सहदेवी ने राज्यादेश निकाला कि अयोध्या में जो कोई साधु, सन्त, मुनि, तापस, फकीर अथवा योगी हो, उन्हें इस नगरी में से निष्कासित कर दिया जाये। राज्यादेश सुनकर सिपाही समस्त साधुओं आदि को ड़रा - धमका कर नगर के बाहर निकालने लगे। गुजराती में कहावत है कि 'सुका भेगुं लीलु बले (सूखे के साथ हरा भी जलता है) - उसी प्रकार अन्य निर्दोष सन्तों को भी बाहर निकाल दिया गया। यदि वह अकेले कीर्त्तिधर मुनि को बाहर निकलवाती, तो लोगों में उसकी अपकीर्त्ति होती।

इतने में सुकोशल की धाव माता ने देखा कि एक सिपाही डण्डा बताकर कीर्तिधर मुनि को नगर के बाहर निकाल रहा था। यह दृश्य देख कर उसके नेत्रों में आँसू छबाछब भर आये। वह सोचने लगी कि आज कीर्तिधर मुनि का स्वागत - सत्कार करने के बजाय डण्डे के बल पर तिरस्कार से राजमाता सहदेवी उन्हें बाहर निकलवा रही है। कैसा स्वार्थी संसार है ? धिक्कार है ऐसे स्वार्थमय संसार को ! धाव माता की आँखों में आँसू देख कर

सुकोशल ने उसे पूछा कि तुम्हारी आँखों मे आँसू क्यों हैं ? तब उसने सहदेवी की स्वार्थमय भावना का उल्लेख किया।

यह सुनकर सुकोशल को अत्यन्त खेद हुआ कि मेरे पिता मुनि का आगमन हुआ है और उनका ऐसा तिरस्कार ! मेरी माता ने उनकी ऐसी दशा की? सुकोशल ने तुरन्त नगर के बाहर जाकर कीर्तिधर मुनि से क्षमा याचना की। मुनिवर के द्वारा संसार का स्वार्थमय स्वरूप समझाया जाने पर सुकोशल ने घर आकर अपनी पत्नी के गर्भस्थ जीव का राज्याभिषेक करके माता सहदेवी की अनुमति के बिना ही दीक्षा ग्रहण कर ली। सहदेवी पुत्र वियोग में 'हाय पुत्र ! हाय पुत्र !' का आर्त्तध्यान करके तिर्यंच गति में बाघिन बनी।

एक बार वर्षावास पूर्ण करके कीर्तिधर एवं सुकोशल मुनि जंगल में होकर विहार करके नगर की ओर आ रहे थे, तब शत्रुंजय पहाड के जंगल में बाघिन ने गर्जना की। दोनों मुनि कायोत्सर्ग ध्यान में खड़े रहे। कहा जाता हैं कि 'जिसके प्रति राग अधिक हो, उसके प्रति द्वेष अधिक होता है।' इस उक्ति के अनुसार बाघिन ने सुकोशल मुनि पर पंजे से आक्रमण किया और उसकी चमड़ी उधेड़ सी दी और उसमें से वह रक्त पीने लगी, माँस खाने लगी, उसकी नाडियों को अपनी दाढ़ों से कैंची की तरह कतरने लगी। सुकोशल मुनि शुक्ल ध्यान में रमण कर रहे थे। बाघिन ने उन्हें नीचे पछाड़ा और उनका जबडा चीरने लगी। शुक्ल ध्यान से केवल ज्ञान प्राप्त करके वे मोक्ष में गये। मृत सुकोशल के जबडे में स्वर्णिम दाँत देखकर वह सोचने लगी कि ऐसा दाँत मैंने पहले कहीं देखा है। यह सोचते - सोचते उसे 'जातिस्मरण ज्ञान' हुआ, जिससे उसे अपने न करने योग्य कार्य के प्रति धिक्कार हुआ कि- 'अहो ! माता होकर भी मैंने पुत्र का रक्त पिया ? भले ही मेरी काया बदल गई है, परन्तु आत्मा तो वही है, और सुकोशल की आत्मा व शरीर दोनों एक ही हैं। यह सोच कर उसने अनशन किया और मरकर वह आठवे देवलोक में गई, वहाँ से एक भव पूर्ण करके वह मोक्ष में जायेगी।

चेतन ! सुकोशल इस धरती पर अत्यन्त सहनशीलता की प्रतिमूर्त्ति बन कर मोक्ष में गये हैं। इस गिरिवर के प्रभाव से पशु आदि तिर्यंच भी बाघिन की तरह एकावतारी बन कर मोक्ष प्राप्त करते हैं। इसीलिये स्तुति में कहा गया है कि-

''पशु - पंखी जे इण गिरि आवे, भव त्रीजे ते सिद्ध ज थावे, अजरामर पद पावे।''

चेतन ! तू भी अब सहन करने के लिए प्रेरणा प्राप्त करना। निन्नाणवे अभिषेक की पूजा में उल्लेख है कि -

''वाघण परिषह सही तदा अंतगड केवली थाय भवि जन
महिमा मोटो ए गिरि तणो।
सुकोशल विमलाचले प्रणमुं प्रेमे पाय भविजन
महिमा मोटो ए गिरि तणो।।''

चेतन ! सुकोशल मुनि के चरणपादुकाओं को **''नमो सिद्धाणं''** बोल कर हम आगे चलें।

नमि - विनमि की चरण पादुकाएँ

चेतन ! तनिक आगे चलने पर बायी ओर ही एक देहरी में नमि व विनमि की चरण पादुकाओं के दर्शन होते हैं। 'नमो सिद्धाणं' वे दोनों श्री ऋषभदेव भगवान के पुत्र कच्छ एवं महा कच्छ के क्रमश : पुत्र थे। भगवान ने उन्हें पुत्र तुल्य मान रखा था। भगवान की दीक्षा के समय वे कहीं बाहर

गये थे, अतः उन्हें राज्य का भाग प्राप्त नहीं हुआ। घर लौटने पर उन्हें महाराजा भरत राज्य का अमुक भाग देने लगे। तब उन्होंने कहा कि हम आपके पास से क्यों ले? हम तो भगवान के पास से ही लेंगे। अतः वे जंगल में जहाँ भगवान विचरण कर रहे थे, वहाँ गये। वहाँ वे प्रभु के मार्ग में से कचरा बुहारते, पानी छिड़कते, उनके समक्ष पुष्प रखते, तलवार से रक्षा करते और यदा कदा 'राज्यं देहि' राज्य दो, राज्य दो' इस प्रकार भगवान को कहते।

एक बार धरणेन्द्र प्रभु को वन्दन करने के लिए आया। वहाँ सेवा करते हुए नमि - विनमि को देखकर धरणेन्द्र देव ने कहा कि भगवान तो विरागी हैं, अकिंचन हैं। वे कुछ भी नहीं देते। तुम्हारी भक्ति से मैं प्रसन्न हुआ हूँ। चलो, मैं तुम्हें राज्य प्रदान करूँगा। यह कहकर दक्षिण श्रेणी के ५० नगर नमि को और उत्तर श्रेणी के ६० नगर विनमि को उसने प्रदान किये तथा सोलह हजार विद्याऐं प्रदान कीं। इसके बाद वह इन्द्र प्रभु को वंदन करके स्वस्थान पर गया।

चेतन! महापुरुषों की सेवा कदापि निष्फल नहीं जाती। कहा है कि-
''मोटा महंतनी चाकरी सहियर मोरी, निष्फल कदीय न जाय हो।
मुनि पणे नमि विनमि कर्या रे, सहियर मोरी, क्षण मां खेचर राय हो॥''

चेतन! तत्पश्चात् कुछ समय तक राज्य करके राज्य को तृणवत् समझकर उन दोनोंने दीक्षा अंगीकार करके दो करोड़ मुनियों के साथ फाल्गुन शुक्ला दशमी के दिन इस गिरिराज पर मोक्ष प्राप्त किया।

निन्नाणवे प्रकार की पूजा में कहा है कि -
''नमि विनमि विद्याधरा, दोय कोडी मुनिराय।
साथे सिद्धि वधु वर्या, शत्रुंजय सुपसाय॥''

चेतन! यहाँ तो नमि विनमि की चरण पादुकाएँ हैं, परन्तु ऊपर दादा के दरबार में रायण चरण पादुकाओं (रायण पगला) के दाहिनी ओर एक देहरी में बीच में श्री ऋषभदेव भगवान कायोत्सर्ग में खड़े हैं। दोनों ओर नमि विनमि हाथ में तलवार लेकर खड़े हैं। उनकी चमकती हुई तलवार में भगवान का प्रतिबिम्ब भी पड़ता है।

चेतन! तू ऊपर उधर जाये, तब ध्यान पूर्वक तलवार में भगवान के प्रतिबिम्ब के दर्शन करना। नमि की ६४ पुत्रियाँ भी गिरिराज पर मोक्ष गई हैं। निन्नाणवे अभिषेक की पूजा में कहा है कि-

"नमि पुत्री चौसठ जिके, पामी केवलनाण रे,
मधुवदी चौदशे शिववरी, सिद्धक्षेत्र वर ठाण रे,
श्री सिद्धाचल सिद्ध थया, मुनिवर गुण अभिराम रे।"

हनुमान धारा - छट्ठा विश्राम

चेतन ! वहाँ से कुछ सीढियां चढ़ने पर हमें बाँयी ओर एक बरगद का वृक्ष दृष्टिगोचर होता है, यह छट्ठा, विश्राम है, वृक्ष के नीचे गर्म पानी की प्याऊ भी है, परन्तु शक्य हो, तो हमें सिद्धगिरिराज पर पानी का उपयोग नहीं करना है।

श्री आदीश्वर की चरण पादुकाएँ

चेतन ! उसके समीपस्थ देहरी में भगवान श्री ऋषभदेव की चरण - पादुकाएँ हैं। 'नमो जिणाणं' दाहिनी ओर एक कमरे में हनुमानजी की मूर्त्ति है, अतः यह स्थान 'हनुमान हड़ा', हनुमान द्वार' एवं 'हनुमान धारा' के नाम से विख्यात है।

हनुमान धारा से दो रास्ते

चेतन ! यहाँ से दो मार्ग जाते हैं - एक मार्ग नौ टूँकों की ओर तथा दूसरा मार्ग दादा की टूँक की ओर जाता है। जब मोतीशा टूंक का निर्माण नहीं हुआ था। तब लोग हनुमान धारा से चौमुखजी की टूंक में से होकर अद्‌भुतजी के पास में से गुजरते हुए हाथी पोल में जाते थे।

चेतन ! तुझे दादा के दर्शन करने की शीघ्रता है, अतः नौ टूँकों का मार्ग छोड़कर अपन दादा की टूँक की ओर चलें। बस ! अब दादा ऋषभदेव बहुत दूर नहीं है।

जाली, मयाली एवं उवयाली

चेतन ! हम कुछ सीढियां चढ़ें, उसके बाद कुछ समतल मार्ग पर चलें, तब सामने रामपोल दीखती है, उसके तनिक पहले दाहिनी ओर पहाड़ में खुदी हुई सीढ़ियाँ हैं और ऊपर गुफा में काउस्सग ध्यान में खडी श्याम तीन मूर्त्तियाँ हैं। ये श्री कृष्णजी के पुत्र जाली, मयाली और उवयाली की हैं। इन तीनों महापुरुषों ने भगवान श्री नेमिनाथ के पास दीक्षा अंगीकार की थी और इस गिरिराज पर अनशन करके मोक्ष गये। अतः उन्हें **'नमो सिद्धाणं'** कहें। निन्नाणवे प्रकार की पूजा में कहा है कि -

''जाली मयाली ने उवयाली,
सिद्धया अनशन पाली रे, ए तीरथ तारु।''

यह उल्लेख आठवें अंग अंतगड़ सूत्र में चौथे वर्ग के तृतीय अध्ययन में भी किया हुआ है।

गेट वे ऑफ शत्रुंजय...!

रामपोल - सातवाँ विश्राम

प्रभुजी आवी रामपोल के, सामा मोतीवसहि रे लोल''

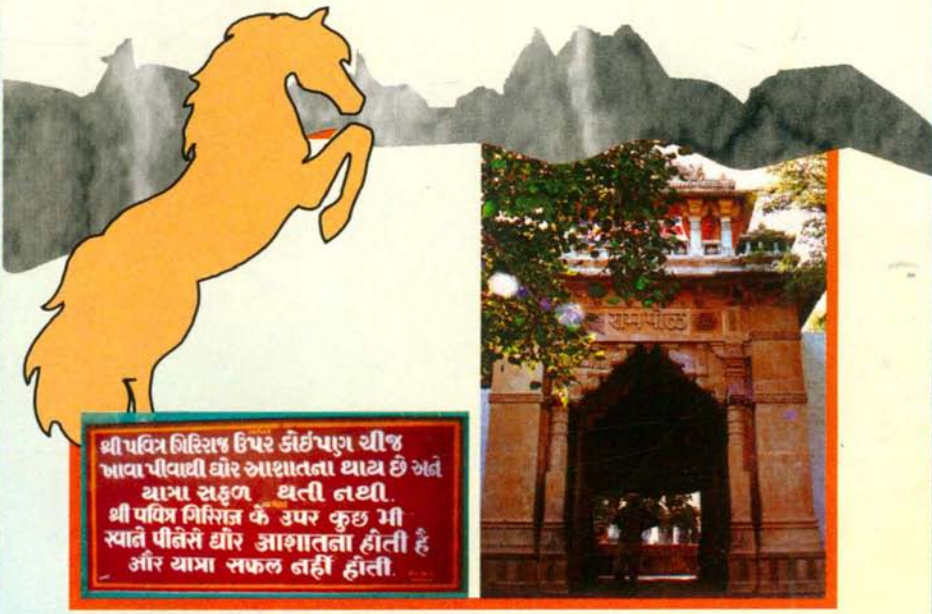

चेतन ! कुछ कदम आगे चलने पर रामपोल आती है। **''गेट वे ओफ इन्डिया''** जैसे बिदेशियों को बम्बई में प्रवेश करने के लिए मुख्य द्वार कहलाता है, उसी तरह शत्रुंजय की देवनगरी में हजारों-लाखों यात्रियों को प्रवेश करवाने वाले मुख्य द्वार ''गेट वे ऑफ शत्रुंजय'' के रूप में रामपोल का स्थान अग्रिम है। श्री शत्रुंजय कल्पवृत्ति की पूर्ति के अनुसार मोतीशा शेठ के लोगों में एक मुख्य ''रामजी'' नाम का व्यक्ति था। उसकी स्मृति में इस द्वार का नाम रामपोल रखा गया। उसके बाहर दाहिनी ओर एक प्याऊ है, जिसमें गर्म पानी (उबाला हुआ) उपलब्ध होता है। यहां पर सातवां विश्राम स्थान है। बायी ओर दही बेचने वाले बैठते हैं। इस महातीर्थ पर खाने से घोर आशातना होती है।

अतः चेतन ! तू इन दहीवालो से लेकर दही मत खाना। अज्ञानी

157799

मनुष्य तलहटी से श्रम सहन करके यहाँ तक आते हैं और दही खाकर 'पिकनिक' जैसा स्थान मना कर तीर्थ की घोर आशातना करते हैं।

चेतन! यहाँ आनन्दजी कल्याणजी पेढ़ी की ओर से दही नहीं खाने का बोर्ड भी लगाया हुआ है, फिर भी अज्ञानी मनुष्य अपनी इच्छानुसार कार्य करते हैं।

चेतन! उन मनुष्यों को तीर्थ की आशातना करने का कटु फल भोगना पड़ेगा। तीर्थ की आशातना करने से धन की हानि होती है, कई बड़ी बड़ी पार्टियां उड़ जाती हैं, व्यापार में लाभ नहीं होता, भविष्य में अन्न - पानी नहीं मिलता, भूखा-प्यासा रहना पड़ता है, देह रोगग्रस्त हो जाती है, परभव में नरक में जाना पड़ता है और वहाँ परमाधामी की कठोर यातनायें सहनी पड़ती हैं।

अतः चेतन! तू खाने के लिये दही का वहाँ स्पर्श तक मत करना। दूसरी बार जब मित्रों के साथ यात्रा पर आये, तब उन्हें भी कोई भी वस्तु श्री शत्रुंजय तीर्थ के पर्वत पर खाने का इन्कार करना।

चेतन! बायी ओर यह पाप की खिडकी है क्योंकि इधर लोग दहीं खाकर घोर पाप उपार्जन करते हैं, और सामने ही पुण्य की खिड़की 'रामपोल' है।

गुरुदेव! अब मैं कदापि यहाँ दही नहीं खाऊँगा। चेतन! यदि समस्त यात्री समझ कर इस प्रकार दही नहीं खाने का निर्णय कर लें, तो तीर्थ की आशातना अवश्य रुकेगी। अतः तू अवश्य प्रयत्न करना। चलो, आगे बढ़ें; अब हमारी मंजिल दूर नहीं है। दादा आदीश्वर भगवान का दरबार अब निकट आ रहा है। हमारे हर्ष का कोई पार नहीं है। चलो, हम पोल में प्रवेश करें।

रामपोल में प्रवेश

चेतन! यहाँ द्वार पर पहरेदार बैठता है। दाहिनी ओर घड़ी में समय देखा जा सकता है, परन्तु शीघ्रता नहीं करनी है।

चेतन! यहाँ से आगे बढ़ने पर जिनालयों की पंक्ति दृष्टिगोचर होगी। मैं तुझे थोड़ा परिचय कराता रहूँगा ताकि तेरा धैर्य एवं ध्यान स्थिर रह सके।

ACHARYA SRI KAILASSAGARSURI GYANMANDIR
SRI MAHAVIR JAIN ARADHANA KENDRA
Koba. Gandhinagar-382 009
Phone : (079) 23276252, 23276204-0

पाँच शिखर युक्त जिनालय

चेतन ! जब रामपोल से आगे बढ़ते हैं, तब वहाँ दाहिनी ओर पाँच शिखरयुक्त विशाल जिनालय है, जिसमें विमलनाथ भगवान प्रतिष्ठित है। सम्पूर्ण गिरिराज पर पाँच शिखर युक्त यही एक जिनालय है। इसका निर्माण औरंगाबाद निवासी सेठ श्री वल्लभभाई मोहनदास द्वारा कराया गया था।

चेतन ! इसके समीप तीन शिखर युक्त जिनालय है, जिसमें श्री सुमतिनाथ भगवान प्रतिष्ठित हैं। इस जिनालय का निर्माण सेठ देवचन्द कल्याणभाई सुरत वाले ने करवाया था। इन दोनों मंदिरों को **'नमो जिणाणं'** कहकर आगे बढ़े।

श्री मोतीशा सेठ की टूँक

प्रवेशद्वार

चेतन ! उसके समीप मोतीशा सेठ की टूँक है, जिसे मोती वसहि भी कहते हैं। टूंक में प्रवेश करने हेतु बडा दरवाजा है। हमें पहले आदीश्वर दादा को वन्दन करना है, अतः दूर से ही इस टूँक को **'नमो जिणाणं'** कह कर आगे बढ़ जायें।

कुन्तासर कुंड

चेतन ! यहाँ पहले कुन्तासर नामक भयानक खाई थी, जिसे सेठ मोतीशा के द्वारा भरवा दी गई और उस पर भव्य टूंक का निर्माण करा दिया गया। उसके बाहर कुंतासर कुंड है। उसकी दीवार के गोख में कुन्तासर देवी की मूर्त्ति स्थापित की हुई है।

बायी ओर डोली उठाने वाले विश्राम लेने के लिए बैठे हैं।

कुछ सीढ़ियाँ चढ़ने पर सामने एक मार्ग चलता है, जो घेटी की पाग की ओर जाता है।

सगाल पोल

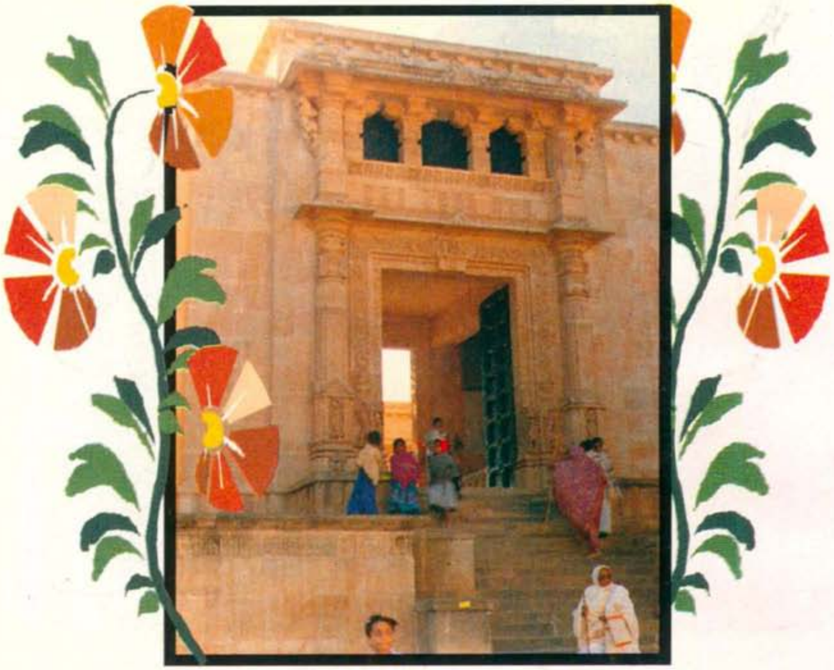

चेतन ! बायी ओर की थोडी सीढियाँ चढ़ने पर 'सगाल पोल' आती है। 'श्री शत्रुंजय पर्वत का वर्णन' पुस्तक के अनुसार बंगाली सर्राफ की दानवीरता की यादगार में इस पोल (दरवाजा) का नाम सगाल पोल रखा गया है। अब दादा की यात्रा का हमारा मनोरथ अवश्य पूर्ण होगा। यहाँ पहरेदार बैठा रहता है। अपनी लाठी, छडी, छाता, भूल से लाये हुए बूट-चप्पल, ट्रांजिस्टर आदि यहाँ 'सगाल पोल' में रखने पड़ते हैं। केवल साधु-साध्वी अपना डंडा 'बाघिन पोल ' तक ले जा सकते हैं।

नोंघणकुण्ड, कार्यालय, दोलाखाडी

चेतन ! सगाल पोल से आगे चलने पर चौक आता है, जिसे 'दोलाखाडी' कहा जाता है। इसके बायी ओर नोंघणकुण्ड और सगालकुण्ड

हैं और इनके समीप ही आनन्दजी कल्याणजी पेढ़ी का कार्यालय है, जहाँ कोई शिकायत आदि हो, तो लिखवाई जा सकती है। उसके समीप पूजारियों, पहरेदारों आदि के आवास के लिए कमरों की सुविधा है।

वाघण पोल (बाघिन पोल)

चेतन ! कुछ सीढ़ियाँ चढ़ने पर 'वाघण पोल' (बाघिन पोल) दृष्टिगोचर होती है। दाहिनी ओर दीवार पर बाहर बाघिन का पुतला है। शत्रुंजय की यात्रा को पूनः चालू कराने वाले वीर विक्रमशी पर शेरनी (बाघिन) ने आक्रमण किया था। उसकी यादगार में इसे 'वाघण पोल' कहा जाता है। वीर विक्रमशी की सम्पूर्ण कहानी आगे बतायेंगे। ''वाघण पोल'' का निर्माण मंत्री श्री वस्तुपाल तेजपाल ने सन् १२३२ में करवाया था। इसका

पुनर्निर्माण शेठ श्री कस्तुर भाई लाल भाई ने करवाया। भीतर दाहिनी ओर बाघिन पोल के दरवाजे के नव निर्माण के समय जमीन में से प्राप्त हुआ प्राचीन शिलालेख है, जिस पर मंत्री श्री वस्तुपाल तेजपाल के गुणगान अंकित है। उन्होंने यहाँ श्री नेमिनाथ एवं श्री स्थंभन पार्श्वनाथ के जिनालयों का निर्माण कराया था। शिलालेख का गुजराती अनुवाद भी पत्थर में उत्कीर्ण करके लगाया गया है।

शिलालेख

चेतन ! चौदहवी सदी में इस पोल का नाम **'व्याघ्री प्रतोली'** प्रचलित था। ऐसा आ. जिनप्रभसूरिजी की विविध तीर्थकल्प में उल्लिखित आख्यायिका से ज्ञात होता है। यहाँ पोल में साधु - साध्वी अपने डाण्डे आदि छोड़कर आगे जाते हैं। दाहिनी ओर घड़ी दृष्टिगोचर होती है।

चेतन ! समय अधिक हो गया है।

गुरुदेव ! कोई चिन्ता नहीं। नवीन नवीन बातों का ज्ञान प्राप्त होता रहता है और मेरा हृदय-सागर आनन्द की ऊर्मियों से हिलोरे लेने लगता है।

चेतन ! तेरी भावना देखकर अब अन्य तथ्य भी बताने की इच्छा हो जाती है।

विमलवसही - दादाजी की ट्रूँक

चेतन ! बाघिन पोल में प्रविष्ट होने के पश्चात् 'दादा के दरबार' तक का मार्ग विमलवसही ' अथवा 'दादाजी की टूँक' अथवा 'मरुदेवा शिखर' भी कहा जाता है। अब हम शीघ्र ही आदीश्वर दादाजी के दर्शन करेंगे। दाहिनी ओर सेठ केशवजी नायक की टूँक में जाने का मार्ग है।

श्री शान्तिनाथजी का जिनालय

'ज्यौं सोहे शांति दाता, सोलमा जिन त्रिभुवन त्राता '

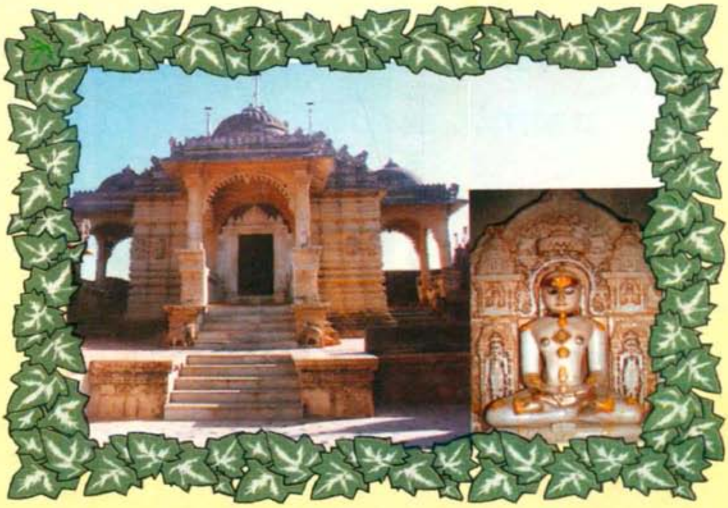

बोलो शांतिनाथ भगवान की जय।

चेतन ! बायी ओर सोलहवें श्री शान्तिनाथ भगवान का जिनालय है। उसमें प्रतिमाजी अत्यन्त अभिराम है। इसका निर्माण सं. १८६० में दमन निवासी सेठ हीराचन्द रायकरण ने कराया था। श्री शांतिनाथ भगवान ने यहाँ चातुर्मास किया था, व इस गिरिराज पर अनेक बार साधुओं सहित पधारे

थे, उसकी स्मृति में इस मंदिर का निर्माण किया गया है। यहाँ प्रत्येक यात्री को द्वितीय चैत्यवन्दन करना आवश्यक होता है। अतः हम भी यहाँ द्वितीय चैत्यवन्दन कर लें। चैत्यवंदन पेज नंबर १४६ पर देखकर करना।

श्री चक्केसरी देवी

('जहाँ चक्रेश्वरी है माता, वाघेश्वरी दे सुख-शाता')

चेतन ! अब श्री शांतिनाथ भग. के मंदिर के बाहर निकलकर सम्हलकर दायी ओर की सीढियों से नीचे उतरना है। जब हम नीचे उतरते हैं, तब एक देहरी में श्री आदीश्वर भगवान की अधिष्ठायिका एवं कर्माशा की कुलदेवी 'चक्केसरी' के दर्शन होते हैं। जब कर्माशा ने इस तीर्थ का पन्द्रहवाँ उद्धार कराया था, तब विक्रम संवत् १५८७ में इसकी स्थापना की थी। देवी की मूर्ति चमत्कारी व रमणीय है। स्तवन में कहा है कि

"प्रभुजी आवी वाघण पोल के, डाबा चक्केसरी रे लोल।
चक्केसरी जिनशासन रखवाल के, संघ नी सहाय करे रे लोल।"

चेतन ! चक्केसरी देवी ने इस तीर्थ के लिए अनेक प्रयत्न किये थे। चक्केसरी देवीने जावडशा को स्वप्न देकर तक्षशिला की मूर्त्ति प्राप्त

कराई थी, कर्माशा को भी तीर्थोद्धार में वह सहायक हुई थी। शासन की सेवा करने वाला कोई देव अथवा देवी हो, चेतन ! तुम्हें उसे प्रणाम कहकर नमस्कार करना चाहिए, और साधु उसे धर्मलाभ कहें। यहाँ 'नमो जिणाणं' अथवा 'नमो सिद्धाणं' नहीं बोला जाता।

चेतन ! उसके समीप की दूसरी देरी में वाघेसरी एवं पद्मावती देवी हैं।

जिनालयों की श्रेणियाँ

चेतन ! श्री चक्केसरी वगैरह देवियों के दर्शन करने के बाद हम वापस पीछे लौटकर सिढियाँ चढकर नीचे से ऊपर आकर 'दादा के दरबार' की ओर जाते हैं, तब दोनों ओर जिनालयों की श्रेणियाँ हैं। ज्यों ज्यों हम चलते जायें, त्यों त्यों कम से कम प्रत्येक मंदिर में मूलनायकजी को **'नमो जिणाणं'** कहते जाए।

बायी ओर की श्रेणी

(१) नेमिनाथ चौरी का जिनालय

चेतन ! विश्व में ज्यादा से ज्यादा एक समय में विचरते हुए भाव तीर्थंकर १७० होते हैं, उसका दृश्य इसमें बताया गया है। 'नमो जिणाणं'

चेतन ! इसे 'नेमिनाथ की चौरी' अथवा 'विमलवसही' अथवा 'भूल भुलैया का मन्दिर' कहा जाता है। इसमें मूलनायक श्री सुपार्श्वनाथ हैं। यहाँ आबू-देलवाड़ा के समान कलात्मक नक्काशी है। प्रतीत होता है कि इस जिनालय का निर्माण मंत्रीश्वर विमलशाह ने कराया होगा।

विमल शाह मंत्री भी कैसे धर्मनिष्ठ थे, वह इस छोटे दृष्टांत से ज्ञात होता है। विमलमंत्री के संतान नहीं थी। उसके लिए उसने अट्ठम किया, अंबिका देवी का ध्यान करने पर तप के प्रभाव से अंबिका देवी प्रकट हुई और वरदान मांगने के लिए देवी ने कहा। विमलमंत्री ने संतान प्राप्ति व आबु पर मंदिर का निर्माण करवाऊं ऐसे दो वरदान मांगे। देवी ने कहा कि मंत्री तेरे भाग्य में एक ही वरदान है, अतः एक वरदान मांगो। विमलमंत्री ने अपनी पत्नी को पूछा, बोल क्या चाहिए ? संतान या मंदिर। संस्कारी पत्नी ने संतान की जरुरत होने पर भी पति को मंदिर निर्माण मांगने के लिए कहा। मंत्री ने मंदिर निर्माण का वरदान ही मांगा। 'तथास्तु' कहकर देवी अंतर्ध्यान हो गई। धन्य है विमलमंत्री को ! जिसने पुत्र से ज्यादा धर्म को श्रेष्ठ गिना।

नेमि चौरी

नेमि चौरी के ऊपर का दृश्य

चेतन ! इसमें साक्षात् नेमिनाथ की चौरी, नेमिनाथ की जान (बारात) व पाँच कल्याणक खंभो की ऐसी रचना आदि के होने से मनुष्य अत्यन्त भूल-भुलैया में पड़ जाते हैं। इसी कारण इस जिनालय को 'भूल-भुलैया का जिनालय' भी कहा जाता है। गुम्बज में कमल पत्र, नागपाश, राजुल का विलाप एवं अष्ट महासिद्धि आदि के दृश्य हैं। कम जगह में विस्तृत व अटपटा आयोजन करने वाला इस मंदिर का रचयिता असाधारण बुद्धि कौशल वाला होगा।

२ पुण्य - पाप की खिड़की

प्रभुजी आवी नेमिनाथ नी चौरी के,
पुण्य - पाप नी बारी रे लोल .... !

चेतन ! नेमि चौरी के मंदिर से थोडा आगे जाने पर एक कमरा है, उसमें एक व्यक्ति ऊँट पर सवार और एक व्यक्ति नीचे खड़ा दृष्टिगोचर होता है। लोग इसे पुण्य पाप की खिड़की कहते हैं। जो इसके नीचे से निकल जाये, वह पुण्यशाली कहलाता है ।

पुन्य - पाप की परीक्षा करने को गुणवंत ।
मोक्ष बारी नामे तिहां पेसो- निकसो संत ।'

गुरुदेव ! क्या मैं इसके नीचे से निकलूँ ?

चेतन ! तेरी भावना हो, तो अवश्य निकल सकता है।

(चेतन पुण्य - पाप की खिड़की में से निकलकर कहता है।)

गुरुदेव ! मैं कैसा अच्छी तरह निकल गया ?

चेतन ! तू तो पुण्यशाली है ही, इसी कारण भाव-यात्रा करने की तेरी इच्छा हुई है, परन्तु जो मनुष्य खा-पीकर पड़े रहते हैं और अधिक मोटे हो गये हो, वे नहीं निकल सकते। अतः वे तप करके शरीर पतला करते हैं और दूसरी बार आते हैं, तब खिड़की के नीचे से निकल जाते हैं। इस निमित्त से वे तप तो करते हैं न ?

गुरुदेव ! हाथी अथवा अश्व का आकार न बना कर ऊँट का आकार किस लिए बनाया होगा ? ऊँट के तो अठारह अंग टेढ़े कहे जाते हैं।

चेतन ! सुन, इसके पीछे बलिदान की कथा है। आठ सौ वर्ष पूर्व पाटण शहर में मणियाती पाडा में प्रतापदास सेठ निवास करते थे। वे प्रति वर्ष कार्त्तिक शुक्ला त्रयोदशी, चतुर्दशी तथा पूर्णिमा का चौविहार अट्ठम करते थे और चौमासी प्रतिक्रमण करके ऊँट पर सवार होकर रबारी के साथ पूर्णिमा की दोपहर में शत्रुंजय पहुँच कर यात्रा करके पारणा करते थे। एक बार वर्षा बहुत कम होने से रास्ते में भयंकर गर्मी के कारण ऊँट चलते चलते थक गया। सेठ तथा रबारी भी थक गये, जोरदार प्यास लगी। वे शत्रुंजय की तलहटी में जैसे तैसे करके पहुँच गये और तीनों के प्राण पंखेरू उड़ गये। अतः श्री संघ ने उनकी यात्रा की स्थाई स्मृति स्वरूप ऊँट, सेठ तथा रबारी की मूर्त्ति बनवाई है। एवं पाटण के मणियाती पाड़ा में इनके पुराने घर की दीवार पर भी ऊंट व उस पर बैठे हुए सेठ का चित्र आज भी उनकी याद में बना हुआ है।

चेतन ! अब क्रमशः दर्शन करके 'नमो जिणाणं' कहना-

(३) वि. संवत् १६८८ में निर्मित विमलनाथ का मन्दिर।
(४) वि. संवत् १६८८ में निर्मित अजितनाथ जी का मन्दिर।
(५) वि. संवत् १८१५ में निर्मित सहस्रफणा पार्श्वनाथ का मन्दिर।
(६) नलिन मनोहर देहरी।
(७) धर्मनाथजी का मन्दिर।
(८) चन्द्रप्रभुजी का मन्दिर।

(९) पार्श्वनाथजी का मन्दिर।
(१०) सुमतिनाथजी (मुर्शिदाबाद के जगतसेठ) का मन्दिर।
(११) शान्तिनाथजी का मन्दिर।
(१२) सहस्रफणा पार्श्वनाथ का मन्दिर।
(१३) कुमारपाल का मन्दिर।

कुमारपाल महाराजा का मंदिर

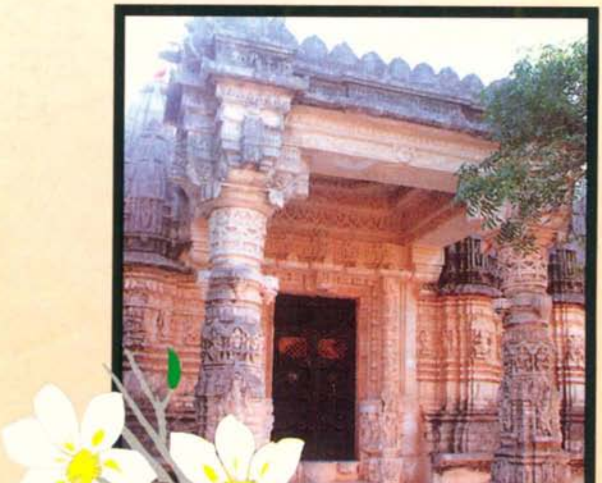

इस मंदिर के निर्माण का संक्षिप्त वर्णन कुमारकुंड के प्रसंग पर लिख दिया है। 'नमो जिणाणं'

सूरज कुण्ड

चेतन ! कुमारपाल के मन्दिर के समीप से हाथीपोल के बाहर अपने बायीं ओर छोटी गली जैसा एक मार्ग सूरज कुण्ड की ओर जाता है । श्री शत्रुंजय कल्पवृत्ति की पूर्ति के अनुसार 'सूर्य विमान के इन्द्र आदीश्वर प्रभु के दर्शन करने आये थे, तब इंद्र विमान से यहाँ उतरे थे । अतः इसका नाम सूर्य कुण्ड पडा ।' इस कुण्ड का ऐसा प्रभाव था कि इसमें तीर्थ के प्रति सम्मान सहित स्नान करने से राजा महीपाल का कुष्ठ रोग नष्ट हो गया था । एवं मंत्रित डोरे से मुर्गा बने चंद्र राजा इस कुण्ड में स्नान करते समय डोरा टूट जाने से पुनः मानव बन गये । निन्नाणवे प्रकार की पूजा में कहा गया हैं कि

''द्रव्य सेवन थी साजा-ताजा,
जेम कुकडो चंद्रराजा रे, ए तीरथ तारु ।''

चेतन ! उसके बाद चंद्रराजा श्री मुनिसुव्रत स्वामी भगवान के पास अपना पूर्वभव सुन करके वैराग्य वासित बनें । और भगवान के पास अपनी ७०० रानी, मंत्री व नट के साथ दीक्षा ली । एवं विचरण करते हुए चंद्रराजा इस सिद्धाचल पर अनशन करके मोक्ष में गये हैं ।

चेतन ! सूरज कुण्ड की दीवार पर पाषाण का एक मुर्गा व चंद्रराजा का पुतला बनाया हुआ है । उसके समीप में ही भीम कुण्ड, ब्रह्म कुण्ड और ईश्वर कुण्ड भी हैं । अब चारों कुण्डों में से स्नानागार में पानी आता है ।

दाहिनी ओर की जिनालय श्रेणी

(१) चेतन ! शान्तिनाथजी के सामने मार्ग की दाहिनी ओर केशवजी-नायक की टूँक है। तत् पश्चात् विशेषावश्यक भाष्य ग्रन्थ के अनुसार निर्मित समवसरण, समेत शिखर, मेरु शिखर एवं अष्टापद वाला पंचतीर्थी मन्दिर वि. संवत् १९२८ में पुण्डरीकजी का मन्दिर नरसी केशवजी द्वारा निर्मित हैं। इसमें ६८ देहरियाँ हैं। इसको दसवी टूँक भी कहते हैं। तो आओ, '**नमो जिणाणं**' कहकर हम आगे बढ़ें।

(२) पद्मप्रभुजी का मन्दिर।

(३) कवड यक्ष की देहरी।

कवडयक्ष

चेतन ! एक समय एक मिथ्यात्वी देव गिरिराज पर आने वाले यात्रियों का वध कर डालता था। गिरिराज पर उनकी हड्डियाँ, माँस आदि पड़े रहते थे। तीर्थमान नगर के अधिपति बुनकर सुकर्मा का पुत्र कपर्दी मदिरा पान करता था। पूज्य वज्रस्वामीजी ने उस शराबी को प्रतिबोध देकर शत्रुंजय महातीर्थ का महत्व समझाया और पंच परमेष्ठी पद का बोध कराया। आचार्य भगवन्त की प्रेरणा से उसने मदिरा-पान नहीं करने का पच्चक्खाण लिया, फिर भी पच्चक्खाण की परवाह किये बिना एक दिन वह अपनी पत्नी के साथ कादम्बरी नामक मदिरा का पान करने के लिये तत्पर हो रहा था। इतने में आकाश में एक चील पक्षी साँप को लेकर उड़ रहा था, उस समय साँप के मुँह में से विष मदिरा में गिर गया। इस बात का कपर्दी को पता नहीं रहा, जिससे उसने वह मदिरा पी ली और उसका विष चढ़ने लगा। तब उसे सिद्धगिरि के उपदेश का स्मरण होने से उसने सिद्धगिरि का ध्यान व पंच परमेष्ठी नमस्कार का स्मरण किया तथा अपने व्यसन की निन्दा की, जिससे मरकर वह कपर्दी नामक यक्ष जाति का देव बना। दूसरे ग्रन्थों के अनुसार बुनकर को गुरुदेव श्री ने गंठसी पच्चक्खाण का महत्व समझाया कि इस पच्चक्खाण से महीने में करीब २७ उपवास का लाभ मिलता है। उसने मद्यपान के साथ गंठसी पच्चक्खाण की प्रतिज्ञा ली। एक दिन गांठ ऐसी मजबूत बंध गई कि वह खुली ही नहीं। दृढ प्रतिज्ञा वाला वह शुभ भाव में मृत्यु पाकर व्यंतर देव के रूप में कवड यक्ष बना। शत्रुंजय तीर्थाधिपति श्री आदिनाथ भग. की प्रतिष्ठा विवर्ण होने से जावडशा ने तीर्थोद्धार कराने का संकल्प किया। तीर्थोद्धार चालू हुआ, प्रतिष्ठा हेतु जब वज्रस्वामी संघ लेकर जावड शाह के साथ सिद्धगिरि आये, तब मिथ्यात्वी देव उपद्रव करने लगा। नये कपर्दी देव ने आकर आचार्य भगवन्त के उपकार के ऋण को उतारने के लिये कार्य करने का निवेदन किया। तब आचार्य श्री ने यात्रियों को विघ्न न हो, भगवान की प्रतिमाजी तथा संघ गिरिराज पर चढ़ सके, उसके लिये मिथ्यात्वी देव को पराजित करने का कहा। इस पर नवीन कपर्दी यक्ष ने कहा कि पुराना कपर्दी देव मेरी अपेक्षा अधिक शक्तिशाली है। तो मैं उसको कैसे जीत सकता हूँ ? तब पूर्वधर आचार्य देवश्री वज्रस्वामी ने कहा कि मैं तेरा शरीर मंत्राधिष्ठित करता हूं, रात्रि में सेठ - सेठाणी रथ के पहिए के नीचे सोये रहें और चतुर्विध संघ कायोत्सर्ग में रहे, तो उस कायोत्सर्ग के प्रभाव से तुम उसे परास्त कर सकोगे। इसके बाद रात्रि में संघपति जावडशा और उनकी धर्मपत्नी सुशीला देवी रथ के पहीए के नीचे सो गए, श्री चतुर्विध संघ ने कायोत्सर्ग किया। नवीन कपर्दी देव ने पुराने कपर्दी देव के साथ युद्ध कर उसको पराजित किया। तीर्थयात्रा आगे बढ़ाई और तब से पुनः यात्रा शुरु

हुई। जिससे संघ में जयजयकार हुआ व तेरहवाँ तीर्थोद्धार करके प्रतिमाजी की प्रतिष्ठा की गई। परंतु जब पुराना मिथ्यादृष्टि कपर्दी यक्ष पराजित होकर भागा, तब उसने जबरदस्त आर्तनाद किया, जिससे पहाड का शिखर फटकर उत्तर व दक्षिण ऐसे दो विभाग में विभाजित हो गया। उस सम्यग् दृष्टि कवड यक्ष की स्मृति के निमित्त यहाँ उसकी मूर्त्ति स्थापित की गई है। चेतन! उन्हें प्रणाम कहना।

(४) समवसरण युक्त महावीर स्वामी का मन्दिर।

(५) अमीझरा पार्श्वनाथ श्याम प्रतिमा का भव्य मन्दिर।

वि.सं. १७९१ में महामात्य भंडारी रत्नसिंहजी ने निर्माण करवाया था।

(६) चन्द्रप्रभुजी का मन्दिर।

(७) संभवनाथ भगवान का मन्दिर।

(८) श्री पार्श्वनाथ भगवान का मन्दिर।

(९) श्री चन्द्रप्रभप्रभुजी का मन्दिर।

(१०) श्री संभवनाथ भगवान का मन्दिर।

(११) श्री अजितनाथ भगवान का मन्दिर।

(१२) श्री पार्श्वनाथ प्रभु का मन्दिर।

(१३) श्री ऋषभदेव भगवान का मन्दिर।
(१४) श्री धर्मनाथ भगवान का मन्दिर।
(१५) श्री महावीर स्वामीजी का मन्दिर।
(१६) एक सौ स्तंभ युक्त चौमुखजी का मन्दिर। जिसका जोधपुर वाले मनोतमल्ल जयमल्लजी ने वि.स. १६८६ में निर्माण करवाया था।
(१७) प.पू. आ. श्री धनेश्वर सूरीश्वरजी म.सा.-

आचार्य धनेश्वर सूरीश्वरजी म.सा.

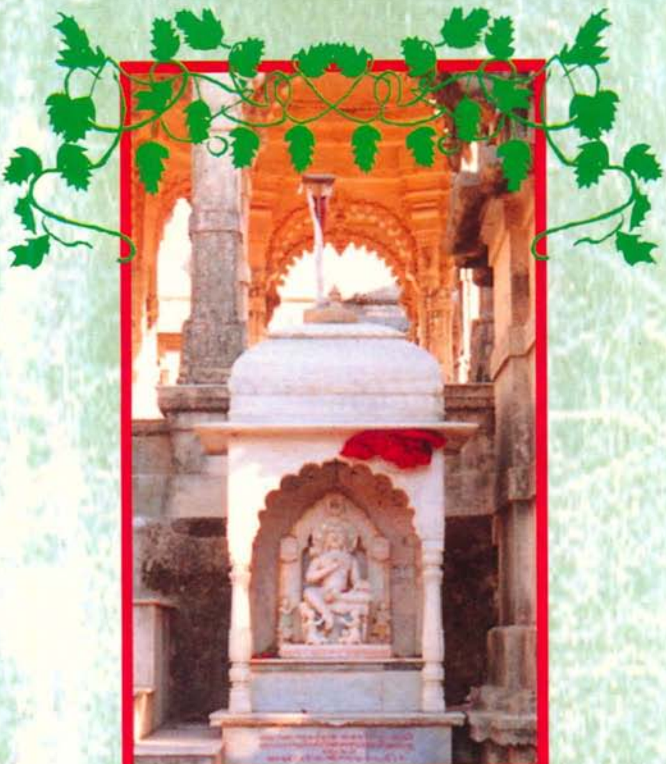

चेतन! श्री शत्रुंजय माहात्म्य के अनुसार गणधर सुधर्मास्वामी ने २४-(१४?) हजार श्लोक प्रमाण शत्रुंजय माहात्म्य की रचना की थी। तत्पश्चात् संवत् ३६० में अष्टांग योग तथा सर्वविद्याओं मे निपुण तथा बौद्धों को निर्मद करने

वाले प.पू. आ. श्री धनेश्वर सूरीश्वरजी म.सा. ने ९ हजार श्लोक प्रमाण शत्रुंजय माहात्म्य की रचना की। श्री शत्रुंजय माहात्म्य ग्रन्थ के कर्त्ता आचार्य देव श्री धनेश्वर सूरीश्वरजी म. सा. की मूर्त्ति यहाँ स्थापित की गई है। उनके पैर के पास में दोनों ओर उनके दो शिष्यों की मूर्त्ति हैं।

चेतन ! हम उन सबको '**मत्थएण वंदामि**' कह कर वन्दन करें। गुरुदेव श्री समाधि में लीन हो गये हों, तब शिष्य पाँव की नस दबाये, तब वे चेतना में आ जाते, ऐसा दृश्य शिल्प के द्वारा यहां बताया गया है।

(१८) श्री श्रेयांसनाथ का मन्दिर।

(१९) श्री संभवनाथ प्रभु का मन्दिर।

कपडवंज का जिनालय

(२०) श्री ऋषभदेव का मन्दिर - कपडवंज वाली माणेक सेठानी द्वारा निर्मित किया गया है। 'नमो जिणाणं'

वीर विक्रमशी का बलिदान

चेतन ! दाहिनी ओर कुमारपाल मन्दिर के सामने वृक्ष के नीचे एक पोलरक्षक (पोलिया) है, वह कौन है ? क्या तुझे उसके सम्बन्ध में कुछ ज्ञात है?

नहीं, गुरुदेव !

तो सुन; पालीताना में एक भावसार परिवार था, जिसमें दो भाई थे। ज्येष्ठ भ्राता विवाहित था और लघु भ्राता विक्रमशी अविवाहित था। एक दिन लघु भ्राता कपड़े आदि धोकर जब घर आया, तब भोजन नहीं बन पाया था। तब वह अपनी भाभी पर क्रोधित हुआ कि क्या किया इतनी देर तक? क्या तुमसे भोजन भी नहीं पकाया जाता ? आदि बातें कहीं। इस पर भाभी ने व्यंग कसा कि 'मुझ पर क्यों जोर लगा कर बक बक करते हो? यदि शक्ति हो, तो शत्रुंजय पर सिंह (बाघिन) के कारण यात्रा बंद हो गई है उसे प्रारम्भ करा दो।'

उक्त व्यंग्य उसके अंग - अंग में चुभ गया और विक्रमशी को जोश आ गया। वह तलहटी में लोगों को कह कर गया कि 'मैं जा रहा हूँ गिरिराज पर। यदि ऊपर जाकर मैं घंटा बजाऊँ, तो आप लोग समझना कि सिंह मारा गया है और यात्रा प्रारम्भ हो गई है।'

विक्रमशी सौटा (डंडा) लेकर ऊपर चढ़ा। सिंह सोया हुआ था। सोये हुए पर आक्रमण करना कायर का कार्य कहलाता है। उसने सिंह को

ललकारा और उसके सिर पर ऐसा प्रहार किया कि सिंह चक्कर खाकर गिर पडा और अचेत हो गया। विक्रमशी जब घंटा बजाने के लिए आगे बढ़ा कि सिंह चेतना में आ गया। उसने विक्रमशी पर पीछे से ऐसी छलांग लगाई कि वह युवक घायल हो गया, फिर भी उसने सौटे से ऐसा खतरनाक प्रहार किया कि घायल सिंह लडखड़ा कर धराशायी हो गया और उस के प्राण पंखेरु उड़ गये। लडखड़ाते पाँवों से जैसे तैसे खड़े होकर युवक विक्रमशी ने अपनी समस्त शक्ति एकत्रित करके आगे बढकर मंदिर में घंटा बजा दिया। उसके बाद तुरंत उसके प्राण पंखेरु उड़ गये। पूर्व संकेतानुसार मार्ग निर्विघ्न जान कर लोग गिरिराज पर आये। वहां आकर देखा तो क्रमशः सिंह तथा युवक के शव पड़े हुए थे। वीर विक्रमशी का शव मंदिर में देखकर संघ फुट फुटकर रोने लगा। उसके बाद उसकी स्मृति के निमित्त से पोलिया स्थापित किया गया है। सचमुच, यात्रा प्रारम्भ करने वाले वीर विक्रमशी का बलिदान अमर रहेगा।

चेतन ! देखले, सिद्धगिरि की यात्रा प्रारम्भ करने वाले वीर विक्रमशी को - पोलरक्षक को !

गुरुदेव ! सिद्धगिरि की यात्राएँ तो अनेक की हैं, परन्तु, ऐसे बलिदान की कथा तो आज ही सुनी है।

हाथीपोल

'प्रभुजी आवी हाथीपोल के, सामा जगधणी रे लोल'

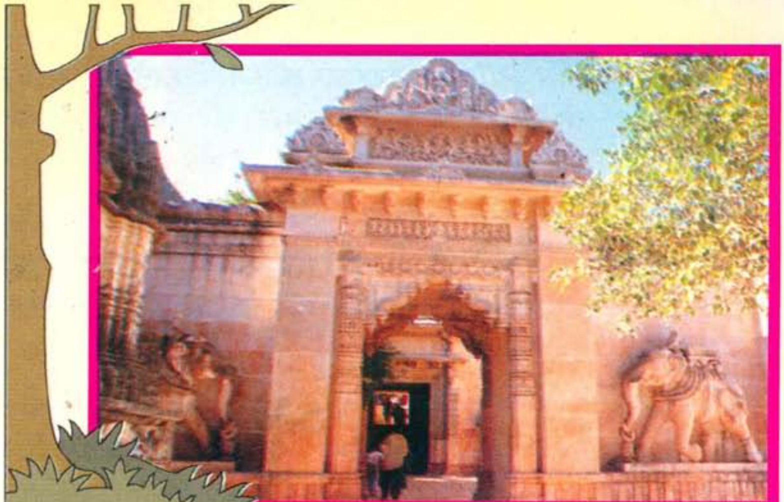

चेतन ! वहाँ से थोडा आगे चलने पर सामने एक पोल आती है। पोल के दोनों ओर कलात्मक हाथी उत्कीर्ण हैं। इसलिये वह प्रवेश द्वार हाथीपोल कहा जाता है। हाथीपोल में प्रविष्ट होते समय बायीं ओर शिलालेख लगा हुआ है।

चेतन ! हाथीपोल में प्रवेश करते हैं, तब दाहिनी ओर पुष्प बेचने वाले बैठते हैं। बायीं ओर स्नानागार हैं। पोल के दोनों ओर के कमरे में स्त्री-पुरुष दोनो के लिए अलग-अलग पूजा के 'पास' भी यहाँ वितरित किये जाते हैं। हमें तो भाव-यात्रा करनी है, अतः तुझे 'पुष्प' एवं 'पास' लेने की आवश्यकता नहीं है। चेतन! हाथीपोल के द्वार में से आगे बढकर ऊपर रतनपोल में आते हैं, तब हम दादा के दरबार में फैली हुई भाव सुवास, पवित्रता व पूज्यता के दर्शन से अद्भुत आनंद की अनुभूति कर सकते हैं। उसमें पुष्पों से भरी हुई छाब में से फैलती हुई द्रव्य सुवास, अपना महत्वपूर्ण एक हिस्सा दे जाती है।अब तो शीघ्र ही दादा आदीश्वर सामने ही दृष्टिगोचर होंगे।

चेतन ! चल, अब शीघ्रता कर।

रतनपोल

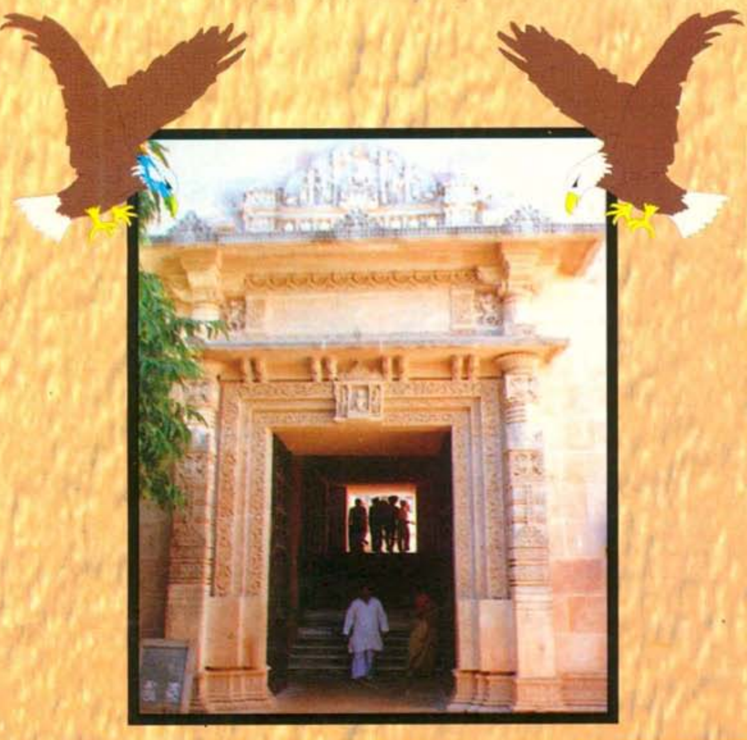

चेतन ! यह सामने पोल दृष्टिगोचर होती है, इसमें चिंतामणि रत्न से भी अनंतगुणा महान अचिंत्य चिंतामणि रत्न तीर्थंकर भगवान बिराजमान है, इसलिये यह रतनपोल कहलाती है। इसमें प्रवेश करते हैं, तब दाहिनी ओर तेजपाल सोनी द्वारा वि. संवत् १६५० में कराये गये जीर्णोद्धार का शिलालेख है। बायीं ओर वि. संवत् १५५७ में कर्माशाह द्वारा कराये गये तीर्थोद्धार का शिलालेख है तथा अकबर शहंशाह द्वारा वि. संवत् १६५० में की गई यात्रा-कर मुक्ति का शिलालेख है।

चेतन ! कुछ सीढ़ियाँ चढ़ने पर सामने दादा का दरबार दृष्टिगोचर होता है। यहां पर प्रत्येक यात्री का हृदय भक्तिभाव से नाचने लगता हैं, भव्य गगनचुंबी ऊंचे मनोहर शिखर वाला दादा का मंदिर दिख रहा है। दूर से ही दादा को प्रणिपात हो रहा है...।

आदीश्वर दादा का दरबार

दादा आदीश्वर नो दरबार छे, जीवन नो खरो आधार छे,
शत्रुंजय नो शणगार छे, लाख-लाख नमस्कार छे....।

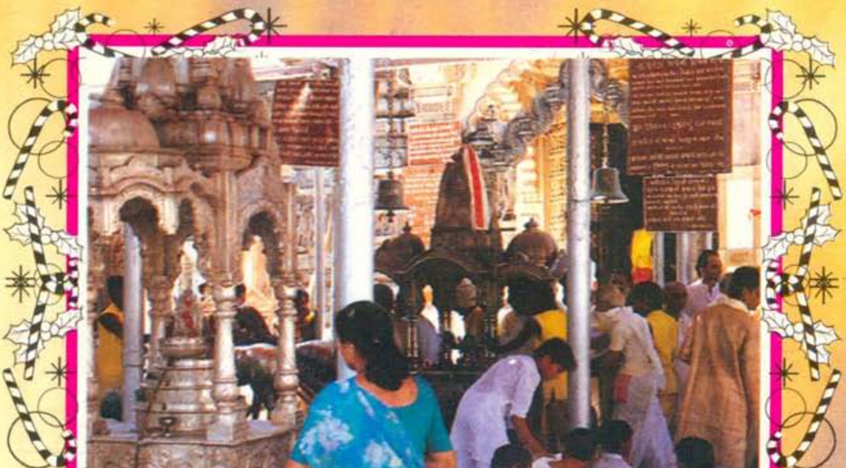

चेतन ! दादा का विशाल भव्य मंदिर सन्मुख दादा का दरबार दिख रहा है। यात्रियों की पंक्ति हाथ में पूजा की थाली लेकर खडी हुई दिखाई दे रही है। घंटारव सुनाई दे रहे हैं, पुष्प व धूप की सौरभ फैल रही है, चारों तरफ भक्त कटोरी में चंदन लेकर पूजा के भाव में व्यस्त हैं, वातावरण प्रसन्नतामय है, स्तवन के मधुर स्वर दादा के मंदिर में गूंज रहे हैं, किसी देवभूमि में आये हों, ऐसा परम भाव हो रहा है। सामने दादा के मंदिर का कलामय द्वार है...। दादा के दरबार के बाहर चौक में चांदी का सिंहासन स्थित है, वह देवकरण मूलजी ने अर्पित किया था। यहाँ पर स्नात्र पूजा, निन्नाणवे प्रकारी पूजा आदि पढ़ाई जाती है। लोग नाच-गान-आदि से प्रभु भक्ति में मस्त बन जाते हैं। हर्ष विभोर होकर गाने लग जाते हैं।

पक्षियों को आनंद है चमन में, सितारे हँसते है दमकते गगन में।
आज देखो भक्तों की भीड़ जमी है, गाते है बजाते है प्रभु के भजन में॥

चेतन ! यहाँ छ'री पालक संघ आदि के संघपतिओं कोतीर्थमाला परिधान आदि मांगलिक कार्य सम्पन्न होते हैं।

चेतन ! देख ले दादा के दरबार में कितने ही लोग स्नात्र पढाते हैं। कितने ही लोग भजन गा रहे हैं, तो कितने लोग भिन्न भिन्न साज बजा रहे हैं।

गुरुदेव ! श्री आदीश्वर भगवान को 'दादा' क्यों कहते हैं ?

चेतन ! इस अवसर्पिणी काल में इस तीर्थ की आराधना सर्वप्रथम आदीश्वर भगवान ने बताई थी। एवं २४ तीर्थंकरों में सबसे प्रथम तीर्थंकर आदीश्वर हुए। इसलिये दादा शब्द से आदीश्वर भगवान सम्बोधित किये जाते हैं। बाद में यह दादा शब्द तीर्थंकर में रूढ हो गया। इसलिये दूसरे तीर्थंकर सुमतिनाथ, शंखेश्वर पार्श्वनाथ वगैरह भी दादा शब्द से संबोधित किये जाते हैं।

दादा के मन्दिर का विशाल शिखर

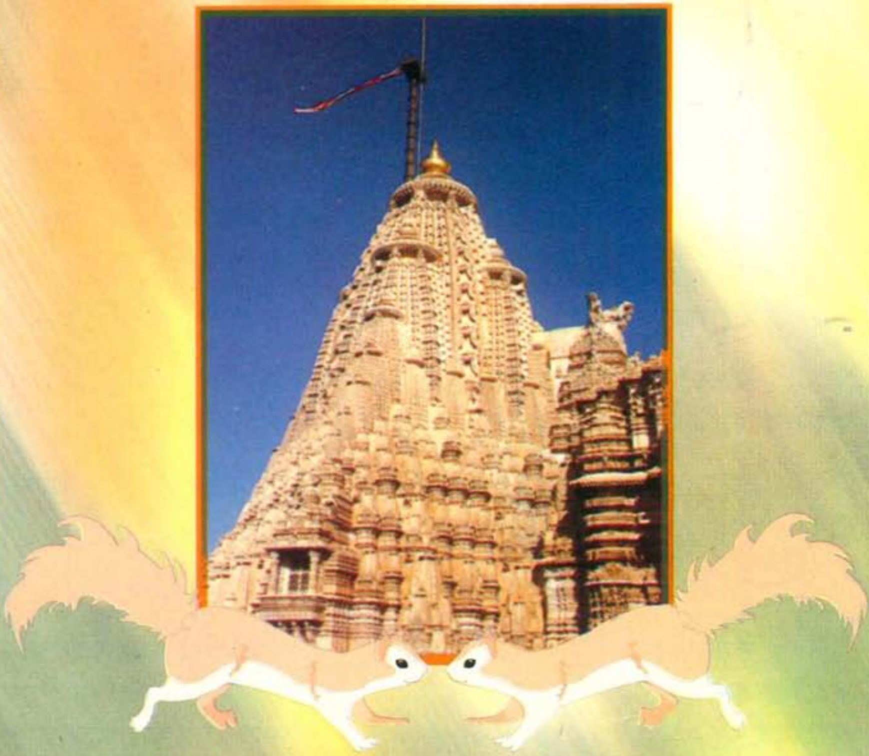

चेतन ! देख ले कितना विशाल और ऊंचा शिखर दादा के जिनालय का है । कभी-कभी तो यहाँ पर मयूर केकारव करते हैं ।

अरे ! भूतल से ७८ फुट ऊंचा शिखर है । इसका कणपीठ कितना गहरा है, इसे जानने के लिए मंन्दिर के फर्श का एकभाग खुला रखा गया है, उसके ऊपर लोहे की एक चद्दर ढकी हुई है ।

यदि हम दादा के जिनालय के शिखर पर चढ जायें, तो हमें एक गजब का दृश्य दिखाई देता है । जिनालयों की पंक्ति इस प्रकार शोभित हो उठती है कि मानों कि हिमालय के भ्रम से आकाश गंगा यहाँ पर उतर न गई

हो ! इसीलिए कवियों ने गाया है कि -

''मानु हिमगिरि विभ्रमे, आई अम्बर गंगा।

शिखर पर लहराती हुई ध्वजायें तो मानो एक संदेश दे रही है कि अरे! भाग्यशालियों आप दूसरे स्थान पर क्यों घुम रहे हो ! यदि आप सच्ची विजय प्राप्त करना चाहते हो, तो आप युगादि देव आदीश्वर प्रभु की शरण में आ जाओ। आपकी विजय निश्चित है।

गुरुदेव ! शीघ्र चलिये, अब तुरन्त दादा के दर्शन कर लें।

चेतन ! शीघ्रता मत कर। दादा के दर्शन ऐसे ही नहीं किये जाते। क्योंकि जिस प्रकार भौंरा रस लेने के लिए पुष्प पर तुरन्त नहीं बैठता है, परंतु उस पर पहले गुंजन करता है। फिर पुष्प पर बैठता है। उसी प्रकार से हमें भी प्रभु दर्शन रूपी रस लेने के लिए तीन प्रदक्षिणा देकर फिर दादा के समक्ष जाना चाहिये। कतिपय लोग विधि से अपरिचित अथवा शीघ्रता करने वाले मनुष्य सीधे रतनपोल में प्रविष्ट होकर दादा के समक्ष पहुँच जाते हैं। *'चैत्यवन्दन भाष्य'* में तीन प्रदक्षिणा देने की विधि बताई गई है। कहा है कि *''तिन्नि निसीही तिन्नि, पयाहिणा तिन्नि चेव पणामा''।*

यहां की प्रदक्षिणा में मानो अनेक तीर्थो की यात्रा का आनंद देने की अखूट शक्ति भरी हुई है। इसकी अनुभूति तो जो प्रदक्षिणा दे, वही कर सकता है। इन तीन प्रदक्षिणाओं के प्रवास में श्री सम्मेतशिखरजी, अष्टापदजी, गिरनारजी, महाविदेह क्षेत्र, १०२४ जिन प्रतिमा, १४५२ गणधर पादुकाएँ, नये आदीश्वरजी, रायणवृक्ष, नयी टुंक आदि मंदिरों के दर्शन से अनेक तीर्थों की यात्रा जैसा अनुभव होता है।

प्रथम प्रदक्षिणा

चेतन ! चलो अपन दादा के मंदिर के दाहिनी ओर से प्रदक्षिणा चालू करें। प्रथम प्रदक्षिणा में हमें प्रथम दाहिनी ओर सहस्रकूट मन्दिर में दर्शन करने हैं।

सहस्त्रकूट (१०२४ भगवान)

गुरुदेव ! इतनी सारी भगवान की मूर्त्तियाँ यहाँ क्यों बनाई गई हैं?

चेतन ! भूत, भविष्य और वर्तमान-इन तीन कालों मे तीन चौबीसी होती हैं। इस तरह २४ x ३=७२ भगवान हुए। ये तीनों चौबीसी ५ भरत एवं ५ ऐरवत में हुई हैं। अतः ७२ x १०=७२० भगवान हुए। वर्तमान चौबीसी के प्रत्येक भगवान के पाँच कल्याणक होते हैं। अतः २४x५=१२० भगवान हुए। इस प्रकार ७२०+१२०=८४० भगवान हुए। महाविदेह की ३२ विजय में

उत्कृष्ट से ३२ भगवान होते हैं और इस प्रकार के महाविदेह पाँच हैं। अतः ३२x५=१६० भगवान हुए। इस प्रकार ८४०+१६०=१००० भगवान, उनमें सीमंधर आदि २० विहरमान तीर्थंकर और ४ शाश्वत तीर्थंकर जोड़ने से १०००+२०+४=१०२४ भगवान यहाँ प्रतिष्ठित किये गये हैं। इस कारण से यह 'सहस्त्रकूट' कहा जाता है।

इसकी संकलना आचार्य भगवन्त श्री हीरसूरीश्वरजी म. सा. की परम्परा के आचार्य श्री विजयसिंहसूरिजी महाराज ने की है, इस सहस्रकूट मंदिर का निर्माण आगरा निवासी गुमानसिंह आदि भाईयों ने अपने पिता वर्धमान के वचन से व उनके पूण्यार्थ करवाया। तथा इसकी प्रतिष्ठा उपाध्याय श्री विनयविजयजी महाराज ने वि. संवत् १७१८ जेठ शुक्ला ६ को सम्पन्न कराई है।

गुरुदेव ! इस सहस्रकूट का रहस्य तो मुझे आज ही ज्ञात हुआ। अब तक तो मैं यही मानता था कि इतने छोटे-छोटे भगवान यहाँ क्यों एकत्रित किये होंगे ? गुरुदेव ! मुझ पर आपकी कृपा हुई, जिससे मुझे इतनी बातें जानने को मिली। 'नमो जिणाणं...'

१४५२ गणधरों की पादुकाएँ

चेतन ! तत्पश्चात् हम दादा के मंदिर के पीछे की देहरियाँ तथा रायण पादुकाओं के दर्शन करें । इसके बाद आगे चलने पर बायी ओर १४५२ गणधरों की पादुकाएँ हैं। चौबीश तीर्थंकरों के ऋषभसेन आदि कुल १४५२ गणधर हुए। अतः इतनी पादुकाएँ हैं। एवं विशेषता यह है, कि जिस तीर्थंकर के जितने गणधर हों, उतने गणधर की चरण पादुकाओं के प्रति उन तीर्थंकर भगवान की एक-एक चरण पादुका भी साथ में प्रतिष्ठित है अर्थात् २४ तीर्थंकर की भी चरण पादुकाएँ हैं, अतः इन्हें **'नमो जिणाणं'** व गणधर पादुकाओं को 'नमो सिद्धाणं' कहकर आगे बढ़ें ।

सीमंधर स्वामी

चेतन ! इससे थोडा आगे बढने पर बायीं ओर अब हम सीमंधर स्वामी के मन्दिर में दर्शन कर लें। **'नमो जिणाणं'** ...। विहरमान केवली तीर्थंकर श्री सीमंधरस्वामी ने इस शत्रुंजय गिरिराज की महिमा गाई है। इस जिनालय का तथा नवीन आदीश्वरजी के जिनालय का वस्तुपाल तेजपाल ने निर्माण कराया था। वास्तविक बात तो यह है कि इस जिनालय में स्थापित मूर्ति पर आदीश्वर भगवान का लेख है, और वि.सं. १६७७ मगसर सुद ५ को जगद्गुरु आ. हीरसूरिजी म. सा. ने प्रतिष्ठा करवाई थी। हाँ ! पहले इधर श्री सीमंधर स्वामी की प्रतिमा स्थापन का विचार था। उस कारण से सभी लोग इस मूर्ति को श्री सीमंधर स्वामी भगवान कहते हैं, अत: हम भी इसी नाम से पहचान रहे हैं। इस जिनालय में सरस्वती की प्राचीन प्रतिमा भी है।

अंबिका देवी

चेतन ! यहाँ रंग मंडप में देवी की मूर्ति है। उसे अमका (अम्बिका) देवी कहते हैं। चेतन ! इस दुनिया में सज्जन को ही सहन करना पडता है। धतूरे को कोई छूता भी नहीं, परन्तु चन्दन के वृक्ष को कुल्हाडी आदि के प्रहार सहन

करने पडते हैं। अमका के ससुराल पक्ष में सभी मिथ्यात्वी थे। एक बार मासक्षमण के तपस्वी मुनि गोचरी वहोरने आये। उसकी सासू पानी भरने गई थी। अमका ने श्राद्ध के लिए बनाई हुई खीर मुनि को भाव-पूर्वक वहोरा दी। ईर्ष्यालु पडोसन ने चुगली खाई। सास और पति ने उसकी भर्त्सना व तिरस्कार किया। अतः वह अपने दो छोटे बच्चों में से एक को अपने कमर में उठाकर और दूसरे को हाथ की अंगुली से पकड कर बाहर चली गई। वह दूसरों पर द्वेष करने के बदले अपने अशुभ कर्म का विचार करती हुई और सुकृत की अनुमोदना करती हुई आगे बढी। एक पुत्र को प्यास लगी और दूसरे को भूख। उसने सरोवर में से पानी लेकर एक पुत्र की प्यास बुझाई और आम के वृक्ष पर से पके हुए आम का झूमका (लूम्ब) तोड कर द्वितीय पुत्र की भूख शान्त की।

दूसरी तरफ उसके घर में एक आश्चर्यजनक घटना घटी। खीर के उल्टे पडे हुए खाली पात्र सीधे किये। वे सभी मिष्टान्न से भरे देख कर चकित हो गये। उसका पति सोमदेव भट्ट अमका (अम्बिका) को पुनः घर पर लाने के लिए चल पडा। अम्बिका ने दूर से उसे देखकर सोचा कि क्रुद्ध बना हुआ वह पति मेरे पास आ रहा है। मुझे पकड़ कर मेरी दुर्दशा करेगा। अतः वह जिनेश्वर परमात्मा की शरण लेकर दोनों पुत्रों के साथ समीपस्थ कुँए में कूद पडी। पति वहाँ पर आया, तो कुँए में तीनों के शव तैरते हुए देखे। निराश बना हुआ पति भी कुँए में कूद पडता है। अमका (अम्बिका) मर कर अम्बिका देवी बनी। पति मर कर उसका वाहन सिंह के रूप में देव बना। ऐसा शिल्प यहाँ संगमरमर पर आलेखित किया है। चेतन ! यहाँ पर प्रणाम कर लें। चलो अभी अपन आगे चलते हैं।

मिथ्या निशा का घोर अंधेरा, दूर गया किया दर्शन तेरा

पू. आचार्य देव श्री विजयानंद सूरीश्वरजी म. सा.

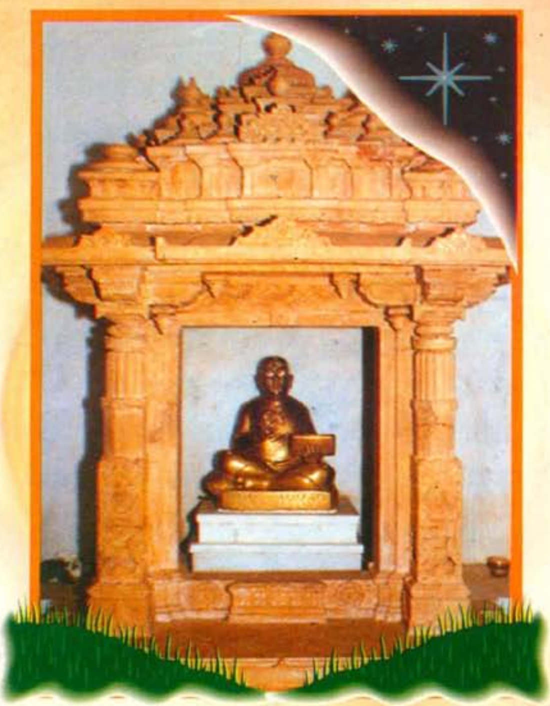

चेतन ! श्री आत्मारामजी स्थानकवासी सम्प्रदाय में थे। सच्चा मार्ग स्थापना निक्षेप मानने वाले मन्दिर-मार्गी का है। यह जानकर वे महा मेहनत से हिम्मत करके स्थानकवासी सम्प्रदाय का त्याग करके आचार्य देव श्री विजयानंद सूरीश्वरजी म. सा. के नाम से मन्दिरमार्गी बने। जब वे सिद्धगिरिराज पर आये, तब दादा की स्तुति बोलते समय उनके नेत्रों में आँसू लबालब भर आये। उन्होंने भगवान के समक्ष कुमत स्थानकवासी सम्प्रदाय में फंस जाने की बात का इकरार किया और सुमत स्थापना-निक्षेप मूर्ति तथा

स्थावर तीर्थ को स्वीकार करने का आनन्द हर्षाश्रुओं के द्वारा व्यक्त किया।

आदीश्वर भगवान के समक्ष अपनी वन्दना एवं हर्ष निम्नोक्त पंक्तियों के द्वारा व्यक्त किया था :-

जिन गणधर अवधिमुनि नाही, कोण आगे हूं पोकार करूँ रे।
जेम तेम करी विमलाचल भेट्यो, भव-सायर थी नहीं डरूँ रे।।
अब तो पार भये हम साधु, श्री सिद्धाचल दर्श करी रे।
दूर देशान्तर में हम उपनो, कुगुरु कुपंथ को जाल पर्यो रे।।
श्री जिन आगम हम मन मान्यो, तब ही कुपंथ को जाल जर्यो रे।।अब.।।
तो तुम शरण विचारी आयो, दीन अनाथ को शरण दीयो रे।
जयो विमलाचल मंडन स्वामी, जन्म जन्म को पाप गयो रे।।अब.।।

चेतन! इस प्रकार सिद्धगिरिराज की स्पर्शना एवं प्रभु दर्शन से आनन्द की अनुभूति उन्होंने व्यक्त की थी। चेतन! उनकी स्मृति में पंजाब जैन संघ एवं आत्मानंद जैन सभा भावनगर ने श्री सीमंधर स्वामी के मन्दिर के पूर्व दिशा के द्वार के बाहर दाहिनी ओर सुन्दर कलात्मक संगमरमर के गोख में पंच धातुकी न्यायाम्भोनिधि पंजाब देशोद्धारक आचार्य देवश्री विजयानंद सूरीश्वरजी महाराज की मूर्ति प्रतिष्ठित की है। आओ, हम गुरुवन्दन कर लें।

गुरुदेव! इस मूर्त्ति के दर्शन तो मैंने आज तक किये ही नहीं।

चेतन! तू तो उगता युवक कहलाता है। बीकानेर, पाली, ब्यावर एवं गोड़वाड़ में अनेक बुजुर्गों ने भी इस मूर्ति के दर्शन आज तक नहीं किये होंगे। न्यायाम्भोनिधि आचार्य देव श्री विजयानन्द सूरीश्वरजी म. सा. प्रसिद्ध नाम श्रीमद् आत्मारामजी म. सा. था। वे महान् ज्ञानी थे। डॉ. ए. एफ. रुडोल्फ होरनेल, जो प्राकृत और संस्कृत के दिग्गज विद्वान थे। एवं कलकत्ता रॉयल, एशियाटिक सोसायटी के मानद् मंत्री थे, ने अपने द्वारा अनुदित एवं सम्पादित ग्रन्थ उपासक दशांग श्री गुरुदेव को समर्पित किया है और उन्होंने श्री गुरुदेव को अज्ञानतिमिर भास्कर के बिरुद से संबोधित किया है।

दूसरी प्रदक्षिणा

नवीन आदीश्वरजी

चेतन ! दूसरी प्रदक्षिणा में प्रथम नये आदीश्वरजी का मंदिर आता है। बिजली गिरने से मूलनायकजी श्री आदीश्वर भगवान की प्रतिमाजी की नासिका खण्डित हो गई थी। दूसरी मूर्त्ति स्थापित करने के लिए श्री आदीश्वर प्रभु का नूतन बिम्ब लाया गया, परन्तु चमत्कारी प्राचीन दादा की मूर्ति का उत्थापन करते समय ''मा'' कार की ध्वनि हुई। अधिष्ठायक देव ने आज्ञा नहीं दी, जिसके कारण यह नूतन मूर्त्ति (श्री वस्तुपाल तेजपाल द्वारा निर्मित) इस जिनालय में स्थापित की गई एवं दो बड़े काउस्सग्गीये तथा बड़ी चरण पादुकाएँ भी यहाँ सूरत निवासी सेठ श्री ताराचन्द संघवी द्वारा अपने सपने के अनुसार प्रतिष्ठित की गई हैं। 'नमो जिणाणं...'

इस जिनालय में पन्द्रहवाँ उद्धार कराने वाले समराशा के पिताश्री देशलशा के ज्येष्ठ भ्राता आसाधर तथा उनकी धर्मपत्नी रत्नी श्री की मूर्त्तियाँ सामने स्थित गोखले में स्थापित की गई हैं। 'प्रणाम... धर्मलाभ...'

समराशा सजोडे

चेतन ! दूसरे गोख में १५ वाँ उद्धार कराने वाले पाटण के समराशाह और उनकी धर्मपत्नी हैं। समराशाह व उनकी पत्नी समरश्री की मूर्ति वि. सं. १४१४ वै. सु. १० को उनके पुत्र सज्जन एवं सालग ने बनवाई। ऐसा मूर्ति पर के लेख से ज्ञात होता है।

सम्मेतशिखरजी तीर्थ

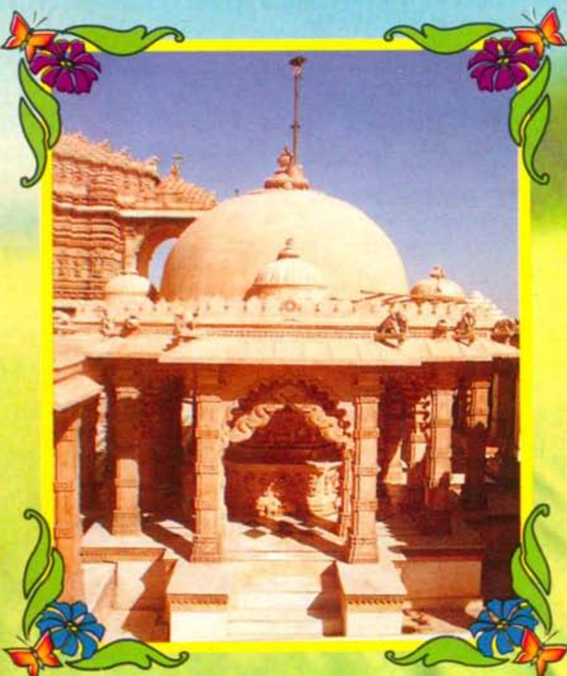

चेतन ! बायीं ओर से बाहर निकलने पर देहरियों के दर्शन करके तनिक चलने पर सम्मेतशिखरजी तीर्थ के दर्शन करें। चेतन ! जो पुण्यात्माएँ सम्मेतशिखरजी नहीं जा सकती, वे यहाँ पर बिराजमान २० भगवान की चरण-पादुकाओं को वंदन कर लाभ ले सकती हैं। इसी कारण से यहाँ २० पादुकाएं प्रतिष्ठित की गई हैं। यँहाँ पर २९ प्रतिमा भी हैं। **'नमो जिणाणं'** कहकर आगे चलने पर रायण वृक्ष के पीछे होकर एक देहरी में श्री आदीश्वर भगवान के अत्यन्त ध्यान से दर्शन करने चाहिये। भगवान के दोनों कंधों पर बालों की लटें हैं। तत्पश्चात् श्री सहस्रफणा पार्श्वनाथ के दर्शन करने पर द्वितीय प्रदक्षिणा पूर्ण हो जाती है।

तीसरी प्रदक्षिणा

पाँच भाईयों का जिनालय

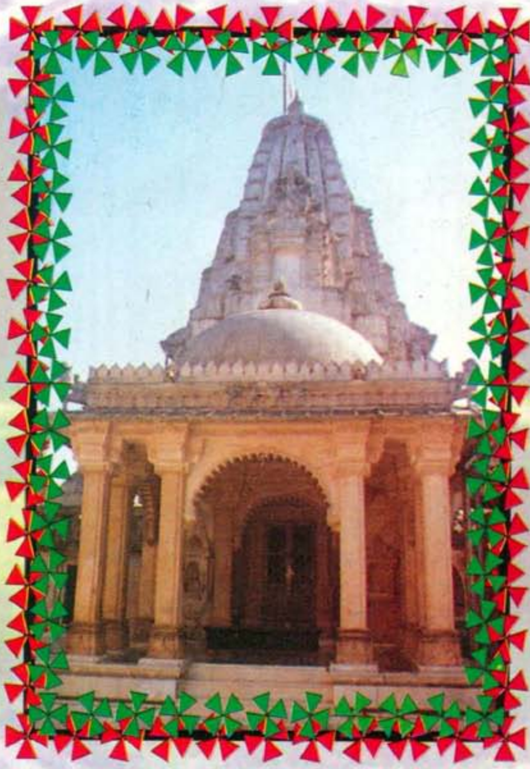

चेतन ! तीसरी प्रदक्षिणा में प्रथम उज्जैन के पाँच भाइयों का जिनालय है, जिसमें सं. १६६७ में प्रतिष्ठित मूलनायकजी श्री ऋषभदेवजी हैं। तत्पश्चात् वि. संवत् १६१५ में निर्मित बाजरिया के जिनालय में श्री सुमतिनाथजी हैं। 'नमो जिणाणं' कहकर आगे बढ़ने पर एक देहरी आती है।

श्याम नेमिनाथ प्रभु

चेतन ! यहाँ पर इस देहरी में अत्यंत मनोहर व अलौकिक श्यामवर्णी श्री नेमिनाथ प्रभु की प्रतिमा है । विशुद्ध ब्रह्मचर्य की साधना के लिए बाल ब्रह्मचारी नेमिनाथ प्रभु की भक्ति बहुत हितावह है । शत्रुंजय माहात्म्य में लिखा है कि ''इन्द्र की विनंति से गृहस्थावस्था में नेमि कुमार भी यहाँ पधारे थे । यह प्रतिमा उस स्मृति को ताजी करती है । यहाँ पर बहुत व्यक्ति चैत्यवंदन वगैरह करते हैं ।

चेतन ! 'नमो जिणाणं' कहकर यहाँ से क्रमशः देहरियों के दर्शन करते हुए हम आगे बढते हैं, तब दाहिनी तरफ मेरु पर्वत के दर्शन होते हैं । यहाँ पहले प्राचीन मेरु था । अहमदाबाद वाले शेठ माणेकलाल मनसुखभाई

(सेठ मोकु भाई) ने शत्रुंजय-गिरनार का संघ निकाला, तब संगमरमर का नया मेरु पर्वत बनवा कर चौमुखजी बिराजमान किये। उनके दर्शन करने के बाद हम अलग-अलग देहरियों के दर्शन करते हुए आगे चलते हैं, तब हमें एक मंदिर में २० विहरमान भगवान के दर्शन होते हैं। बीस विहरमान मंदिर के भीतर के गंभारे में २० व गंभारे के बाहर रंग मण्डप में २४ तीर्थंकर और उसके बाद हम अष्टापदजी मंदिर में दर्शन करें।

श्री अष्टापदजी तीर्थ

चेतन! भरत चक्रवर्ती द्वारा निर्माण करवाया हुआ अष्टापदजी तीर्थ वर्तमान में लुप्त हो गया है। उसकी स्मृति में इस मंदिर में क्रमश :- ४+८+१०+२ = २४ भगवान के दर्शन करने हैं। वैसे तो अष्टापद तीर्थ पर २४ भगवान क्रमानुसार प्रतिष्ठित हैं, परन्तु यहाँ पर आदिनाथजी की - ६, धर्मनाथजी की - ६, शान्तिनाथजी की - ४, पद्मप्रभुजी की - ३, अनंतनाथजी की - २, चंद्रप्रभुजी की - १, पार्श्वनाथजी की - १, और महावीर स्वामीजी की - १ प्रतिमा है। इस प्रकार भगवान क्यों बिराजमान किये होंगे? वह केवलीगम्य है। 'नमो जिणाणं...'

इस अष्टापदजी-सिंहनिषद्या नामक मंदिर में जिन बिंबों के अलावा

वीणा को बजाता हुआ रावण, नृत्य करती हुई मंदोदरी व लब्धिवंत गौतम स्वामी की मूर्ति स्थापित की हुई है, तथा सीढ़ियों पर तापस बताए हुए हैं।

प.पू.आ. हीरविजय सूरीश्वरजी म.सा.

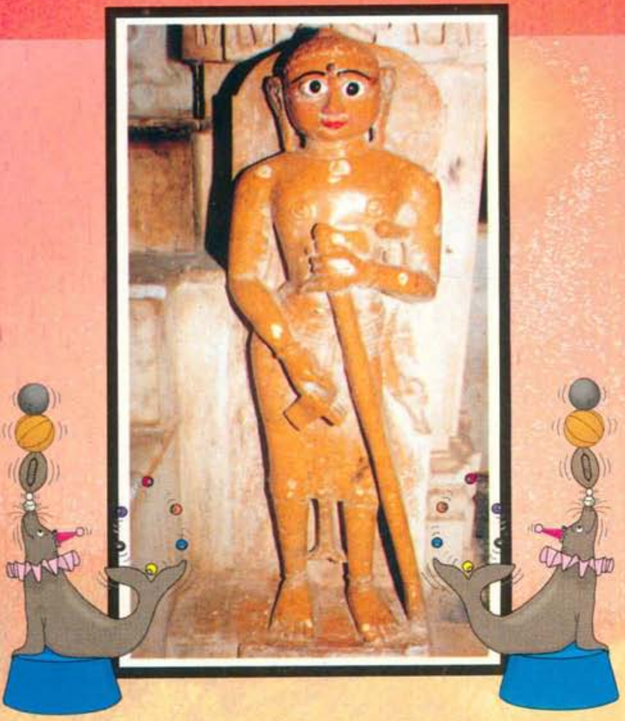

चेतन ! इस अष्टापदजी मंदिर में प. पू. आ. हीर विजय सूरीश्वर जी म. सा. (आ. धनेश्वर सूरीश्वर जी म.सा. ?) की खडी मूर्ति है। तथा संवत् १३८३ जेठ वद ८ को प्रतिष्ठित रुद्रपल्लीय आ. श्री चारुचन्द्र सूरीजी म. सा. की दूसरी मूर्ति भी है। 'मत्थएण वंदामि'

चेतन ! बाहर निकल कर देहरियों के दर्शन करते हुए हम आगे बढते हैं, तब रायण वृक्ष आता है।

चेतन ! अब हम रायण वृक्ष को तीन प्रदक्षिणा दें।

रायण वृक्ष

चेतन ! ऋषभदेव भगवान ६९ कोड़ा कोडी, ८५ लाख करोड़, ४४००० करोड़ (निन्नाणवे पूर्व) बार सिद्धाचल जी तीर्थ पर आये, तब उनका रायण वृक्ष के नीचे समवसरण रचा गया था। इस वृक्ष की डाल-डाल पर, पत्ते-पत्ते पर, पुष्प-पुष्प पर और फल-फल पर देवताओं का निवास है। परम पूज्य आचार्य देवश्री ज्ञानविमल सूरीश्वरजी महाराज ने कहा है कि-

''ज्यो ओगणोत्तेर कोड़ा-कोड़ी, तेम पंचासी लखवली कोडी, चुम्मालीस सहस कोडी, समवसर्या जिहां अइवार, पूर्व नव्वाणु एम प्रकार, नाभिनरिंद मल्हार।'' तथा दूसरे स्तवन में भी कहा है कि -

''देवतणा वासाय छे, सुण सुन्दरी, तीर्थ ने अनुकूल रे, गुण मंजरी;

यह वृक्ष शाश्वत है व देवदेवियों से सेवित है।

अरे चेतन ! इस रायण के वृक्ष में से जिसके ऊपर दूध झरता है, वह आत्मा तीसरे भव में मोक्ष में जाती है। श्री ज्ञान विमल सूरीश्वरजी म. सा. ने स्तवन में कहा है कि -

'खीर झरे जेह ऊपरे, सुण सुन्दरी, नेह धरी ने एह रे, गुण मंजरी ;
त्रीजे भवे ते शिव लहे, सुण सुन्दरी, थाये निर्मल देह रे, गुण मंजरी;
प्रीत धरी प्रदक्षिणा, सुण सुन्दरी, दिये एहने जे सार रे, गुण मंजरी ;

इसके पश्चिम में स्वर्ण सिद्धि व रस कुंपिका है

रायण चरण पादुकाएँ (रायण पगला)

(रायण तले पगलां सुखदाई, श्री ऋषभ तणा गुण गाई)

चेतन ! रायण वृक्ष के नीचे एक देहरी में आदीश्वर भगवान की विशाल सुन्दर चरण-पादुकाएँ हैं, जिनको 'रायण पगला' भी कहते हैं। इनकी प्रतिष्ठा वि. संवत् १५८७ में करमाशा ने सम्पन्न कराई थी। उसके दाहिनी ओर की दीवार में मोर, साँप, सिंह व हाथी की मूर्त्तियाँ हैं।

गुरुदेव ! ये मोर आदि की आकृतियां यहां क्यों बनाई होगी ?

चेतन ! एक बार सिद्धगिरिराज पर जाति-वैरवाले मोर एवं साँप संघर्ष कर रहे थे। इतने में वहां एक ज्ञानी मुनि आये। उन्होंने दोनों को उनकी भाषा में बताया कि अरे महानुभावो ! तुम दोनों पूर्व भव की शत्रुता से जाति-वैरवाले तिर्यंच बने हो। अब इस पवित्र गिरिराज पर वैर-विरोध का अशुभ कार्य न करके शुभ कार्य करो। इसका भवान्तर में अनेक गुणा फल मिलेगा। गुरु -वचन सुनकर दोनों को जाति-स्मरण ज्ञान हुआ। वे अनशन करके देवलोक में गये। इसी प्रकार सुकोशल की हत्यारिनी बाघिन, अन्य अनेक बाघ, सिंह आदि पशु सिद्धगिरिराज के प्रभाव से देवलोक में गये हैं और अनेक एकावतारी बने हैं। नवकार छंद में कहा है कि -

*''परमेष्ठि सुर-पद ते पण पामे, जे कृत कर्म कठोर।
पुण्डरिक गिरि प्रत्यक्ष पेख्यो, मणिधर ने एकमोर।''*

सर्प-मोर

सिंह-हाथी

गुरुदेव! और इसके पास ये सिंह और हाथी की प्रतिकृति क्यों खुदी हुई है? चेतन! सिंह और हाथी नित्य वैरी होते हैं। ऐसे प्राणी भी इस गिरिराज पर अनशन कर देवलोक को प्राप्त हुए हैं। सिंह के देवलोक गमन की कहानी इस प्रकार है - एक ब्राह्मण हिंसक यज्ञ कर रहा था। वहाँ एक मुनिराज आये और ब्राह्मण को समझाने लगे। क्रोधित होकर वह मुनि को मारने के लिये दौडा और एक स्तम्भ से टकराया, मरकर वह ब्राह्मण इसी गिरिराज पर सिंह बना। एक बार शान्तिनाथ भगवान यहाँ पर काउस्सग्ग ध्यान में खडे थे। सिंह उन्हें मारने के लिए कूद पडा, परन्तु वह निष्फल हुआ। इसी प्रकार अनेक बार जब वह निष्फल हुआ, तब विचार करते-करते उसे जातिस्मरण हुआ। प्रभु ने उसे प्रतिबोध दिया। सिंह शान्त हुआ! मृत्यु के वक्त समाधि भाव से मरकर देवलोक में गया। वहां से तीसरे भव में मोक्ष पाएगा।

गुरुदेव ! आज तो अनेक नवीन बातें जानने को मिली हैं ।

चेतन ! अब हम रायण पादुका के आगे पेज नंबर १४६ पर से तीसरा चैत्यवन्दन कर लें ।

नमि - विनमि

चेतन ! उस रायण पादुका की देहरी के पास बायीं ओर एक देहरी है । श्री धनपाल कवि द्वारा रचित 'तिलक मंजरी' ग्रन्थ में कहा है कि-

''नमि विनमि कृपाणोत्संगदृश्यंग लक्ष्मीः''

इसके अनुसार इस देहरी में ऋषभदेव के दोनों ओर तलवार लेकर नमि विनमि खड़े प्रतीत होते हैं । 'नमो सिद्धाणं...' तलवार में प्रभु का प्रतिबिम्ब दिखाई देता है। वह शिल्पी ने अपनी कला से उत्कीर्ण किया है ।

भरत - बाहुबली

चेतन ! इसके बाहर एक देहरी में हाथी पर खड़े हुए मुनिश्री बाहुबली बताए हैं। उनके दोनों तरफ स्थित ब्राह्मी और सुंदरी (बहिन साध्वीजी म.) प्रतिबोध दे रही हैं कि "वीरा मारा गज थकी उतरो, गज चढे केवल न होय रे".... तब बाहुबली अहंकार छोड कर केवल ज्ञानी लघु बन्धुओं को वंदन करने के लिए कदम उठाते हैं, उसी वक्त उन्हें केवलज्ञान की प्राप्ति होती है।

चेतन ! इनके पास में दूसरी मूर्ति भरत महाराजा की है। अनित्य भावना से भावित होने पर उन्हें आदर्श (आरिसा) भवन में केवलज्ञान प्राप्त हुआ था। दोनों तरफ दो देव खड़े दिखाई देते हैं। 'नमो सिद्धाणं'

पक्ष किसन सुकल व्रत चारीजी, शेठ विजय ने विजया नारीजी..।

विजय सेठ - विजया सेठानी

चेतन ! तत्पश्चात् आगे जाने पर बायीं ओर एक गोखले में विजय सेठ एवं विजया सेठानी की खड़ी मूर्तियाँ हैं । शादी से पूर्व विजय सेठ ने कृष्णपक्ष में ब्रह्मचर्य पालन करने का नियम ग्रहण कर लिया था और विजया सेठानी ने शुक्ल पक्ष में ब्रह्मचर्य पालन करने का नियम ग्रहण किया था । इन दोनों की परस्पर शादी हो जाने के कारण वर-वधू ने आजीवन ब्रह्मचर्य पालन करने का संकल्प कर लिया व यह भी निर्णय किया कि यदि इस संकल्प की बात माता-पिता को ज्ञात हो जाये, तो हम दीक्षा अंगीकार कर लेंगे । क्या विवाह करने के समय ब्रह्मचर्य पालन करने की उनकी भावना थी ? नहीं, यदि ब्रह्मचर्य पालन करने की भावना ही होती, तो वे विवाह क्यों करते ? पति के ब्रह्मचर्य के नियम की बात ज्ञात होने पर विजयाने ऐसा

पश्चाताप नहीं किया कि 'मैंने ऐसा नियम क्यों ले लिया ? एवं विजय सेठ ने भी पश्चाताप करके अन्य युवती के साथ विवाह नहीं किया। उन दोनों ने सुविशुद्ध ब्रह्मचर्य व्रत का पालन किया।

एक बार विमल केवली ने जिनदास श्रावक को कहा कि ८४००० साधुओं को आहार पानी का दान देकर किसी व्यक्ति को जितना लाभ होता है, उतना लाभ विजय सेठ-विजया सेठानी को भोजन कराने से प्राप्त होता है। वीस स्थानक की पूजा में कहा है कि-

''चौरासी सहसमुनि दान नुं, गृहस्थ भक्ति फल जोय हो विनीत;
किरिया गुणठाणे मुनि वडा, पण भावतुल्य नहीं कोय हो विनीत।
नमो नमो बंभवय धारीणं।''

ऐसे इस उत्तम दम्पति की साधर्मिक भक्ति का महत्त्व जानने के पश्चात् जिनदास श्रावक कच्छ में आये और उक्त बात का प्रचार होने पर उन दोनों ने दीक्षा ग्रहण की। विवाह से लगा कर अन्त तक ब्रह्मचर्य-पालक सेठ-सेठानी की मूर्त्तियाँ यहाँ स्थापित की गई हैं।

चेतन ! विजय सेठ - विजया सेठानी को प्रणाम करके उनसे उत्तम ब्रह्मचर्य पालन करने का सामर्थ्य प्राप्त करना। एक शायर ने कहा है कि-

इन्सान आकाश में चले और न गिरे आसान है,
इन्सान पानी पर चले और न डूबे आसान है,
इन्सान आग पर चले और न जले आसान है,
मगर यौवन की चिकनी धरती पर चले और न फिसले,
इससे बढ़कर और क्या महान है ?

धन्य ! उन महान व्रत पालक युवा दम्पति विजय सेठ-विजया सेठानी को!

चौदह रत्नों का जिनालय

चेतन ! यहाँ से आगे जाने पर एक जिनालय में १४ प्रतिमाजी होने से उसे चौदह रत्नों का जिनालय कहा जाता है। अथवा दो भाईयों ने भगवान की मूर्ति के नीचे चौदह रत्न रखे। अतः चौदह-रत्न का मंदिर कहा जाता है। इसमें दर्शन कर **'नमो जिणाणं'** कहें। इसका निर्माण संवत् - १६८३ में हुआ था। कोई इसे 'नौ निधान का जिनालय' भी कहते हैं।

चमत्कारी सुपार्श्वनाथ भगवान

चेतन ! आगे इसके पास एक देहरी में श्री सुपार्श्वनाथ भगवान की छोटी श्याम प्रतिमा है जो अत्यन्त चमत्कारी है। कई बार रात्रि में वहां बाजे बजते हैं ऐसा वहाँ के पहरेदार सन्तरी कहते हैं। **'नमो जिणाणं'** कहकर आगे चलें।

नई टूंक

चेतन ! बायीं ओर अंदर यह नई टूंक है। दादा के पीछे तथा अन्य स्थानों पर कुछ प्रतिमाजी थी। उन सबको उत्थापन करके नवीन टूंक में प्रतिष्ठित की गई हैं। 'नमो जिणाणं'

नई टूँक में पुंडरिक स्वामी

चेतन ! इस टूंक में ऋषभदेव मूलनायकजी के दर्शन करके पुंडरिक स्वामी की प्राचीन मूर्ति के दर्शन करें । **'नमो जिणाणं'....** । विद्याधर कुलीन संग्रामसिद्ध मुनि ने प्रभु ऋषभदेव और पुण्डरिक स्वामी के चरणों का ध्यान कर अनशन किया । उनके समाधि मरण के पश्चात् श्रेष्ठि राधेयक-पुत्र अम्बेयक ने इस प्रतिमा का संवत् १०६४ में निर्माण कराया । शत्रुंजय पर यह प्रतिमा सर्वाधिक प्राचीन है । बडी शानदार आकृति है । चेतन ! यहाँ पर **''नमो सिद्धाणं''** कह कर धन्यता का अनुभव करें । आवश्यक निर्युक्ति के आधार पर ''महावीर ना मुखडा थी फूलडां झरे ने गणधर गूँथे माल'' का शिल्प इस टूँक में बताया गया है ।

चेतन ! 'नमो जिणाणं' कहकर आगे देहरियों में दर्शन कर टूंक से बाहर चलें ।

चेतन बाहर आकर प्रश्न करता है कि,

गुरुदेव। कैसे ख्याल आया कि यह प्रतिमा प्राचीन हैं ?

चेतन। इस प्रतिमा के नीचे एक लेख लिखा हुआ है कि,

"श्रीमद् युगादि देवस्य पुंडरीकस्य च क्रमौ। ध्यात्वा शत्रुंजय शुद्धयन् संलेखा ध्यानसंयमैः। श्री संग्राम सिद्धमुनि विद्याधर कुल नभस्तल मृगांक..। वर्षे सहस्त्रे षष्ट्यां चतुरन्वित माधिके (सं.- १०६४) दिवमगच्छत्....अम्बेयकः शुभं तस्य श्रेष्ठि राधेयकात्मजः पुंडरीक पदा संगि चैत्यमेतश्चीकरत्।" इस लेख से ज्ञात होता हैकि यह प्रतिमा प्राचीन है। ऐसे तो यह तीर्थधाम शाश्वत है लेकिन वर्तमान काल में इस तीर्थपर यह प्रतिमा सबसे प्राचीन है।

चेतन ! प्रसंगोपात यह बात भी कह दूँ कि श्री ऋषभदेव भगवान के गणधर श्री पुंडरीक स्वामी ने इस गिरिराज का माहात्म्य सवालाख श्लोको में कहा था, अब वह ९ हजार श्लोकों में उपलब्ध हैं, नहि तो पू. आचार्य श्री रत्नशेखर सूरिजी म. ने श्री समेत शिखरजी महातीर्थ का माहात्म्य १६ हजार श्लोक प्रमाण बनाया था, वह अब अप्राप्य है। चेतन तुं कितना भाग्यशाली है, कि तुझे गिरिराज की महिमा जानने को मिल रही है। मनुष्य जीवन पाकर के जो इस तीर्थराज के माहात्म्य से अज्ञात है, उसका मानव जन्म गर्भावास तुल्य है।

मेरा शत्रुंजय महान...!

हे शत्रुंजय ! तूने अतीत में अनेक भव्यात्माओं को आंतर शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने के लिये मदद की है। तो मैं भी इसी श्रद्धा के साथ तेरे पास आया हूँ, मुझे भी काम, क्रोध आदि शत्रु पीडा कर रहे हैं, यदि तू मुझे इन शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने में सहाय करेगा, तो मैं मानुंगा कि आप मेरे लिये वास्तव में महान "शत्रुंजय" ही हो...॥

गंधारिया चौमुखजी

चेतन ! क्रमशः नूतन टूँक एवं अन्य देहरियाँ में दर्शन करते-करते कुछ आगे जाकर हम गंधारिया चौमुखजी के दर्शन करने के लिये पहुचें। अकबर प्रतिबोधक जगत् गुरु हीरसूरिजी महाराज साहेब संघ लेकर यहाँ आये थे। उस समय यहां ७२ संघ इकट्ठे हुए थे। गंधार का युवा श्रावक रामजी अपनी युवा पत्नी के साथ यहाँ आया था। गुरुदेव ने रामजी को स्मरण कराया कि ब्रह्मचर्य व्रत ग्रहण करने का यह अपूर्व अवसर है, क्योंकि आपने एक बार कहा था कि एक पुत्र का जन्म हो जाने के पश्चात् मैं यह भीषण व्रत धारण करुँगा। गुरु-वचन को शिरोधार्य करके रामजी ने तुरन्त वासना को तिलांजलि दे दी। अपनी पत्नी (उम्र २२ वर्ष) के साथ ब्रह्मचर्य का भीषण व्रत ग्रहण कर लिया। ७२ संघों ने अन्य व्रत पच्चक्खाण अंगीकार किये। इस हर्ष की स्थाई स्मृति में विक्रम संवत् १६२० में रामजी वर्धमान व उसके भाईयों ने आ. दानसूरिजी महाराज व आ. हीर सूरिजी म. के उपदेश से इस

सुन्दर जिनालय का निर्माण करवाया। ऐसा इस मंदिर में स्थित लेख से ज्ञात होता है।

धन्य है रामजी ! तेरी वासना-विजय को ..... ।

इसमें मूलनायक श्री शान्तिनाथ भगवान हैं। चौमुख प्रतिमाजी हैं। 'नमो जिणाणं'...। गोख में २४ तीर्थंकरों की माताएँ उन्हें अपने पास लेकर खड़ी प्रतीत होती हैं।

गणधर पुण्डरिक स्वामी का मन्दिर

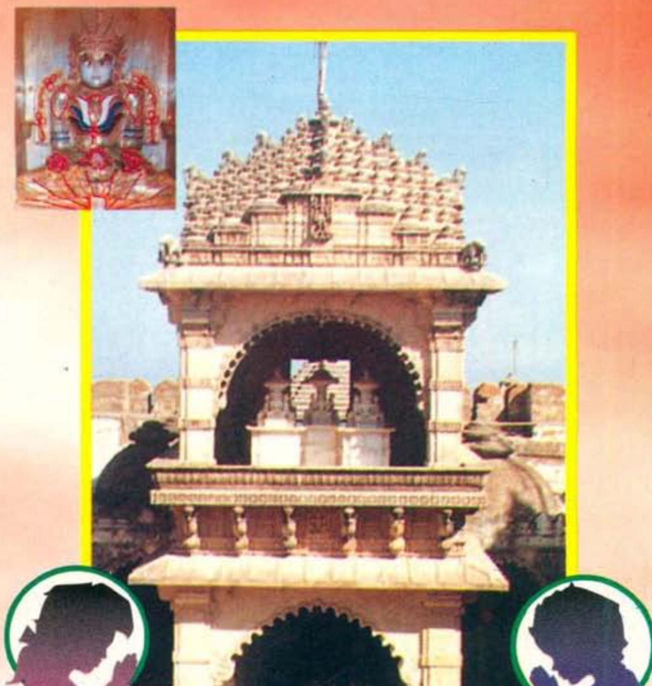

चेतन ! तीसरी प्रदक्षिणा के अन्त में हम एक मंदिर में श्री पुण्डरिक स्वामी के दर्शन कर लें। ये पुण्डरिक स्वामी (मूलनाम ऋषभसेन) दादा ऋषभदेवजी के पौत्र व प्रथम गणधर थे। श्री ऋषभदेव भगवान ने पुण्डरिक गणधर को कहा था कि तुम इस सिद्धगिरिराज पर केवलज्ञान एवं निर्वाण प्राप्त करोगे। अतः वे अपने पाँच करोड़ शिष्यों के साथ इस गिरिराज पर आकर फागुन सुद १५ को अनशन करके केवल ज्ञान प्राप्त कर चैत्र सुद १५ को मोक्ष

में गये। तब से इस गिरिराज का नाम पुण्डरिक गिरि पड़ा है। विक्रम संवत् १५८७ में करमाशाह ने इस प्रतिमाजी की प्रतिष्ठा कराई थी।

चेतन! देख तो सही। पुण्डरिक स्वामी भगवान ऋषभदेव के सामने देख रहे हैं। भगवान अपने गणधर पर अमृत-दृष्टि डाल रहे हैं। गुरु-शिष्य की जोड़ी अनुपम आनन्द की प्रेरणा दे रही है।

चेतन! हम यहाँ पेज नं. १४७ पर से चौथा चैत्यवन्दन कर लें।

दादाजी का विशाल जिनालय

'दादा आदीश्वरजी दूर थी आव्यो, दादा दरिशन दे।,

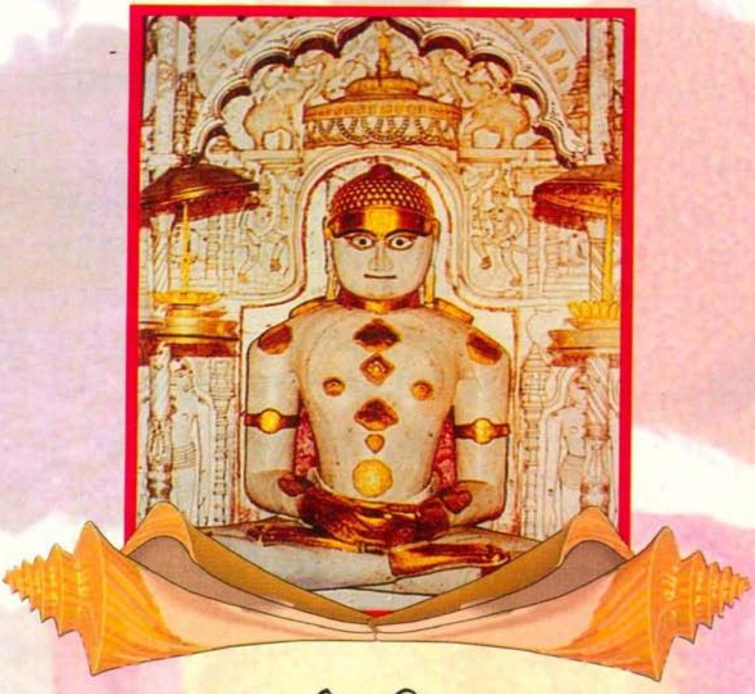

मूलनायक श्री आदिनाथ भगवान

चेतन! चल, अब शीघ्रता कर। तीन प्रदक्षिणाएँ दे दी हैं। अब दादा के दर्शन - वन्दन करें। तनिक भी कमी मत रखना। जितने समय तक हो सके,

उतने समय तक हम प्रभु के सानिध्य में गुण-गान करें और आत्मनिन्दा करें। हमारे अधिकाधिक कर्मों का क्षय होगा। हम दादाजी के दर्शन-वन्दन साथ-साथ करें। अरे! हम ऐसा संकल्प करें कि साथ-साथ मोक्ष जायें। पाँच करोड एक साथ मोक्ष में गये तो हम क्यों न जायें ? चलो दाहिनी ओर से प्रवेश करें।

"बोलो आदीश्वर भगवान की जय।"

चेतन! द्वार में प्रवेश करने पर जिस अद्‌भुत प्रभु प्रतिमा के दर्शन के लिए हम तडफ रहे थे, उनके सुभग दर्शन हो रहे हैं। देख तो सही, दादा की प्रतिमा के नेत्र में से जो अमीवर्षण है, जो योग मस्ती है, जो आकर्षण है, उस अध्यात्म की किरण में आत्मा दो घडी खो जाए, तो वह त्रिभुवन के वैभव का भी विचार न करे। उसकी आत्मा में जो जोश आयेगा, उसके आगे समग्र संसार के आकर्षण फीके पडेंगे.... । जिस आत्मा को प्रशम रस निमग्न दृष्टियुगल का सानिध्य प्राप्त हो जायें, तो उसके जैसा सौभाग्य शाली आत्मा इस जगत में अन्य कोई नहीं है। विमलगिरि पर ऐसे विमल लोचन के दर्शन से हमारी आत्मा भी विमल बन जाती है। भगवान का मुखारविन्द सूर्य के समान तेजस्वी, चन्द्रमा के समान शीतल एवं सागर की तरह गम्भीर है। उनके मुँह में से अपार करुणा का स्रोत प्रवाहित हो रहा है। हम अपना हृदय रूपी पात्र सीधा करें और उस करुणा को उसमें ग्रहण कर लें। प्रशमरस से भरपूर दादाजी की मुख मुद्रा के दर्शन से लोगों के अंतर में से ध्वनित होते हुए भाव "माता मरुदेवी ना नंद, देखी तारी मूरति मारु मन लोभाणुंजी...।, शेत्रुंजा गढ ना वासी रे, मुजरो मानजो रे....।" इत्यादि कवितामयी वाणी द्वारा व्यक्त होते हैं। ये सुनते ही ऐसा लगता है कि कवि का ही नहीं बल्कि भक्त का भी अंतर गद्‌गद् होकर इन गीतों को ललकार रहा है ...।

चेतन! देश देशान्तरों से हजारों किलोमीटर दूर से आते हुए भावुक यात्री श्री आदिनाथ दादा की अनुपम, भव्य, तेज की अंबार सम, अलौकिक व चमत्कारी मूर्ति के दर्शन करके अपनी आत्मा को धन्यातिधन्य मानते हैं, उनकी आत्मा प्रफुल्लित बनती है। वे जगत के सुख-दुःख भुल जाते हैं, भावना बलशाली बनती है और प्रभु के चरणों में सर्वस्व अर्पण करने की अभिलाषा जागृत होती है। स्वर्ग की किसी भूमि में बैठे हों, ऐसा हमें भास होता है ....। यहां से आत्मा को खिसकने का मन नहीं होता है, बार बार देखने पर भी मन तृप्त नहीं होता है, ऐसा दादा की प्रतिमा का अनुपम आकर्षण है।

चेतन! उन अलौकिक प्रभावशाली प्रतिमा के दर्शन करते समय

'किं कर्पूरमयं .....', 'आव्यो शरणे...' और 'आदिमं....' आदि प्रभु स्तुतियाँ बोलकर भगवान से साक्षात्कार के आनन्द की अभिव्यक्ति करें।

एवं दर्शनं देवदेवस्य.... हे देवाधिदेव! आपके दर्शन से जीव के पाप नाश हो जाते है, हे नाथ! आपके दर्शन से जीव स्वर्ग के सुख प्राप्त करते हैं, और हे प्रभु! आपके दर्शन से जीव जीव मिटकर शिव बन जाता है...।

"बोल बोल आदीश्वर व्हाला, कांई थारी मरजी रे..."

चेतन! दादा के समक्ष हाथी पर मरुदेवी माता बैठी है। भगवान के दर्शन से वे केवलज्ञान प्राप्त करके हाथी पर बैठी-बैठी ही मोक्ष में चली गई। प्रभुने एक हजार वर्ष तक कष्ट सहन कर केवलज्ञान रूपी रत्न प्राप्त किया और प्रथम मिलन में ही वह माता को दे दिया और माता भी कैसी? केवलज्ञान रूपी रत्न प्राप्त करके पुत्र के लिये पुत्रवधु रूपी शिवसुन्दरी की पसन्दगी करने के लिए प्रभुसे पहलेही मोक्ष में चली गई।

हम भी मरुदेवा माता की तरह दर्शन करना सीखें। धन्य माता! धन्य पुत्र!

चेतन! अब हम यात्रा का अन्तिम पाँचवाँ चैत्यवन्दन पेज नं.१४८ पर से यहाँ कर लें। पच्चक्खाण करके सबके साथ 'आव्यो दादा ने दरबार' गीत से प्रभु-भक्ति में तन्मय हो जायें।

'आव्यो दादा ने दरबार, करो भवोदधि पार।
खरो तू छे आधार, मोहे तार तार तार ।।१।।
आत्म गुणो नो भंडार, तारा महिमा नो नहीं पार।
देख्यो सुन्दर देदार, करो पार पार पार ।।२।।
तारी मूर्त्ति मनोहार, हरे मन ना विकार।
मारा हैयानो हार, वंदुं वार वार वार ।।३।।
आव्यो देरासर मोझार, कर्यो जिनवर जुहार।
आव्यो पालीताणा मोझार, कर्यो आदि जिन जुहार।
प्रभुचरण आधार, खरो सार सार सार ।।४।।
आत्मकमल सुधार, तारी लब्धि छे अपार।
एनी खूबी नो नहीं पार, विनती धार धार धार ।।५।।
'सूरि गुणरत्न' सार, आव्यो शत्रुंजय मोझार।
करे विनंति अपार, मोहे तार तार तार ।।६।।

दादा ! तेरी महिमा का नहीं पार

चेतन ! भरत चक्रवर्ती से लेकर जावडशा तक १३ उद्धार हुए। १४ वे उद्धार के वक्त बाहड मंत्री ने नया जिनालय बनवाया था। उसके बाद विक्रम संवत् १३७१ में समराशाह ने पन्द्रहवाँ उद्धार कराया, परंतु नया मंदिर नहीं बनाया, तब तपागच्छ के आचार्य श्री रत्नाकर सूरिजी महाराज के कर कमलों से मूलनायक श्री ऋषभ जिन की प्रतिमा की प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई थी। उक्त प्रतिमा मुसलमानों ने खण्डित कर दी। उसके बाद खण्डित रूप में सिर के भाग की ही पूजा होती थी। मुसलमानों के आतंक के कारण नूतन बिम्ब की स्थापना नहीं की जा सकी और मुसलमान सत्ताधीश यात्रियों से एक सौ स्वर्ण मुद्राएँ लेते थे। सम्पूर्ण भारत के संघों ने इस आपत्ति से बचने के लिए भिन्न भिन्न अभिग्रह लिये। सभी लोग चिन्तातुर थे। उनमें भी चितौड़गढ़ के ओसवालवंशीय तोलाशा नामक नगरसेठ श्रावक अधिक चिन्तित थे। उनके रत्नाशा, पोमाशा, दशरथशा, भोजाशा तथा करमाशा नामक पाँच पुत्र थे।

वि. संवत् १५८२ में तपागच्छ के आचार्य श्री धर्मरत्नसूरिजी महाराज का चित्तौड़ आगमन हुआ। एक दिन तोलाशा अपने पुत्र करमाशा के साथ आचार्य महाराज के पास गये और पूछा कि मेरे मन में सोचा हुआ कार्य सम्पन्न होगा अथवा नहीं ? आचार्यश्री ज्योतिष शास्त्र के प्रकांड विद्वान थे। उन्होंने कहा कि आपकी भावना शत्रुंजय का उद्धार करने की है, लेकिन वह काम आपके हाथ से नहीं परंतु आपके पुत्र के द्वारा सम्पन्न होगा। तत्पश्चात् उपाध्याय श्री विवेकमण्डन के मार्गदर्शन में कुलदेवी के संकेतानुसार करमाशा (जो मेवाड के चितौड़गढ के राजमान्य श्रेष्ठी थे) पॉच वर्षो में भगीरथ कार्य कर सके तथा मंत्रीश्वर वस्तुपाल द्वारा शिला में से वास्तुकला के ज्ञाता उपाध्यायजी श्री तथा मुनिराज श्री विवेकधीर की देखरेख में द्रव्य एवं भाव -शुद्धि पूर्वक जिनबिम्ब का निर्माण कराया। यह कार्य निर्विघ्न सम्पन्न हो, उसके लिए तपस्वी मुनिराजश्री रत्नसागरजी व मुनिराजश्री जय मंडन जी नाम के दो मुनियों ने छः माह के उपवास किये थे। अन्य मुनिओं ने छट्ठ-अट्ठम व जाप वगैरह किये। विक्रम संवत् १५८७ में प्रतिष्ठा निश्चित हो जाने पर आचार्य श्री विद्यामंडन सूरीश्वरजी महाराज आदि सैंकड़ो आचार्य, उपाध्याय एवं हजारों मुनिगण सिद्धगिरिराज पर पहुँचे। धूप की सुगन्ध से महकते हुए एवं अद्भुत उत्साह के वातावरण में भगवान की अंजनशलाका-प्रतिष्ठा के अवसर पर जिनबिम्ब में समकित दृष्टि देव संक्रान्त हुए और भगवान ने सात बार श्वासोश्वास लिया। शत्रुंजय तीर्थोद्धार प्रबंध के द्वितीय उल्लास की १३० वी गाथा में लिखा है कि

''बंन्दीषु पठत्सु भोगावलीषु विलसत्सु विजयशब्देषु संक्रान्तेषु च मूर्तौ (तदा मूलनायकप्रतिमया सप्तश्वोसोच्छ्वासाः कृताः) सुरेषु पूज्यानु-भाववशात्'' ऐसा अद्‌भुत चमत्कार हुआ। आज भी भगवान श्री ऋषभदेव प्रत्यक्ष उपस्थित प्रतीत होते हैं । करमाशा ने सूबा को पर्याप्त धनराशि देकर भी सौ-सौ स्वर्ण मुद्राएँ देना बन्द करा कर लाखों मनुष्यों के लिए दादा के दर्शन करमुक्त किये ।

तीर्थाधिराज श्री शत्रुंजय की आगम प्रसिद्ध महिमा आज भी दृष्टिगोचर हो रही है। प्रतिदिन हजारों यात्री इस गिरिराज की यात्रा के लिए आते हैं। जब देखो तब गिरिराज की सोपान नर नारीओं की पंक्तियों से उभरी हुई होती है। दादा के दरबार में पूजा के लिए लंबी कतार आज भी नजरोनजर देख सकते हैं। फुलो के ढेर के ढेर दादा के चरणों में चढ़ते हैं। जब देखो तब दादा का रंगमंडप भक्तों से भरा हुआ ही दीखाई देता है। सभी अपनी-अपनी मस्ती में ऐसे हो जाते हैं कि पास में बैठा हुआ कौन क्या कर रहा है? उसका भी ध्यान नही आता है। ऐसी आस्था, भक्ति व श्रद्धा का स्थान विश्वभर में मात्र एक ही है। ऐसा कहने में कोई अतिशयोक्ति नहीं है।

चेतन! चमत्कारी दयालु आदीश्वर प्रभु हम पर कृपा की वृष्टि कर रहे हैं।

चेतन! 'दादा' के समक्ष अब हमअन्तिम प्रार्थना करें कि हे दादा! हमें मरुदेवा के समान दर्शन देना, शालिभद्र एवं धन्ना जैसा त्याग मुझे प्राप्त हो, नागकेतु जैसी तन्मयता, श्री गौतम स्वामी एवं पंथकजी के समान गुरुभक्ति, धन्ना अणगार एवं ढंढण के समान तप मुझे प्राप्त हो, नवकार का जाप, आयंबिलादि का तप एवं सच्चे संयम की आराधना मुझे प्राप्त हो। ऐसी भावयात्रा नित्य होती रहे और मेरे कर्मों का क्षय होता रहे। बस इतनी ही मेरी अन्तःकरण की प्रार्थना है।

दादा के दरबार का संक्षिप्त परिचय

(१) दादा आदीश्वर जी के काष्ठ के मन्दिर का जीर्णोद्धार करके विक्रम संवत् १२१७ में पाषाण के मन्दिर का निर्माण किया गया।

(२) मन्दिर में जो मण्डप है, वह 'मेघनाद मण्डप' कहलाता है।

(३) इस प्रासाद को 'नन्दीवर्द्धन प्रासाद' कहा जाता है।

(४) इस मन्दिर में १२४५ कुम्भ, २१ सिंह एवं कुल ७२ खम्भे हैं तथा चार योगिनियाँ एवं दस दिक्पाल हैं।

(५) मन्दिर के चारों ओर १९७२ देहरियाँ, ४ गवाक्ष, ३२ पुतलियाँ, ३२ तोरण, २९१३ पाषाण की प्रतिमाजी, १३१ धातु की प्रतिमाजी, १५०० चरण-पादुकाएँ हैं और दादा के मन्दिर की ऊँचाई ५२ हाथ है।

(६) करमाशा के द्वारा प्रतिष्ठा कराने के पश्चात् विक्रम संवत् १६५० में जगद्गुरु श्री विजयसेन सूरीश्वरजी महाराज के उपदेश से खंभात-निवासी तेजपाल सोनी ने जीर्णोद्धार कराया था।

(७) वर्तमान में जो 'दादा' का परिकर है, उसको अहमदाबाद निवासी श्री शान्तिलाल सेठ ने बनवाया था और विक्रम संवत् १६७० में जगद्गुरु आचार्य श्री विजय हीर सूरीश्वरजी महाराज के संतानीय आचार्य श्री विजय देवसूरीश्वरजी महाराज ने प्रतिष्ठा कराई थी।

यात्रा की पूर्णाहुति

चेतन! यहाँ अपनी यात्रा पूर्ण होती है। अब हमको आये थे, उसी मार्ग से धीरे-धीरे नीचे उतरना है। यदि उतरते समय सावधानी नहीं रखी, तो गुलांट खाते देर नहीं लगेगी। हम धीरे-धीरे सगाल पोल तक पहुँच गये। अब नवटूँक में दर्शन करने चलें।

नौ टूँक

'ज्याँ निरखिये नव टूंको, पातिक नो थाय भुक्को'

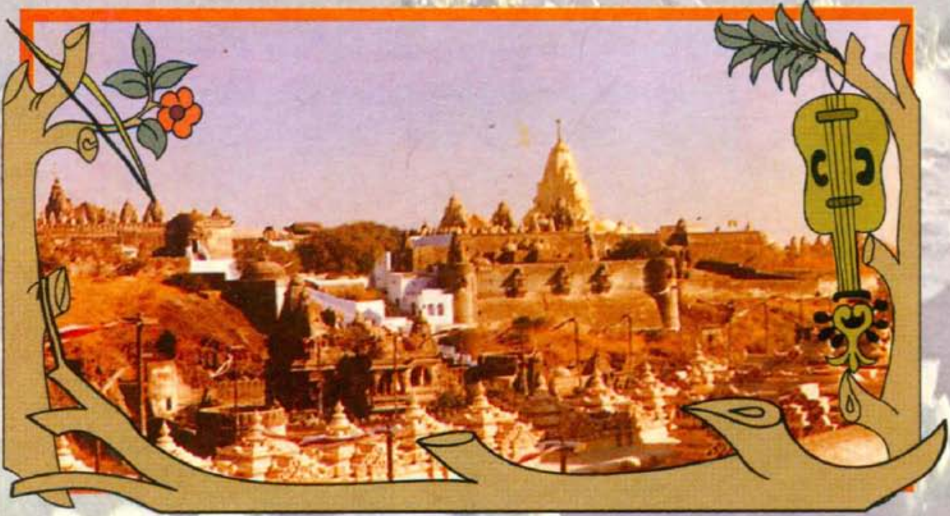

(ऊँचे शिखर वाली चौमुखजी टूँक युक्त नौ टूँकों का दृश्य)

नौ टूँकों की भावयात्रा

चेतन ! हम सिद्धगिरि आये हैं, तो इस ओर नौ टूंक में भी जाकर आए, क्यों जाना है न ? चेतन-जी हाँ, जरुर जाना है। इधर आए हैं किस लिए ? तो चलो, अब संक्षेप में नौ टूँकों की भाव यात्रा कर लें। नौ टूँकों की यात्रा दो प्रकार से की जाती है। एक तो हनुमान धारा से नौ टूँकों में जा सकते हैं। उस मार्ग में पहले 'सवा सोमा की टूँक' आती है। क्रमशः आठवीं मोतीशा की टूँक और नौवी दादा की टूँक आती है। जब कि पहली दादा की टूँक के दर्शन करके सगाल पोल से दूसरी मोतीशा टूँक आदि से होकर जायें, तब नौवी अन्तिम टूँक सवा सोमा की आती है। टूँक यानि मंदिरों का समुह...। ऐसे तो इसमें मूख्य आठ टूँक हैं, लेकिन नौ टूँक बोलते हैं।

दूसरी मोतीशा टूँक

'लावे लावे मोतीशा सेठ न्हवण जल लावे छे '

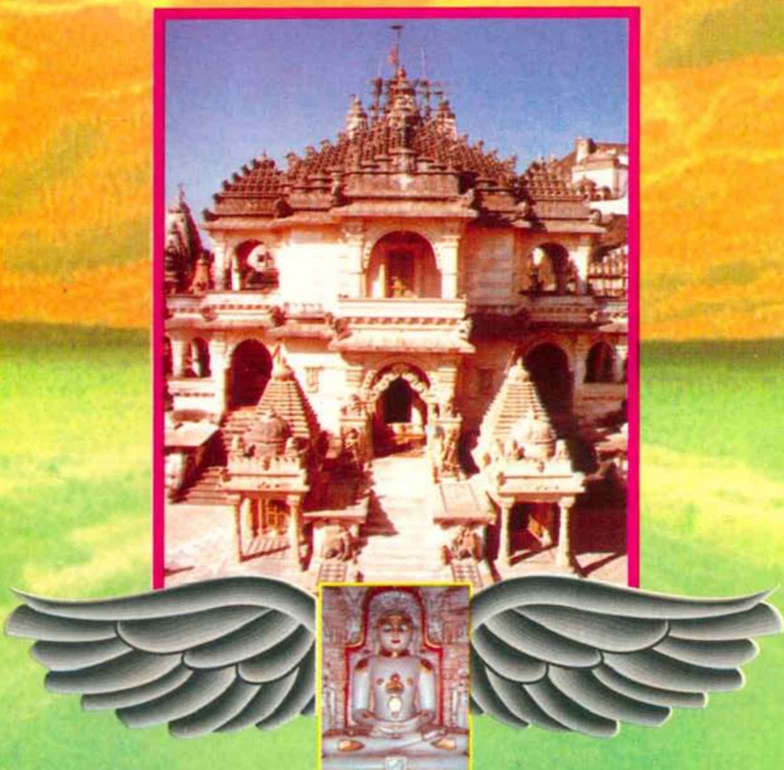

चेतन ! हम दादा के दर्शन करके नौ टूँकों में जायें, तो लगभग सर्वत्र पक्षाल आदि हो जाता है। अतः ऊपर के मार्ग से ही नौ टूँकों के दर्शन करना उचित है।

चेतन ! सगाल पोल के बाहर आते हैं, तब घेटी पाग जाने के रस्ते के शुरूआत में ही दाहिंनी ओर वहाँ एक खिड़की है। उसमें जाकर नलिनी गुल्म देव-विमान के आकार में निर्मित मोतीशा टूँक में प्रवेश करें !

विशाल मोतीशा टूँक का भीतरी दृश्य, मानो मन्दिरों की नगरी हो

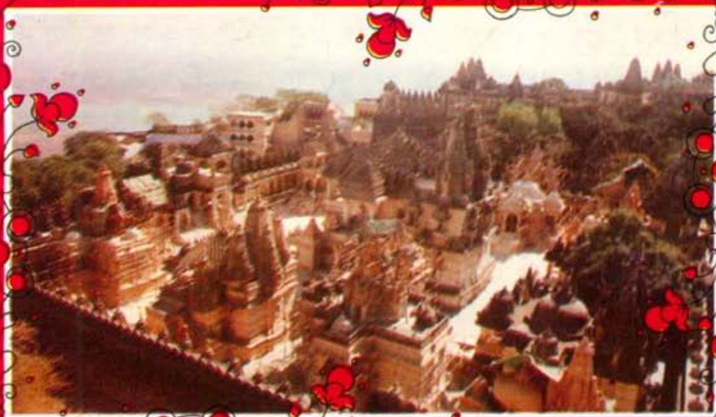

चेतन ! मोतीशा शेठ के चीन, जापान, इंग्लेण्ड की विदेशी कंपनियों के साथ व्यापार चलता था। एकबार गैर कानूनी जहाज विदेश जा रहा था, उस समय सरकारी अधिकारियों को शक होने पर उन्होंने उसकी जाँच के लिए तत्कालीन विशिष्ट गतिशील नाव (स्टीम लोंच) उसके पीछे छोडी। शेठ मोतीशा ने संकल्प किया कि यदि जहाज बच जाये, तो उसकी सारी धनराशि का उपयोग सिद्धगिरि पर करूंगा। पुण्य से जहाज बच गया। शत्रुंजय तीर्थ के दो शिखरों के बीच कुंतासर नामक एक भयंकर गहरी खाई थी। दादा की टूँक जाने के लिए सगाल पोल की तरफ का पगदंडी का रस्ता खतरनाक था। अतः अधिकांश लोग हनुमान धारा से चौमुखजी टूँक, अद्‌भुतजी, बालाभाई टूँक होकर सीधे हाथीपोल जाते थे। अतः मोतीशा शेठ ने ऐसी भयंकर खाई को भरकर नलिनीगुल्म विमान सदृश जिनालय बनाने का संकल्प किया। उस जमाने में खाई भरने में ८० हजार रुपयें सिर्फ रस्सियों का खर्च हुआ। १३ लाख रुपये मन्दिर निर्माण में व्यय हुए। इस जिनालय के निर्माण कार्य के लिए ११०० शिल्पी और ३००० मजदूरों नें ६

वर्ष तक कार्य किया। ५००० जिनप्रतिमाओं का सर्जन किया गया। शेठ मोतीशा का अचानक स्वर्गवास होने पर उनके पुत्र खीमचंद भाई ने युगादिदेव आदीश्वर भगवान आदि परमात्माओं की अंजनशलाका-प्रतिष्ठा सं. १८९३ महा वद २ को करवाई। इस टूंक की रचना दादा की टूंक के सदृश है। चेतन ! हम मूलनायकजी श्री ऋषभदेव भगवान को 'नमो जिणाणं' कह कर दर्शन करें।

चेतन ! इस मोतीशा टूंक में १६ बडे मंदिर व १२५ करीब देहरियां हैं। जहां करीब १५० साल पहले भयंकर गर्त अपनी भीषणता के कारण यात्रियों के दिल में भय पैदा करता था, वहां पर आज देव विमान जैसे सुंदर मंदिरों को देखकर दर्शकों के हर्षका पार नहीं रहता। सचमुच ही संसार में समर्थ मनुष्य क्या नहीं कर सकता ?

मरुदेवा माता व नंदन ऋषभकुमार

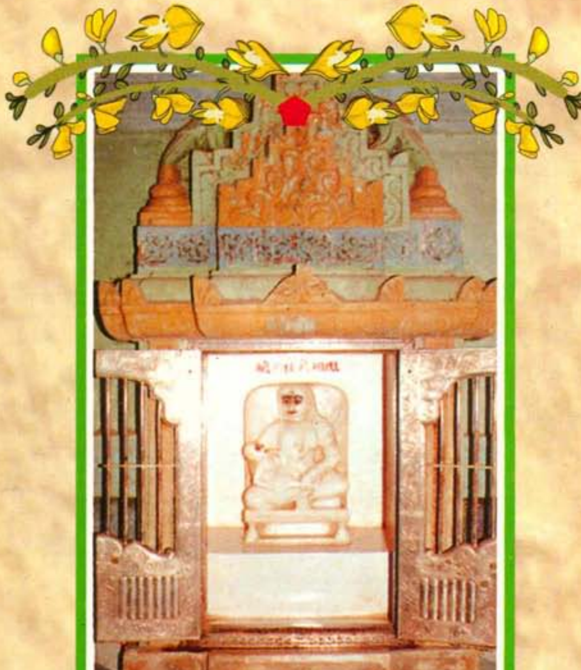

चेतन ! इस टूंक में पुण्डरिक स्वामी के मण्डप में मरुदेवामाता अपने नंदन ऋषभकुमार को गोद में लेकर बैठी हैं। ऐसा माँ-बेटे का वात्सल्य भरा दृश्य अन्यत्र देखने को नहीं मिलेगा। चलो वंदन करें... चेतन ! अब आगे की टूँकों के दर्शन करने चलें।

चेतन ! अब संक्षेप में उन टूँकों के नाम तथा मूलनायकजी आदि का परिचय दूँगा।

तीसरी बालाभाई की टूँक

चेतन ! यह तीसरी बालाभाई की टूंक है। इसमें मूलनायकजी श्री ऋषभदेव भगवान हैं। घोघा बन्दर के श्री दीपचन्द भाई उर्फ बालाभाई ने विक्रम संवत् १८९३ में इस जिनालय का निर्माण कराया था, जिसके कारण यह टूँक 'बालावसी' भी कही जाती है।

इसके ऊपर के भाग में चौमुखजी, सामने पुंडरिक स्वामी, अन्य जिन मंदिरो में वासुपूज्यजी, शांतिनाथजी और अजितनाथजी वगैरह भगवान की प्रतिमाएँ हैं। 'नमो जिणाणं' कहकर आगे बढ़े....।

अद्भुतजी-आदीश्वरजी

चेतन ! बाला भाई की टूंक में से कुछ सीढियाँ चढ़ने पर बायीं ओर एक बडे कमरे में पर्वत में से उत्कीर्ण विशाल श्री आदिनाथ भगवान की प्रतिमा है, जिसे अद्भुतजी (अद्बदजी) कहते हैं। यहाँ पूजारी यात्रियों के नाम की जोर से आवाज लगा कर दादा को पुकारता है। यह प्रतिमाजी १८ फीट ऊँची है और साढ़े चौदह फीट चौड़ी है। वि. संवत् १६८६ में दौलताबाद निवासी श्री धर्मदास सेठ ने अद्भुतजी के मंदिर के मंडप का कोट सहित पुनः उद्धार कराया। ऐसा इसमें स्थित एक लेख पर से ज्ञात होता है। अज्ञानता से लोग पहले इसको भीम का मंदिर कहते थे, एवं भीम अग्यारस के दिन नवांगी पूजा होती थी। उसके बाद लोगों का भ्रम दूर होने पर अब दादा की वर्षगांठ के दिन नवांगी पूजा व पक्षाल होता है। चेतन ! **'नमो जिणाणं'** कह कर आगे बढें।

चेतन ! इस स्थान से विमलवसही दादा की टूंक के सभी मंदिरों का नैसर्गिक दर्शन हो रहा है। जिन मंदिरो को देखकर क्षणभर विचार आ जाता है कि भक्ति व श्रद्धा मनुष्य को दैविक बल देती है, जिसके कारण ऐसेसुंदर मंदिर पर्वत के शिखर पर निर्मित हुए हैं।

श्री शांतिनाथजी

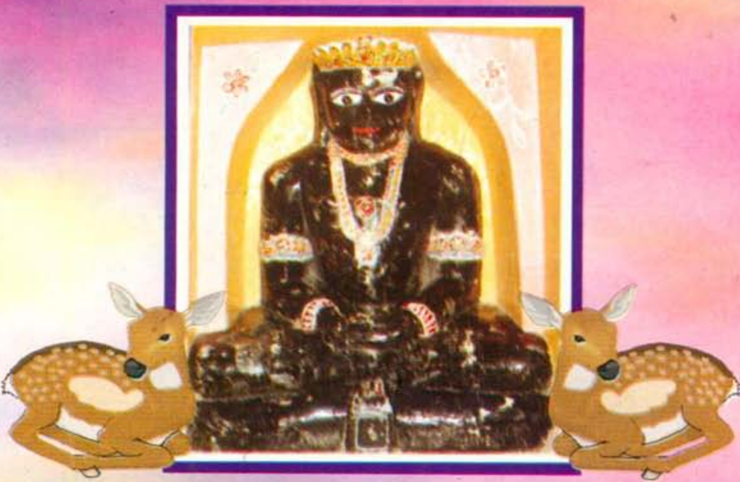

चेतन ! उसके बाद तनिक ऊपर चढ़ने पर शान्तिनाथ भगवान की श्याम प्रतिमा है। लोग इसे 'रत्न के लिए रुष्ट माणेकबाई' कहते हैं, परन्तु यह सही नहीं है। हम '**नमो जिणाणं**' कहकर आगे बढ़ें।

चौथी प्रेमाभाई मोदी की टूँक

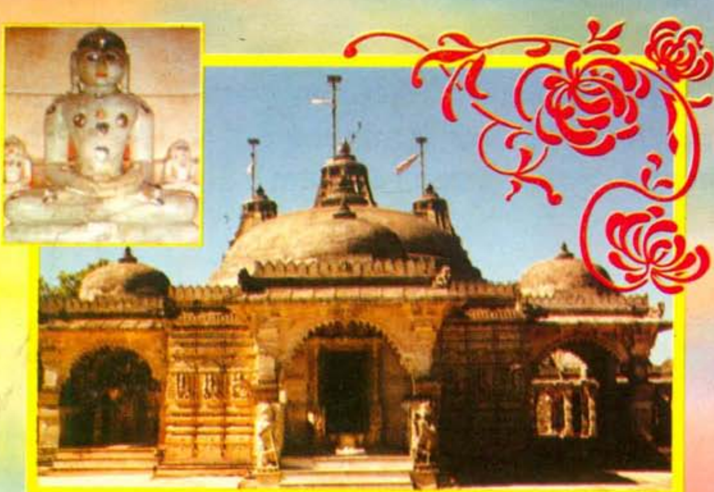

चेतन ! तत्पश्चात् चौथी प्रेमाभाई मोदी की टूंक आती है, उसमें मूलनायकजी श्री ऋषभदेव भगवान हैं। **'नमो जिणाणं'** कहें। अहमदाबाद निवासी सेठ मोदी प्रेमचन्द लवजी ने इस टूंक का निर्माण करवाया, अतः इसे मोदी की टूंक भी कहते हैं। इसकी प्रतिष्ठा सं. १८३७ में महा सुद ११ को हुई।

चेतन ! अहमदाबाद के धनाढ्य मोदी प्रेमचंद ने शत्रुंजय की यात्रा हेतु बडा भारी संघ निकाला था। तीर्थ यात्रा करने के बाद उनकी इच्छा यहाँ पर मंदिर बनाने की हुई, और इस टूंक का निर्माण करवाया। इस शेठ ने अगणित दौलत धर्म कार्य में खर्च की थी। कर्नल टॉड साहब ने अपने पश्चिम भारत के प्रवास के वर्णन में लिखा है कि ''मोदी प्रेमचंद की दौलत का कोई पार नहीं था। उसकी कीर्ति ने संप्रति जैसे प्रतापी व उदार राजा की कीर्ति को भी ढ़क दी थी।

उनकी सार्वजनिक व धार्मिक सखावतों (दान) का प्रवाह भी चालू था. उससे खुश होकर सरकार ने उनको 'राव बहादूर' की उपाधि दी। बम्बई की विधानसभा की स्थापना होने पर पहले से ही उनको प्रतिनिधि (M.L.A.) का स्थान दिया गया था।

चेतन ! गुंबज में सुंदर दो दृश्य हैं। प्रथम दृश्य में दशार्ण भद्र राजा अहंकार में सोचने लगा कि मेरे जैसे ठाठ - बाट से आज तक प्रभु को कोई भी वंदन करने नहीं गया होगा। अतः वह बडे ठाठ से प्रभु महावीर को वंदन करने जाता है। द्वितीय दृश्य में उसके गर्व को चकनाचूर करने हेतु उससे बहुत बढा-चढा ठाठ-बांट से इन्द्र द्वारा प्रभु को वंदन करने जाने का दृश्य बताया गया है, जिससे दशार्ण भद्र का अहंकार उतर जाता है और वह वीर प्रभु के पास चारित्र ग्रहण करता है। इन्द्र उनके चरणों में वंदना करता है।

उसमें बिराजमान भगवान की प्रतिमाएँ अरबी समुद्र में से खारवा लोगों के पास से मिली हुई है। गंभारे के बाहर आबू जैसी नक्काशी वाले सासू बहु के दो गोखले हैं। उसमें पार्श्वनाथ जी की प्रतिमा है।

पार्श्वनाथ जी के कलात्मक गोख

इस टूँक में खारे पानी से निर्माण किया हुआ सहस्रफणा पार्श्वनाथ का भव्य जिनालय है। हम 'नमो जिणाणं' कहें।

तीन पुतलियों का मूक उपदेश

छत में एक कथानक उत्कीर्ण है, जिसमें तीन चित्र पाषाण में उत्कीर्ण करके बताया गया है कि बिचारी पुत्र-वधू को कोई पता नहीं था, सास ने क्रोध से उसका दोष खोज निकाला, पडोसन ने उसमें मिथ्या साथ दिया, पुत्र-वधू क्रोधित हो गई और आग जैसे जलते मन से उसने आह निकाली, जिससे (१) सास को क्रोध के कारण साँप ने डसा, (२) पडोसन को मिथ्या साथ देने के कारण बिच्छू ने डंक मारा और (३) पुत्रवधू ने आर्त्तध्यान किया, इसलिए उसे बन्दर ने काटा। ये ३ पुतलियाँ मूक संदेश दे रही हैं कि इस पापमय संसार में रहकर (१) क्रोध नहीं करना चाहिए, (२)गलत साक्षी नहीं देनी और (३) आर्तध्यान नहीं करना चाहिए।

चेतन ! यह चित्र देख कर तू इन तीन कामों मे से एक भी काम मत करना।

पाँचवी हेमाभाई की टूंक

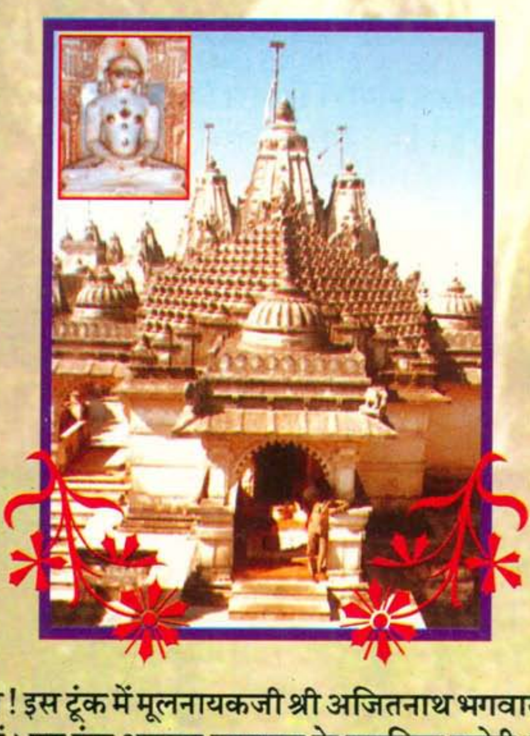

चेतन ! इस टूंक में मूलनायकजी श्री अजितनाथ भगवान हैं। हम 'नमो जिणाणं' कहें। यह टूंक अकबर बादशाह के सुप्रसिद्ध झवेरी अहमदाबाद के नगरशेठ शांतिदासके पौत्र अहमदाबाद निवासी सेठ हेमाभाई ने वि. संवत् १८८२ में बनवाई थी व वि. सं. १८८६ में महा सुद ५ को इस टूँक की प्रतिष्ठा कराई थी।

छट्ठी उजमफई की टूँक

चेतन ! असंख्यात द्वीप समुद्रों की विशालतावाले जैन भूगोल के अनुसार आठवाँ द्वीप नंदीश्वर द्वीप कहलाता है । इसकी महिमा बहुत है । जिनेश्वर प्रभु के कल्याणकों का महोत्सव करके लौटते समय देवता नंदीश्वर द्वीप पर अट्ठाई महोत्सव मना कर स्वस्थान जाते हैं। ऐसे उस नंदीश्वर द्वीप की रचना की प्रतिकृति रूप इस टूंक का निर्माण किया गया है। यह टूँक मनोरम व आकर्षक है । नंदीश्वर द्वीप में चारों दिशा में १३-१३ पर्वत हैं। अतः ५२ पर्वतों पर चौमुखजी भगवान तथा बीच में जंबुद्वीप के मेरु पर्वत पर चौमुखजी भगवान बिराजित किए हुए हैं । उसी प्रकार इस टूंक में भी श्री नंदीश्वर द्वीप की रचना है। इस टूंक का निर्माण करवाकर अहमदाबाद निवासी सेठ प्रेमचन्द भाई की फूफी (बुआ) उजमबाई ने विक्रम संवत् १८९३ वैशाख सुद १३ को प्रतिष्ठा कराई थी। अन्य ग्रन्थों में ऐसा बताया है कि नगर सेठ प्रेमाभाई की बहन का नाम उजम बहन था। नगर शेठ की बहन होने से शेठ के पुत्र उन्हें फई (फूफी) कहते थे। इसी कारण से जन समुदाय भी उन्हें उजम फई (बुआ) के नाम से पहचानता था। शादी के वक्त ५०० बैल गाडी

भर जाय, उतनी पहिरावनी दिखाई। तब भी बहन को संतोष नहीं हुआ। भाई के द्वारा कारण पूछने पर बहन ने कहा कि "शत्रुंजय पर जिनालय निर्माण कराओ, तो मुझे संतोष होगा।" बहन के संतोषार्थ भाई ने उदारता से यह टूँक बनवाई और "उजमफई की टूंक" ऐसा नामांकन किया। 'नमो जिणाणं' कहकर आगे की टूंक चलें।

सातवी साकरवसी टूंक

चेतन ! अहमदाबाद निवासी सेठ साकरचन्द प्रेमचन्द ने विक्रम संवत् १८९६ महा सुद १० को इस टूंक का निर्माण करवा कर प्रतिष्ठा कराई है। मूलनायकजी श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथजी की पंच धातु की मनोहर प्रतिमाजी हैं। 'नमो जिणाणं' कहें।

आठवी छीपावसी टूंक

अजितशांति देरी

चेतन! 'साकरवसी' में से निकल कर 'छीपावसी टूंक' में हम प्रविष्ट होते हैं, तब दाहिनी ओर अजित-शांति की दो देहरियाँ हैं, 'नमो जिणाणं' पहले ये श्री अजितनाथजी एवं श्री शान्तिनाथजी की आमने-सामने दो देहरियां थी। श्री नेमिनाथ भगवान के शासन में मतान्तर से महावीर स्वामी के शासन में हुए नंदिषेण मुनि ने अजित-शान्ति स्तवन की रचना की, जिसे बोलने पर वे दोनों देहरियाँ पास-पास आ गई। यह घटना कुछ लोग यहाँ मानते हैं, तो कुछ लोग छः कोस की यात्रा के मार्ग में मानते हैं।

श्री नेमिनाथ भग. के शासन के आ. नंदिषेण सूरिश्वरजी म. ने नेमिनाथ भग. के पास दीक्षा ली थी, भगवान के वचन से सिद्धगिरि पर पधारे थे, और ७ हजार मुनियों के साथ अनशन कर स्व-आयुष्य के पूर्ण होने पर यहाँ मोक्ष सिधारे।

छीपावसी टूंक में श्री आदीश्वर भगवान

चेतन ! तत्पश्चात् हम छीपावसी टूंक के मंदिर में जायें, जो वि. संवत् १७९१ अषाढ सुद १० को छीपा यानी भावसार जैनों द्वारा प्रतिष्ठा करवाई और उसमें श्री ऋषभदेव, श्री श्रेयांसनाथ, श्री नेमिनाथ आदि भगवान हैं। **'नमो जिणाणं'** कहें। प्राचीन तीर्थमालाओं में ऐसा भी उल्लेख मिलता है कि यह टूँक पहले निर्मित थी, और बाद में भावसार जैनों ने इसकी पुनः प्रतिष्ठा करवाई। लेकिन मंदिर चौदहवीँ सदी का है।

छीपावसी टूंक में एक गुम्बज का कलात्मक दृश्य

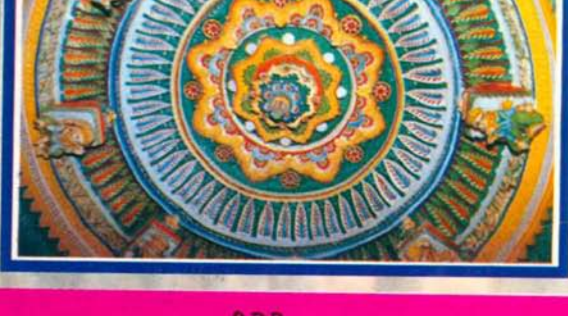

पांडवो की प्रतिमाएँ

'भव दव ताप लही आया, पाण्डव परिकर मुनिराया।'

चेतन ! टूँक की दाहिनी ओर पाँच पाण्डवों का मन्दिर है, जिसमें पाँच पाण्डव, कुन्ती तथा द्रौपदी की प्रतिमाएँ हैं। 'नमो सिद्धाणं...'

चेतन ! पांडवो ने राज्य करते हुए सिद्धगिरिराज का १२ वाँ उद्धार करवाया। बाद में जहाँ कनकमणी कांगरा चमकारा करते थे, ऐसी द्वारिका नगरी का दहन और कौसम्बी अटवी में श्री कृष्ण की मृत्यु के निमित्त से वैराग्य भाव में आकर उन्होंने दीक्षा ली और गिरनार की ओर विहार में विचरण करते हुए ऐसा संकल्प किया कि नेमिनाथ प्रभु को वंदन करके तप का पारणा करेंगे। परन्तु बीच में समाचार मिले कि नेमिनाथ प्रभु का निर्वाण हो गया है। अतः पारणा किये बिना ही सिद्धगिरि पर २० करोड मुनियों के साथ आकर अनशन किया। यहां पर आसोज सुद १५ को सभी मोक्ष गये। उनकी स्मृति में यह मन्दिर पेथड़शाह ने बनाया था। पुनः प्रतिष्ठा सं. १७८८ महा सुद ६ को दलीचंद भाई कीकाभाई ने करवाई।

चेतन ! यह स्थान प्राचीन है। पहले यहाँ होकर 'दादा के जिनालय' में जा सकते थे। इस मन्दिर के पीछे ही सहस्रकूट का मन्दिर है। इसकी प्रतिष्ठा डायाभाई लालभाई ने सं. १८६० वै. सुद ५ को करवाई। इसकी दिवार पर पुरुषाकार १४ राजलोक व दूसरी ओर समवसरण और सिद्धचक्रजी की रचना खास दर्शनीय है।

कुंती और द्रौपदी

साध्वीजी कुन्ती भी मोक्ष गई हैं 'नमो सिद्धाणं' और द्रौपदी देवलोक में गई है। अतः इस मंदिर के गंभारे में दोनों ओर इन दोनों की एक-एक मूर्ति स्थापन की गई है।

नौवी सवा सोमा की ट्रॅंक

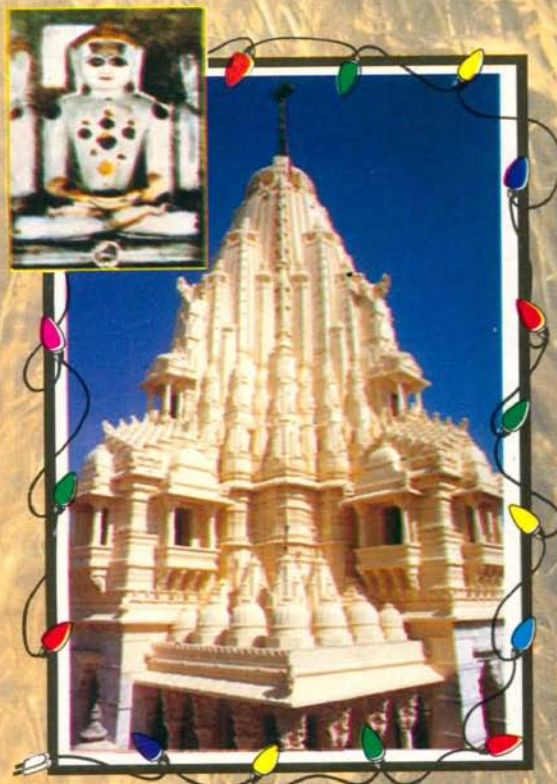

चेतन ! चौमुखजी का मुख्य मंदिर अर्थात् मानो शत्रुंजय की लेहराती धर्म ध्वजा। वह ध्वजा शत्रुंजय की कीर्ति को दिग्दिगंत तक फैलाती ही रहती है। दूर-दूर से दर्शन दिलाने वाला शत्रुंजय का कोई मंदिर हो, तो एक मात्र यही मंदिर है...। वि. संवत् १६७५ वैशाख सुद १३ को इसकी प्रतिष्ठा हुई थी। इस टूंक के दो विभाग हैं -

(१) भीतर के विभाग को चौमुखजी की टूंक कहते हैं। गिरिराज पर यह सर्वाधिक ऊँची टूंक है। शिखर ९६ फीट ऊँचा है व समुद्र की सतह से १९७७ फुट ऊँचाई पर है। चालीस-पचास कि. मी. दूर-दूर के प्रदेशों से यह ट्रॅंक दृष्टिगोचर होती है। इस चौमुखजी जिनालय् में मूलनायक श्री आदीश्वर भगवान हैं, और तीनों ओर भी श्री आदीश्वर भगवान की मनोहर

प्रतिमाएँ स्थापित की हुई हैं। उन्हें '**नमो जिणाणं**' कहकर उनके दर्शन करें। वंथली निवासी सवचंदभाई ने आपत्ति में आने के कारण बिना किसी जान-पहचान के अहमदाबाद के एक बड़े व्यवसायी श्री सोमचन्दभाई पर हुण्डी लिख दी। उक्त हुण्डी में उन्होंने ऐसे कुछ शब्द लिख दिये, जिससे लिखते-लिखते उनका हृदय भर आया और हुंडी पर आंसू की बूंदे टपक गई। हुण्डी सोमचन्द सेठ की पेढ़ी पर पहुँची। सेठ को हुण्डी पढ़ते-पढ़ते उस पर पड़ी हुई आँसू की बूँदें नजर आई तथा लिखे हुए मार्मिक दो शब्दों से लगा कि मेरा साधर्मिक आपत्ति में फँसा हुआ प्रतीत होता है। भले ही उसका मेरी पेढ़ी में खाता नहीं है, लेन-देन भी नहीं है, फिर भी उसकी प्रतिष्ठा बचाने के लिये मुझे हुण्डी की रकम चुकानी चाहिये। यह सोचकर उनके नाम पर लिखे बिना हुण्डी की रकम तुरन्त चुका दी। कालान्तर में सवचंदभाई ने अच्छा धन अर्जित कर लिया। वे रकम लेकर सोमचंद सेठ की पेढ़ी पर रकम चुकाने के लिये अहमदाबाद गये। उनका नाम-पता पूछते-पूछते वे सेठ के घर पहुँच गये। सवचंद सेठ ने उन्हें उक्त धनराशि देनी चाही। इस पर सोमचंद सेठ ने कहा, "मेरी बही में तो आपके नाम पर कोई रकम ही बाकी नहीं है, फिर मैं रकम कैसे ले सकता हूँ ? अन्त में उक्त धनराशि से इस 'सवा-सोमा की टूंक' का निर्माण हुआ। यह टूँक विक्रमादित्य के समय में भी थी। बाद में सवा सोमाजी ने वर्तमान के आकार में बदली। ऐसी 'मीराते अहमदी' पुस्तक में उल्लेख है। इस मंदिर के निर्माण कार्य हेतु ५६ हजार रुपये केवल रस्सी के खर्च हुए थे।

चेतन ! एक ग्रंथ में यह भी उल्लेख मिलता है कि पोरवाल शेठ शिवाजी और सोमाजी दो भाई थे। शिवाजी की मृत्यु के पश्चात् उनके पुत्र रूपजी ने चौमुखजी का भव्य प्रासाद बनाया। शिवाजी और सोमाजी दोनों भाइयों के नाम से व्यापार चलता था। अतः यह टूंक शिवा सोमा की टूंक भी कहलाती थी।

धन्य साधर्मिक भक्ति ! धन्य प्रभु भक्ति !

चेतन ! उस समय में ऐसे हजारों फीट की ऊंचाई पर गगन चुंबी भव्य जिन मंदिरों का निर्माण करने वाले पुण्यशालियों के पवित्र हृदय में कितनी प्रभु भक्ति, श्रद्धा तथा उदारता के भव्य और विशुद्ध झरणे बह रह होंगे ! और

स्व पर के कल्याण की उनको कितनी चिंता होगी, उसकी प्रतीति ऊंचे पहाड की ऊंची-ऊंची टेकरीओं पर उत्तुंग मंदिरों की हारमालाओं का सर्जन किया, उससे होती है। वास्तव में महाभाग्यवान ये आत्माएँ जीवन को जी कर, संपत्तियों का सदुपयोग करके संसार में अमर बन गईं। धन्य श्रद्धा, धन्य भक्ति व धन्य है उनकी धर्म भावना को ... !!!

२५०० चरण पादुकाएँ

चेतन! इसी टूँक में पुंडरिक स्वामी की देहरी के बाद आगे चलने पर २५०० चरण पादुकाओं की देहरी है। उसमें भगवान नेमिनाथ व उनके साथ दीक्षित १००० मुनियों की चरण पादुकाएँ, थावच्चा पुत्र और उनके शिष्यों की १००० चरण पादुकाएँ और शैलकाचार्य तथा उनके शिष्यों की ५०० चरण पादुकाएँ कुल मिलाकर २५०३ चरण पादुकाएँ है। **'नमो सिद्धाणं'** कह कर उनके दर्शन करें।

(२) बाहर का भाग 'खरतर वसही' कहलाता है। केशवजी की टूँक' एवं अन्य जिनालय हैं।

मरुदेवा का मंदिर

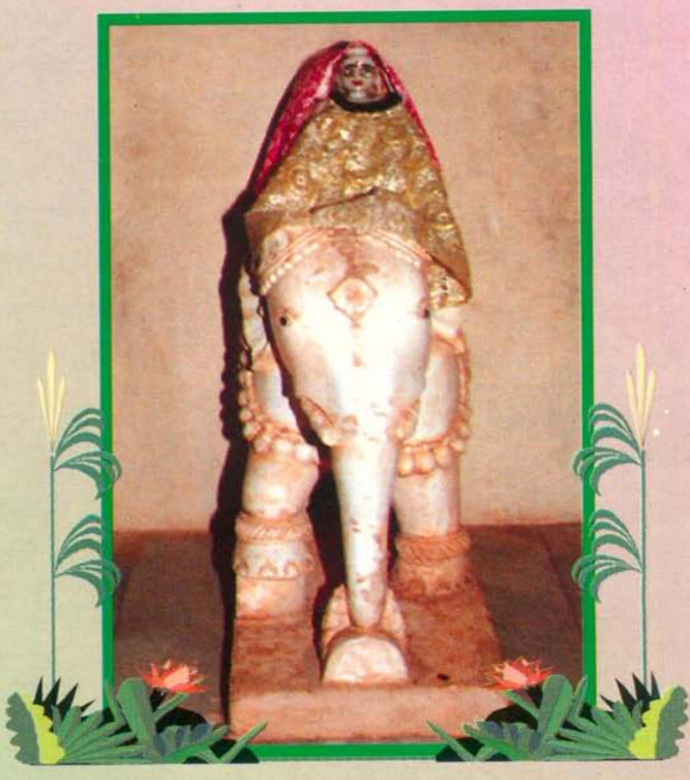

चेतन ! मरुदेवा माता का यह ऐतिहासिक मंदिर है। इसमें मरूदेवा माता हाथी पर बैठे हुए हैं, मरूदेवा माता हाथी पर केवलज्ञान पाकर मोक्ष में गई, ऐसा भाव यह दृश्य बताता है। चेतन ! **'नमो सिद्धाण'** कह कर आगे बढें। यह मंदिर महत्व का होने से वैशाख सुद १५ को इसकी वर्षगांठ मनाई जाती है।

नरशी केशवजी की टूँक

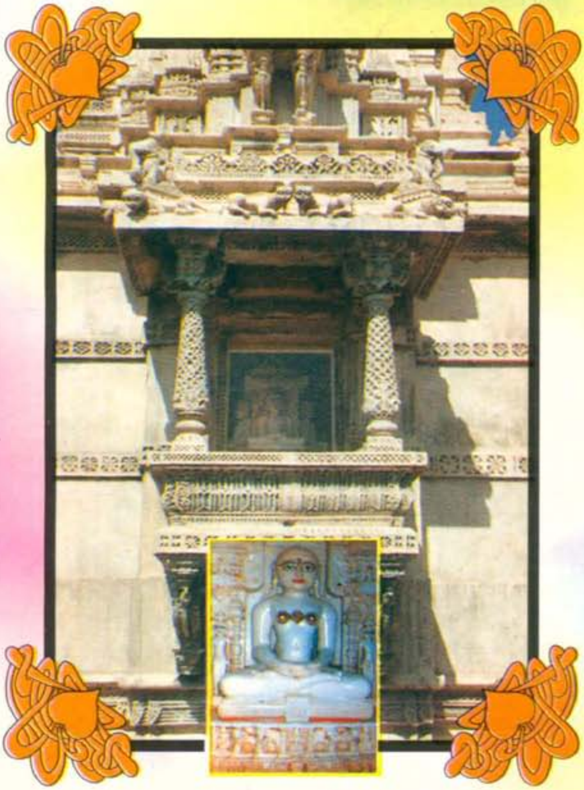

चेतन ! उसके बाद नरशी केशवजी टूँक में जाया जाता है। नरसी केशवजी की टूँक में मूलनायकजी श्री अभिनन्दन स्वामी भगवान हैं। 'नमो जिणाणं' इसकी प्रतिष्ठा सं. १९२१ में हुई थी। तत्पश्चात् बाहर निकलने पर 'अंगारशा पीर की कब्र' आती है।

अंगारशा पीर

गुरुदेव ! यहाँ अंगारशा पीर को क्यों स्थापित किया है ?

चेतन ! इसका रहस्य सुन। मुसलमान बादशाहों की सौराष्ट्र तरफ की चढाईयाँ शत्रुंजय पर न आ जाये, इसलिए दीर्घदृष्टि से ग्रह कब्र निर्मित की गई होगी। इस प्रकार वास्तव में तो तीर्थ की रक्षा के लिए कब्र बनाई हो, ऐसा लगता है। पाटन के समीप कुणघेर गॉव में भाणसी सोनी नामक एक दशा श्रीमाली श्रावक रहता था। उसकी पत्नी का नाम कोडाय था। पति-पत्नी दोनों देव-दर्शन, धर्म आदि करते थे। कोडाय अत्यन्त रूपवती थी। पाटन के सूबेदार शेरशाह चिकथा ने उसके रूप लावण्य का समाचार सुनकर उसका अपहरण कर लिया। सूबेदार ने उसे एक कमरे में बन्द कर दी। वह बन्द

कमरे के भीतर दर्शन आदि धर्माराधना करती थी। किसी खुशामदखोर ने सूबेदार के कान भरे कि कोडाय तो आप पर जादू-टोना करती है।

एक दिन सूबेदार अचानक कमरे का द्वार खोलकर कमरे के भीतर आया और उसने कोडाय को पूछा कि तू क्या करती है ? कोडाय ने उत्तर दिया, ''मैं भगवान ऋषभदेव को वन्दन करती हूँ।''

सूबेदार ने पूछा, ''कहाँ है वह भगवान ?''

''पालीताना में।''

सूबेदार को धुन लगी कि चलो अभी ही पालीताना चलें। सुबेदार, कोडाय, कुछ रक्षक, रसाला तथा ओलिया अंगारशा पीर सब वहाँ पालीताना पहुँचे। वहाँ सूबेदार दादा आदिनाथ के दर्शन करके गद्‌गद् हो गया। उसने स्वर्ण-मुद्राओं का थाल मंगवाया। अंगारशा यह सहन नहीं कर सका। अतः उसने दादा ऋषभदेव पर शस्त्र से प्रहार किया। प्रहार तो उसने कर दिया, परन्तु तत्पश्चात् वह अत्यन्त घबराया और शूल से भयंकर पीड़ित हो गया। भगवान की प्रतिमा में से विषैले डंख वाले अत्यधिक भौंरे निकले और उसके पीछे पड़ गये। वह वहाँ से दुम दबा कर भागा और फिसल कर ऐसा लुढ़का कि तुरन्त उसकी मृत्यु हो गई। वह झंड़ बन गया। यह देख कर सूबेदार, कोडाय आदि अवाक् रह गये। वह क्षमा माँगने लगा। इतने में कपर्दी यक्ष ने उस झंड़ को झिड़का कि अभी भगवान पर शस्त्र से आक्रमण करने वाला तू ही था न ? वह कहने लगा कि 'अब मेरे पाप का प्रायश्चित करने दो। मुसलमानों के आक्रमणों के समय ढाल बन कर मैं तीर्थ की रक्षा करुँगा। कपर्दी यक्ष की अनुमति प्राप्त करके उसने अपना स्थान बना लिया, जो 'अंगारशापीर की दरगाह' कहलाती है। आजकल जब संघ यहां पर आते हैं, तब संघपति तीर्थ के रक्षक के रूप में उसे चादर अर्पण करके उसका उचित सत्कार करते हैं।

चेतन ! तत्पश्चात् परकोटे के बाहर निकल कर हम सीढ़ियां उतरने लगें, तब बायीं ओर भीलनी की चरण-पादुकाएँ हैं। भीलनी ने यहां साधना की थी। अब फुर्ती से जयणापूर्वक नीचे उतर कर हनुमान धारा के नीचे तलहटी तक हम आ गये। गिरिराज को स्पर्श करके हम मन में ऐसी भावना लायें कि पुनः हमारी ऐसी भावयात्रा हो और हमारे कर्मों का क्षय हो। 'हे देवाधिदेव ! हृदय-वीणा को झंकृत करने वाला तेरा दर्शन मुझे शीघ्रातिशीघ्र हो।'

इस प्रकार गिरिराज की भावयात्रा परिपूर्ण हुई।

चेतन का संकल्प

गुरूदेव! 'मैं एक दृढ़ निश्चय करता हूँ कि घर जाने के पश्चात् नित्य दिन में किसी भी समय एक बार तो 'श्री शत्रुंजयादि चार महातीर्थ दिशादर्शक यंत्र' (Direction of Shatrunjay) कुतुबनुमा के आधार पर दिशा ज्ञात करके सिद्धगिरिराज के सम्मुख रह कर भावपूर्वक वन्दना करुँगा और यदि सम्भव हुआ, तो सोते समय उस दिशा की ओर पैर नहीं करुँगा।

भाता - खाता (अल्पाहार-विभाग)

चेतन! यात्रा पूर्ण होने के पश्चात् आगम मन्दिर के समीप भाता-विभाग है , जहाँ यात्रियों को भाता (अल्पाहार) प्रदान किया जाता है।

यह है पावन भूमि, यहाँ बार बार आना;
आदिनाथ के चरणो में, आकर के झुक जाना।

घेटीपाग की यात्रा

घेटी बारी

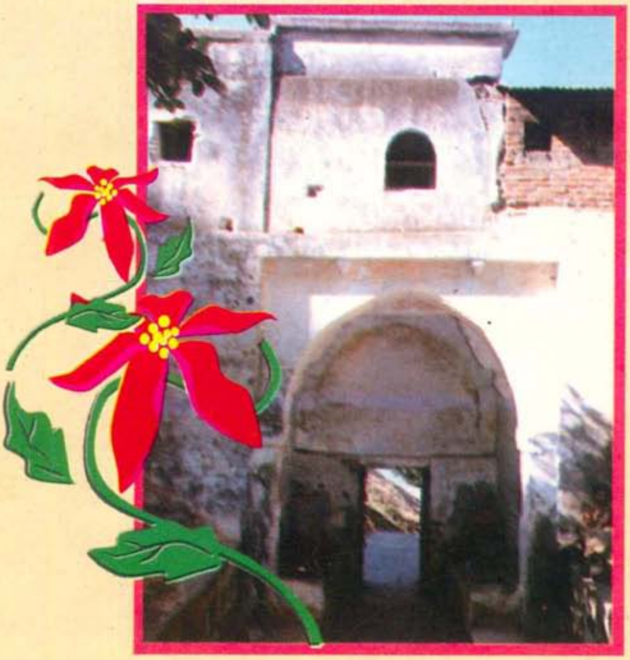

चेतन ! पाग अर्थात् गिरिराज पर चढने का रास्ता, घेटी नामक गाँव पर से यह घेटी पाग कहलाती है। किसी समय तेरी दो यात्रा करने की इच्छा हो जाये, तो 'घेटी पाग' की यात्रा कर लेना। उससे दो यात्रा करने का लाभ प्राप्त होता है। उक्त 'घेटी पाग की यात्रा' निम्नानुसार करनी चाहिये :-

चेतन ! सगाल पोल से बाहर निकल कर कुन्तासर चौक में आकर बायीं ओर घेटी पाग की यात्रा करने चलें। तनिक आगे जाने पर 'कुन्तासर की खिड़की' (घेटी बारी) आयेगी, जिसमें से बाहर निकल कर नीचे उतरते समय लगभग आधे मार्ग पर बायीं ओर एक देहरी और प्याऊ आती है।

चौबीश तीर्थंकरों की देहरी

चेतन ! इस देहरी में चौबीश तीर्थंकरों की प्राचीन चरण पादुकाएँ हैं। यह देहरी बहुत लोगों के ख्याल में भी नहीं होगी। यहाँ **'नमो जिणाणं'** कह कर नीचे उतरें। बहुत नीचे उतरने पर घेटी पाग की देहरी आती है।

घेटी पाग की देहरी

चेतन ! यह सामने घेटी पाग की देहरी आई, जहां से श्री आदीश्वर भगवान पूर्व नवाणु बार इस गिरिराज पर चढे थे।इसमें ऋषभदेव भगवान की चरण-पादुकाएँ हैं। महामात्य उदयन का ज्येष्ठ पुत्र दंडनायक आंबड ने सं. १२१३ में शत्रुंजय के बडे जीर्णोद्धार के प्रसंग पर इस पाग का निर्माण करवाया था। यहाँ हम चैत्यवन्दन कर लें। चेतन ! उसके नीचे आदपुर गाँव हैं; वहाँ निन्नाणवे इंच की भव्य श्री आदीश्वर भगवान की प्रतिमा का जिनालय है। '**नमो जिणाणं... !**

दो यात्रा करने वालों को आदपुर गाँव में जाना अनिवार्य नहीं है। घेटी पाग की चरण पादुकाओं के दर्शन करके वापस पीछे लौटकर आस-पास 'सिद्धाचल शणगार टूंक' आदि अनेक जिनालयों के दर्शन करें। **'नमो जिणाणं....,** **नमो जिणाणं.... !**

चेतन ! सिद्धाचल शणगार मंदिर में २२०० वर्ष प्राचीन ऋषभदेवजी की प्रतिमा है। **'नमो जिणाणं'** कह कर दर्शन करके हम ऊपर चढ़ें। ऊपर चढ़कर दादा की टूंक में शान्तिनाथ भगवान आदि को चार चैत्यवन्दन पूर्ववत् करें, तब दो यात्रा पूर्ण हुई कही जाती हैं।

छः कोस (गाउ) की प्रदक्षिणा की भावयात्रा

चेतन ! नित्य तो पूर्व वर्णित तरीके से ही तुझे आदीश्वर दादाजी की 'भाव-यात्रा' करनी है ; परन्तु फाल्गुन शुक्ला १३ के दिन जब तू भावयात्रा करे, तब छः कोस (छः गाउ) की भावयात्रा भी अवश्य करना ।

चेतन ! छ : कोस की यात्रा के लिए रामपोल से बाहर निकल कर हम दाहिनी ओर के मार्ग से प्रस्थान करें ।

देवकी के छः पुत्र

चेतन ! तनिक आगे चलने पर दाहिनी ओर ऊँची एक देहरी में छः प्रतिमाजी दृष्टिगोचर होती हैं । अब मैं उनका संक्षिप्त इतिहास तुझे बताता

हूँ। वसुदेव की पत्नी देवकी ने कृष्णजी से पहले क्रमशः छः पुत्रों को जन्म दिया था, परन्तु जन्म होते ही हरिणैगमेषी देव ने उन्हें नागदत्त की पत्नी सुलसा के पास रख दिया था। वहाँ पर वयस्क होकर भगवान श्री नेमिनाथ से वे दीक्षित हुए और साधना करने लगे।

तत्पश्चात् वे छः मुनि केवलज्ञान प्राप्त करके इस सिद्धगिरिराज पर मोक्ष सिधारें। अतः उन्हें **'नमो सिद्धाणं'**... कहें। निन्नाणवे प्रकार की पूजा में उल्लेख है कि -

''देवकी षट्नंदन इहां सिध्या, आत्म उज्ज्वल कीधा रे, ए तीरथ तारु।''

उल्का - जल

चेतन ! यहाँ से उतरते समय ऊबड़-खाबड़ मार्ग आता रहता है। तत्पश्चात् 'उल्का-जल' नामक पोकल-मार्ग आता है। दादा का न्हवण (पक्षाल) भूमि में होकर यहाँ आता था, ऐसी मान्यता है। आजकल तो बारोट लोग इसी दिन न्हवण लाकर दाहिनी ओर के खड्डे में डाल देते हैं। यहाँ बायीं ओर एक लघु देहरी में श्री आदिनाथ भगवान की चरण पादुकाएँ हैं।

चेतन ! यहाँ चैत्यवन्दन कर लें। इधर श्री आदीश्वर प्रभु का चैत्यवंदन करना चाहिए।

श्री अजितनाथ एवं श्री शान्तिनाथ की देहरियाँ

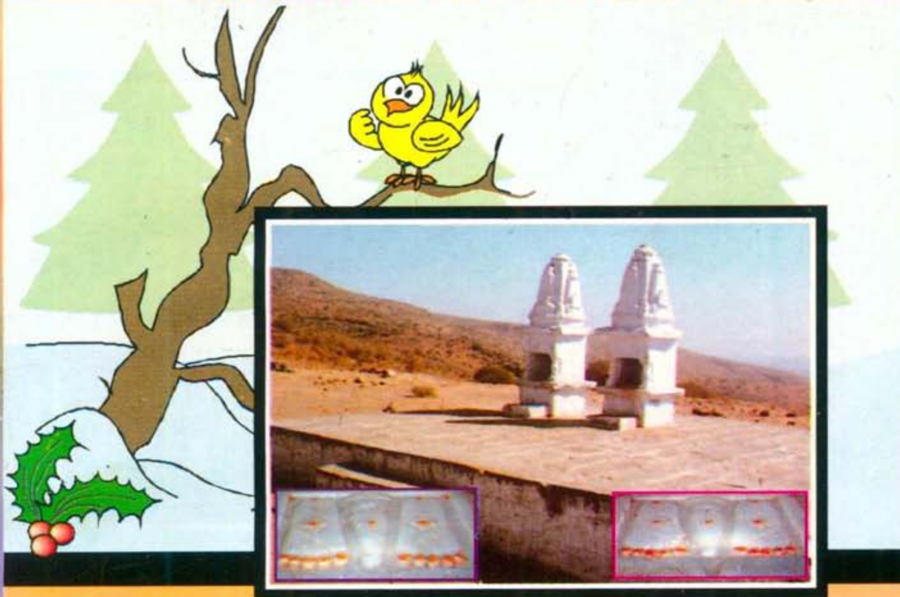

चेतन ! इसके बाद आगे चलने पर बायीं ओर दो देहरियाँ आती हैं। वे अजितशांति की देहरी कहलाती है। **'नमो जिणाणं'** कहें। श्री अजितनाथ तथा श्री शान्तिनाथ ने सिद्धगिरिराज पर वर्षावास किया था। उसकी स्मृति में यहाँ आमने-सामने दो देहरियों का निर्माण कराया था। नेमिनाथ भगवान के शासन में मतान्तर से भगवान महावीर के शासन में हो चुके नंदीषेण मुनि यहाँ आकर चैत्यवन्दन करने लगे। देहरियाँ आमने-सामने होने से पीठ होने लगी। अत: उन्होंने यहां 'अजित शान्ति' नामक चमत्कारी मंत्रयुक्त स्तवन की रचना की और उक्त स्तवन बोलते ही दोनों देहरियाँ अपने आप पास-पास में आ गई। नौ टूंकों में भी ऐसी ही घटना का उल्लेख है। तत्व केवली गम्य है। एवं शत्रुंजय कल्पवृत्ति के अनुसार नेमिनाथ भगवान के शासन में हुए नंदिषेण सूरीश्वरजी म. नेमिनाथ भग. के वचन से इस सिद्धगिरि पर पधारे। उन्होंने अजित-शांति स्तवन बनाया। दोनों देहरियाँ पास-पास में हो गईं, उसके बाद यहाँ शत्रुंजय का माहात्म्य भव्य जीवों को बताकर ७ हजार मुनियों के साथ अनशन कर केवल ज्ञान प्राप्त कर स्व-स्व आयुष्य के क्षय होने पर सिद्धाचल पर मोक्ष सिधारे।

चिल्लण - (चन्दन) - तालाब

चेतन ! अजित-शांति की देहरी के आगे पास में ही चिल्लण तालाब है। श्री ऋषभदेव भगवान के शासन में चिल्लण मुनि और मतान्तर से भगवान महावीर के शासन में श्री सुधर्मास्वामी गणधर के शिष्य चिल्लण मुनि संघ के साथ सिद्धगिरिराज पर आये थे। हर्ष के आवेश में लोग भिन्न-भिन्न मार्गों से चढ़ने लगे। संघ तृषातुर हो गया। चिल्लण मुनिवर की लब्धि से लबालब भरा हुआ एक विशाल तालाब तैयार हो गया। लोगों ने जल से अपनी प्यास बुझाई, जिससे इस तालाब का नाम चिल्लण तालाब पड़ गया। अपभ्रंश हो जाने के कारण अब इसे 'चंदन तालाब' (चंदन तलावडी) कहा जाता है। मुनिश्री ने यहीं पर इरियावहि-प्रतिक्रमण करते हुए केवलज्ञान पाया एवं मोक्ष में गये। यहाँ पर भरत-चक्रवर्ती ने चिल्लण नामक विहार बनाया था। वह कालान्तर में नष्ट हो गया है।

रत्न की प्रतिमा

ऋषभ जिणंद की पडिमा सोहनी, भरत बनाई मानो मंतर मोहनी... ।

चेतन ! चिल्लण तालाब से कुछ दूरी पर कोठा फल के वृक्ष के समीप अलक्ष नामक देवल के प्रदेश में भरत चक्रवर्ती के द्वारा भराई गई ५०० धनुष की प्रतिमा सगर चक्रवर्ती ने गुफा में स्थापित की। अट्ठम के तप से प्रसन्न होकर कपर्दी यक्ष जिसे दर्शन कराता है, वह तीसरे भव में मोक्ष जाता है। श्री शत्रुंजय कल्पवृत्ति ग्रंथ की पूर्ति के अनुसार पांचवे आरे में नंदराजा, वीर राजा और आचार्य श्री देवसुंदरसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्य देवमंगल नामक पंडित ने (पंन्यासजी ने) जब अट्ठम तप किया, तब कवड यक्ष ने प्रसन्न होकर उनको रत्न-प्रतिमा के दर्शन कराये थे।

चेतन ! अपन भाव से मन में '**नमो जिणाणं**' कहे।

चेतन ! चंदन तलावडी के पास में सिद्धशिला आती है।

सिद्धशिला

चेतन ! चिल्लण तालाब के बिल्कुल पास में सिद्धशिला है। यद्यपि इस गिरिराज के प्रत्येक कंकड़-कंकड़ पर अनन्त आत्माएँ सिद्ध हुई हैं, फिर भी इस सिद्धशिला पर सिद्धगिरि के अन्य स्थानों की अपेक्षा अधिक आत्माएँ सिद्ध हुई हैं। इस कारण से इस शिला को 'सिद्धशिला' कहा जाता है। यहाँ पर मनुष्य संथारा (शयन) मुद्रा में १०८, २७, २१ और १२ लोगस्स का कायोत्सर्ग करते हैं, जिससे पूर्व में अनशन करने वाले मुनियों की स्मृति होती है।

चेतन ! हम भी यहाँ पर कायोत्सर्ग करें, 'अप्पाणं वोसिरामि...'

भाड़वा का पर्वत

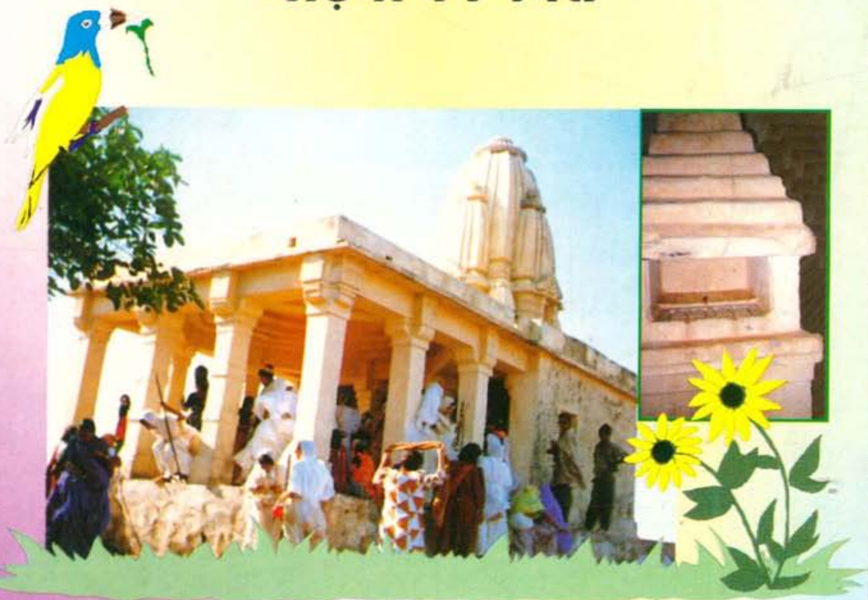

(भाड़वा पर्वत पर शाम्ब-प्रद्युम्न की देहरी)

चेतन ! यहाँ से आगे जाने पर एक ऊँचा पर्वत दृष्टिगोचर होता है, जो 'भाड़वा का पर्वत' कहलाता है। इस पर्वत पर फाल्गुन शुक्ला त्रयोदशी के दिन श्री कृष्णजी के पुत्र शाम्ब एवं प्रद्युम्न के साथ साढे आठ करोड़ आत्माएँ मोक्ष गईं थी । उनकी यादगार में यहाँ एक देहरी व उनकी चरण पादुकाएँ एवं श्री आदीश्वर भगवान की चरण पादुकाएँ स्थापन की हैं ।

एक ही दिन में साढे आठ करोड को मुक्ति दिलाने वाले भाड़वा पर्वत का स्पर्श करते हुए हमारे हृदय के भाव आसमान पर चढ़ जाने चाहिए। ऐसे वीर्योल्लास से बहुत से कर्मों की निर्जरा होती है ।

चेतन ! हम यहाँ चैत्यवन्दन कर लें । कई लोग फाल्गुन शुक्ला १३ के दिन इस पर्वत पर चढ़े बिना ही नीचे उतर जाते हैं और 'हीरा घोघा जाकर आया' ऐसी दशा होती है । उनकी यात्रा दही-पराँठे की अथवा श्रीखण्ड-पुड़ी की सी हो जाती है । अतः फाल्गुन शुक्ला १३ के दिन शाम्ब प्रद्युम्न को **'नमो सिद्धाणं'** अवश्य बोल कर वन्दन करना चाहिये तथा चैत्यवन्दन करना चाहिये । यहां पर कलि नामक एक कुंड भी है ।

सिद्धवड़

चेतन ! भाड़वा के पर्वत से धीरे-धीरे उतर कर जब हम तलहटी में पहुंचते हैं, तो वहाँ एक बरगद का वृक्ष दृष्टिगोचर होता है, जो 'सिद्धवड़' कहलाता है। यों तो कंकड़-कंकड़ पर अनन्त आत्माएँ सिद्ध हुई हैं, फिर भी अन्य स्थानों की अपेक्षा अमुक स्थान पर अधिक सिद्ध हुई हैं, जिससे वह स्थान सिद्ध के रूप में विख्यात हुआ है। 'सिद्धशिला' की तरह इस 'सिद्धवड़' के स्थान पर भी अनेक मुनिवर सिद्ध हुए हैं, इस कारण से यह 'सिद्धवड़' कहलाता है। यहाँ पर एक बडी देहरी में भगवान श्री ऋषभदेव की चरणपादुकाएँ हैं।

चेतन ! यहाँ हमें चैत्यवन्दन करना है। अब छः कोस की यात्रा यहां पूर्ण होती है।

चेतन ! उसके समीप 'आंबा वाडिया' में फाल्गुन शुक्ला १३ के दिन साधर्मिक-भक्ति की व्यवस्था पालों (तम्बूओं) में होती है।

चेतन ! तनिक ध्यान रखना। बिना ध्यान प्रमाणातीत बेमर्याद वस्तुओं से उदर मत भरना। तेरा पेट कोई जनरल डाकघर का पोस्ट-बॉक्स अथवा म्युनिसीपैलिटी की गटर नहीं है कि सब कुछ बेमर्याद चाहे कुछ डालते रहें। तनिक विवेक रखना। कल चौमासी चतुर्दशी है। अतः जिस प्रकार अपने कार्य के लिए ले जाई गई वेवाई की गाड़ी में लोग प्रमाणोपेत पैट्रोल ड़ालते हैं, उसी तरह तूं भी विवेक सहित एवं वैराग्य -भाव पूर्वक खाने की सावधानी रखना। तत्पश्चात् आदपुर होकर पालीताना आना होता है। आदपुर से तनिक चढ़ने पर घेटी-पादुकाओं के दर्शन होते हैं। यह छः कोस की भावयात्रा विस्तार पूर्वक मेरे (लेखक) द्वारा लिखित अन्य पुस्तक 'अनशन को सिद्धवड हो...' में वर्णित है।

चेतन ! उक्त पुस्तक तू पढ़ लेना।

गुरुदेव ! आज आपने मुझे बहुत ही सुंदर ढंग से जानकारी युक्त शत्रुंजय गिरिराज की भावयात्रा करवाई है। अतः आपका उपकार मै कभी नहीं भूल सकता। इस सिद्धगिरिराज पर इतने विशाल भव्य मंदिरों, अलौकिक व मनोरम प्रतिमाओं, ऐतिहासिक देहरियों व पावनकारी पादुकाओं के दर्शन हुए, यह मेरा अहोभाग्य है। वरना मेरा जन्म व्यर्थ जाता... !

जय शत्रुंजय... !

श्री सिद्धगिरिराज की यात्रा में करने के पाँच चैत्यवन्दनः-

(१) जय तलहटी पर करने का प्रथम चैत्यवन्दन

श्री शत्रुंजय सिद्धक्षेत्र, दीठे दुर्गति वारे ।
भाव धरीने जे चढ़े, तेने भव पार उतारे ।।१।।
अनन्त सिद्धनो एह ठाम, सकल तीर्थ नो राय ।
पूर्व नवाणु ऋषभदेव, ज्यां ठविया प्रभु पाय ।।२।।
सुरज कुण्ड सोहामणो, कवड यक्ष अभिराम ।
नाभिराया कुल मंडणो, जिनवर करुँ प्रणाम ।।३।।

सिद्धगिरि का स्तवन

सिद्धाचल गिरि भेट्या रे, धन्य भाग्य हमारा ।
ए गिरिवरनो महिमा मोटो, कहतां न आवे पारा ।
रायण रुख समोसर्या स्वामी, पूर्व नवाणु वारा रे ।। धन्य. १
मूलनायक श्री आदि जिनेश्वर, चौमुख प्रतिमा चारा ।
अष्ट द्रव्य सुं पूजो भावे, समकित मूल आधारा रे ।। धन्य. २
भाव-भक्ति सुं प्रभुगुण गातां, अपना जन्म सुधारा ।
यात्रा करी भविजन शुभ भावे, नरक तिर्यंच गति वारा रे ।। धन्य. ३
दूर देशान्तर थी हुं आव्यो, श्रवणे सुणी गुण तोरा ।
पतित उद्धारण बिरुद तुमारुं, ए तीरथ जग सारा रे ।। धन्य. ४
संवत् अढार त्यासी मास अषाढा, वदी आठम भोम वारा ।
प्रभुजी के चरण प्रताप के संघमें, 'खिमारतन' प्रभु प्यारा रे ।। धन्य. ५

श्री शत्रुंजय की स्तुति

श्री सिद्धाचल मंडण, ऋषभ जिणंद दयाल ।
मरुदेवा-नंदन, वन्दन करुं त्रण काल ।
ए तीरथ जाणी, पूर्व नवाणु वार ।
आदीश्वर आव्या, जाणी लाभ अपार ।।

(२)श्री शान्तिनाथ भगवान का द्वितीय चैत्यवन्दन

शान्ति जिनेश्वर सोलमा, अचिरासुत वन्दो ।
विश्वसेन कुल नभोमणी, भविजन सुख कन्दो।।१।।
मृग लंछन जिन आउखुं, लाख वरस प्रमाण ।
हत्थिणाउर नयरी धणी, प्रभुजी गुण मणि खाण ।।२।।
चालीस धनुषनी देहडीए, समचउरस संठाण ।
वदन पद्म ज्युं चंदलो, दीठे परम कल्याण ।।३।।

श्री शान्तिनाथ प्रभु का स्तवन

शान्ति जिनेश्वर साचो साहिब, शान्तिकरण इण कलि में, हो जिनजी,
तू मेरा मन में, तू मेरा दिल में , ध्यान धरुं पल-पल में, साहेबजी ।।तू.१
भवमां भमतां में दरिशन पायो,आशा पूरो एक पल में, हो जिनजी ।। तू.२
निर्मल ज्योत वदन पर सोहे, निकस्यो ज्युं चंद बादल में, हो जिनजी ।।तू.३
मेरो मन तुम साथे लीनो, मीन वसे ज्युं जल में, हो जिनजी ।। तू.४
'जिनरंग' कहे प्रभु शान्ति जिनेश्वर, दीठोजी देव सकल में, हो जिनजी।।तू.५

श्री शान्तिनाथजी की स्तुति

शान्ति जिनेश्वर समरीये, जेनी अचिरा माय ।
विश्वसेन कुल ऊपन्या, मृग लंछन पाय ।
गजपुरी नयरी नो धणी, कंचन वर्णी छे काय ।
धनुष चालीसनी देहडी, लाख वरसनुं आय ।।१।।

(3) रायण पादुका का तीसरा चैत्यवन्दन

एह गिरि ऊपर आदिदेव, प्रभु प्रतिमा वन्दो ।
रायण हेठे पादुका, पूजी ने आणंदो ।।१।।

एह गिरि नो महिमा अनंत, कुण करे वखाण ।
चैत्री पूनम ने दिने, तेह अधिको जाण ।।२।।

एह तीरथ सेवो सदा, आणी भक्ति उदार ।
श्री शत्रुंजय सुखदायको, दानविजय जयकार ।।३।।

रायण-पादुका स्तवन

नीलूडी रायण तरु तले, सुण सुंदरी । पीलूडा प्रभुना पाय रे, गुण मंजरी ।।
उज्ज्वल ध्याने ध्याइये, सुण. । एही ज मुक्ति उपाय रे, गुण मंजरी ।।१।।

शीतल छांयडे बेसिये, सुण. । रातड़ो करी मन रंग रे, गुण. ।।
पूजिये सोवन फूलड़े, सुण. । जेम होय पावन अंग रे, गुण. ।।२।।

खीर झरे जेह ऊपरे, सुण. । नेह धरी ने एह रे, गुण. ।।
त्रीजे भवे ते शिव लहे, सुण. । थाये निर्मल देह रे, गुण. ।।३।।

प्रीत धरी प्रदक्षिणा, सुण. । दिये एहने जे सार रे, गुण. ।।
अभंग प्रीति होय तेहने, सुण. । भवो भव तुम आधार रे, गुण. ।।४।।

कुसुम पत्र फल मंजरी, सुण. । शाखा थड़ ने मूल रे, गुण. ।।
देव तणा वासाय छे, सुण. । तीरथ ने अनुकूल रे, गुण. ।।५।।

तीरथ ध्यान धरो मुदा, सुण. । सेवो एहनी छांय रे, गुण. ।।
ज्ञान विमल गुण भाखियो, सुण. । शत्रुंजय माहात्म्य मांही रे, गुण. ।।६।।

रायण - पादुका स्तुति

श्री शत्रुंजय आदि जिन आव्या, पूर्व नवाणु वारजी ।
अनंत लाभ इहां जिनवर जाणी, समोसर्या निरधारजी ।
विमल गिरिवर महिमा मोटो, सिद्धाचल इणे ठामजी ।
कांकरे कांकरे अनंता सिध्या, एक सौ ने आठ गिरि नामजी ।। १

(४) श्री पुण्डरिक स्वामी का चौथा चैत्यवन्दन

आदीश्वर जिनरायनो, गणधर गुणवंत ।
प्रगट नाम पुण्डरीक जास, महिमा ए महंत ।।१।।
पंचकोडी मुनिराज साथ, अणसण तिहां कीध ।
शुक्ल ध्यान ध्याता अमूल, केवल वर लीध ।।२।।
चैत्री पूनम ने दिने ए, पाम्या पद महानंद ।
ते दिन थी पुण्डरीक गिरि, नाम दान सुखकंद ।।३।।

श्री पुण्डरिक स्वामी का स्तवन

एक दिन पुण्डरिक गणधरुं रे लाल, पूछे श्री आदि जिणंद सुखकारी रे ;
कहिये ते भव जल उतरी रे लाल, पामीश परमानंद भव वारी रे ।। एक. १

कहे जिन इण गिरि पामशो रे लाल, ज्ञान अने निर्वाण जयकारी रे ।
तीरथ महिमा वाधशे रे लाल, अधिक अधिक मंडाण निरधारी रे ।। एक. २

इम निसुणी ने इहां आविया रे लाल, घाती करम कर्या दूर तम वारी रे;
पांच करोड मुनि परिवर्या रे लाल, हुआ सिद्धि हजूर भव वारी रे ।। एक. ३

चैत्री पूनम दिन कीजिये रे लाल, पूजा विविध प्रकार दिलधारी रे ;
फल प्रदक्षिणा काउस्सग्गा रे लाल, लोगस्स थुई नमुक्कार नरनारी रे ।। एक. ४

दस वीस त्रीस चालीस भला रे लाल, पचास पुष्प नी माल अतिसारी रे ;
नर भव लाहो लीजिये रे लाल, जेम होय ज्ञान विशाल मनोहारी रे ।। एक. ५

श्री पुण्डरिक स्वामी की स्तुति

पुण्डरिक मंडण पाय प्रणमीजे, आदीश्वर जिनचंदाजी ।
नेम विना त्रेवीश तीर्थंकर, गिरि चढ़िया आणंदाजी ।
आगम मांहे पुण्डरिक महिमा, भाख्यो ज्ञान दिणंदाजी ।
चैत्री पूनम दिन देवी चक्केसरी, सौभाग्य द्यो सुखकंदाजी ।।

पू. दादा के दरबार में श्री आदिनाथ प्रभु का पाँचवा चैत्यवन्दन

आदिदेव अलवेसरु, विनीता नो राय ।
नाभिराया कुल मंडणो, मरुदेवा माय ।।१।।
पाँचशे धनुष नी देहडी, प्रभुजी परम दयाल ।
चौरासी लाख पूर्व नुं, जस आयु विशाल ।।२।।
वृषभ लंछन जिन वृषधरुए, उत्तम गुण मणि खाण ।
तस पद 'पद्म' सेवन थकी, लहिये अविचल ठाण ।।३।।

श्री ऋषभदेव स्वामी का स्तवन

माता मरुदेवी ना नन्द, देखी ताहरी मूरति मारुं मन लोभाणुजी
मारुं दिल लोभाणुंजी। देखी.

करुणा नागर, करुणा सागर, काया कंचनवान।
धोरी लंछन पाउले कांइ, धनुष पाँचसे मान ।। माता. १

त्रिगडे बेसी धर्म कहंता, सुणे पर्षदा बार।
जोजन गामिनी वाणी मीठी, वरसंती जलधार ।। माता. २

उर्वशी रुड़ी अपच्छरा ने, रामा छे मन रंग।
पाये नेउर रणझणे कांई, करती नाटारंभ ।। माता. ३

तू ही ब्रह्मा , तू ही विधाता, तू जगतारणहार।
तुझ सरीखो नहीं देव जगतमां, अरवडिया आधार ।।माता. ४

तू ही भ्राता, तू ही त्राता, तू ही जगत नो देव।
सुर नर किन्नर वासुदेवा, करता तुझ पद सेव ।। माता. ५

श्री सिद्धाचल तीरथ केरो, राजा ऋषभ जिणंद।
कीर्त्ति करे 'माणेकमुनि' ताहरी, टालो भव-भय फंद ।। माता. ६

श्री आदिनाथ भगवान की स्तुति

आदि जिनवर राया, जास सोवन्न काया।
मरुदेवी माया, धोरी लंछन पाया।
जगत स्थिति नीपाया, शुद्ध चारित्र पाया।
केवलसिरि राया, मोक्ष नगरे सिधाया ।।१।।

निन्नाणवे यात्रा की विधि

वर्तमान चोबीशी के आद्य तीर्थंकर आदीश्वर भगवान यानि ऋषभदेव हुए हैं, वे अपने आयुष्य के शेष रहे हुए एक लाख पूर्व वर्ष में ९९ पूर्व बार इस तीर्थ राज पर आकर के समवसरे थे। इस कारण से ९९ यात्रा की महिमा हुई है और इसके अनुकरण के रूप में ९९ यात्रा की जाती है। उसकी विधि निम्नलिखित है।

(१) नवाणु (निन्नाणवे) यात्रा करने वाले को नित्य-नित्य पांच चैत्यवन्दन करने चाहिये :-

(१) श्री गिरिराज के सम्मुख तलहटी पर।
(२) श्री शान्तिनाथ भगवान के जिनालय में।
(३) श्री रायण पादुका के सामने।
(४) श्री पुण्डरिक स्वामी के मन्दिर में।
(५) मूलनायक श्री आदीश्वर भगवान के जिनालय में तथा इन पाँचों स्थानों पर एक एक बार स्नात्र पूजा पढ़ानी चाहिए।

(२) एक एक यात्रा के अनुसार प्रतिदिन दस बँधी (पक्की) माला गिननी चाहिए, ताकि 'नवाणु' (निन्नाणवे) पूर्ण होने पर एक लाख नवकार मंत्र पूर्ण हो जायें।

(३) निन्नाणवे यात्रा करने वाले को नित्य दोनों समय प्रतिक्रमण करना चाहिये, सचित्त वस्तु का त्याग, पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन, शक्ति हो तो एकासना करना चाहिये, शयन भूमि पर करना चाहिये और पैदल चल कर यात्रा करनी चाहिये।

(४) गिरिराज की निन्नाणवे यात्रा करनी, तदुपरान्त घेटी पाग की नौ मिला कर कुल १०८ यात्रा करनी।

(५) यथाशक्ति रथयात्रा की शोभायात्रा निकालनी चाहिये, निन्नाणवे प्रकारी पूजा पढ़ानी तथा भगवान की आंगी रचानी चाहिये।

(६) नित्य तीन प्रदक्षिणा देनी तथा एक बार आदीश्वर 'दादा' के मन्दिर की १०८ प्रदक्षिणा देनी चाहिये।

(७) नित्य नौ स्वस्तिक करें, नौ फल तथा नौ नैवेद्य रखें।

(८) 'श्री शत्रुंजय महातीर्थ आराधनार्थं करेमि काउस्सग्गं' कह कर नित्य नौ लोगस्स का कायोत्सर्ग करना चाहिये।

(९) नित्य यथाशक्ति अष्ट प्रकारी पूजा करें।

(१०) एक बार १०८ लोगस्स का कायोत्सर्ग करें।

(११) शक्ति हो तो अेक बार चौविहार छट्ठ कर के सात यात्रा करें।

(१२) घेटी पाग, (१३) रोहित शाला पाग तथा (१४) शत्रुंजय नदी की पाग से एक बार तो अवश्य यात्रा करें।

रोहित शाला की देहरी व पगला

श्री शत्रुंजय नदी

चेतन! ''सिद्धाचल नुं वर्णन'' नामक पुस्तक के अनुसार गत चौबीसी के प्रथम तीर्थंकर केवलज्ञानी प्रभु के स्नात्र महोत्सव हेतु ईशान इंद्र ने गंगा नीचे उतारी थी, तब वह वेताढ्य से पृथ्वी के अंदर बहती हुई इधर प्रकट हुई थी, अतः यह पवित्र गंगा 'शत्रुंजय नदी' कहलाती है। इंद्र द्वारा उतारी हुई महाप्रभावशाली इस नदी का जो जयणा पूर्वक उपयोग किया जाए तो विद्या, राज्य, सुख, संपत्ति, कीर्ति, बुद्धि व मोक्ष की प्राप्ति होती है।

(१५) बारह कोस, छः कोस एवं डेढ़ कोस की प्रदक्षिणा करें, इस प्रकार कुल मिला कर १०८ यात्रा करें।

(१६) नौ बार नौ टूंकों के दर्शन करें तथा नौ टूंकों में प्रत्येक टूंक के मूलनायकजी के समक्ष चैत्यवन्दन करें।

(१७) एक बार गिरिराज की पूजा (गिरि पूजन) अर्थात पुरानी तलहटी से लगाकर श्री कल्याण विमल देरी, श्री मेघमुनि के स्तुप की देहरी, श्री गोडी पार्श्वनाथ की देहरी तथा उसके बाद जय तलहटी से लगाकर रामपोल तक जो जो चरण-पादुकाएँ अथवा प्रतिमाजी हैं, उनकी पूजा करें, ताकि यदि कोई आशातना हुई हो, तो उसका निवारण हो जाये।

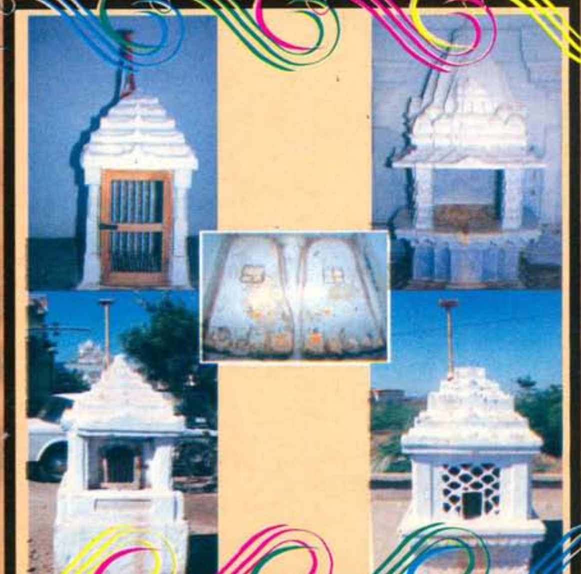

१. पुरानी तलेटी

२. कल्याण-विमल देरी

३. गोडी पार्श्वनाथ देरी

४. मेघमुनि स्तुप देरी

(१८) नित्य नौ खमासमणा निम्न लिखित दोहे बोल कर दें :-

नौ खमासमणा

सिद्धाचल समरुं सदा, सोरठ देश मोझार।
मनुष्य जन्म पामी करी, वन्दुं वार हजार ।।१

सोरठ देश मां संचर्यो, न चढ्यो गढ़ गिरनार।
शेत्रुंजी नदी नाह्यो नहीं, एनो एले गयो अवतार ।।२

शेत्रुंजी नदी मां नाही ने, मुख बांधी मुख कोश।
देव युगादि पूजिये, आणी मन सन्तोष ।।३

एकेकुं डगलुं भरे, शेत्रुंजा सामुं जेह।
ऋषभ कहे भव क्रोड़नां, कर्म खपावे तेह ।।४

शेत्रुंजा समो तीरथ नहि, ऋषभ समो नहीं देव।
गौतम सरीखा गुरु नहीं, वली वली वंदु तेह ।।५

जग मां तीरथ दोय वडा, शेत्रुंजय, गिरनार।
एक गढ़ ऋषभ समोसर्या, एक गढ़ नेम कुमार ।।६

सिद्धाचल सिद्धि वर्या, मुनिवर कोडी अनंत।
आगे अनंता सिद्धशे, पूजो भवि भगवंत ।।७

शत्रुंजय गिरि मंडणो, मरुदेवानो नन्द।
युगला धर्म निवारणो, नमो युगादि जिणंद ।।८

तन,मन, धन, सुत, वल्लभा, स्वर्गादि सुख भोग।
वली वली ए गिरि वंदता, शिवरमणी संयोग ।।९

श्री शत्रुंजय तप की आराधना विधि

सात छट्ठ दोय अट्ठम तपस्या, करी चढीये गिरिवरिये

(१) इस तप के प्रारंभ में १ अट्ठम, पारणा में बियासणा,
उसके बाद में एकांतरे ७ छट्ठ और अंत में १ अट्ठम करना।
(२) दोनों समय प्रतिक्रमण,
(३) तीन बार देववंदन,
(४) खमासमणा, स्वस्तिक, काउस्सग्ग वगेरे २१-२१ करना।

(५) तप के दिन श्री शत्रुंजय लघु कल्प का वांचन या श्रवण करना।

(६) तप के दिन निम्नोक्त २०-२० माला गिननी।

अट्ठम	-	१ला	श्री पुंडरिक गणधराय नमः
छट्ठ	-	१ला	श्री ऋषभदेव सर्वज्ञाय नमः
छट्ठ	-	२रा	श्री विमल गणधराय नमः
छट्ठ	-	३रा	श्री सिद्धक्षेत्राय नमः
छट्ठ	-	४था	श्री हरिगणधराय नमः
छट्ठ	-	५वाँ	श्री बाहुबली नाथाय नमः
छट्ठ	-	६ट्ठा	श्री सहस्त्रादि गणधराय नमः
छट्ठ	-	७वाँ	श्री सहस्त्र कमलाय नमः
अट्ठम	-	२रा	श्री कोडी गणधराय नमः

(७) श्री शत्रुंजय तप में तप के दिन निम्नोक्त २१ खमासमणे देना -

(१) श्री शत्रुंजय पर्वताय नमः
(२) श्री पुंडरिक पर्वताय नमः
(३) श्री सिद्धक्षेत्र पर्वताय नमः
(४) श्री विमलाचलाय नमः
(५) श्री सुरगिरये नमः
(६) श्री महागिरये नमः
(७) श्री पुण्यराशये नमः
(८) श्री पर्वताय नमः
(९) श्री पर्वतेंद्राय नमः
(१०) श्री महातीर्थाय नमः
(११) श्री सारस्वताय नमः
(१२) श्री दृढशक्ति पर्वताय नमः
(१३) श्री मुक्तिनिलयाय नमः
(१४) श्री पुष्पदंताय नमः
(१५) श्री महापद्माय नमः
(१६) श्री पृथ्वीपीठाय नमः
(१७) श्री सुभद्रगिरि पर्वताय नमः
(१८) श्री कैलाशगिरि पर्वताय नमः
(१९) श्री पातालमूलाय नमः
(२०) श्री अकर्मकाय नमः
(२१) श्री सर्वकामपूरणाय नमः

जिनको विस्तार से २१ खमासमणे देने हों, वे निम्न लिखित दोहे बोलकर दे एवं कार्तिक पूनम के दिन निम्नलिखित खमासमणे दें।

कार्त्तिक पूर्णिमा के
सिद्धाचलजी के २१ खमासमणा

सिद्धाचल समरुं सदा, सोरठ देश मोझार।
मनुष्य जन्म पामी करी, वंदूं वार हजार॥

अंग वसन मन भूमिका, पूजोपगरण सार।
न्याय, द्रव्य, विधि, शुद्धता, शुद्धि सात प्रकार॥

कार्तिक सुदी पूनम दिने, दस कोटि परिवार।
द्राविड, वारिखिल्लजी, सिद्ध थया निरधार॥

तिण कारण कार्तिक दिने, संघ सयल परिवार।
आदि जिन सन्मुख रही, खमासमण बहु वार॥

एकवीस नामे वर्णव्यो, तिहां पहलुं अभिधान।
शत्रुंजय शुकराज थी, जनक वचन बहुमान॥ सिद्धा. १

('सिद्धाचल समरुं सदा' दोहा बोल कर खमासमणा दें)

समोसर्या सिद्धाचले, पुण्डरिक गणधार।
लाख सवा महातम कह्युं, सुर, नर सभा मोझार॥

चैत्री पूनम ने दिने, करी अणसण एक मास।
पाँच कोडी मुनि साथ शुं, मुक्तिनिलय मां वास॥

तिणे कारण **पुण्डरिक गिरि**, नाम थयुं विख्यात।
मन-वच-काये वंदिये, उठी नित्य प्रभात॥ सिद्धा. २

वीस कोडीशुं पाण्डवा, मोक्ष गया इणे ठाम।
एम अनंत मुगते गया, **सिद्धक्षेत्र** तिणे नाम॥ सिद्धा. ३

अडसठ तीरथ न्हावतां, अंतरंग घड़ी एक।
तुम्बी जल स्नाने करी, जाग्यो चित्त विवेक॥

चंद्रशेखर राजा प्रमुख, कर्म कठिन मल धाम।
अचल पदे विमला थया, तिणे **विमलाचल** नाम॥ सिद्धा.४

पर्वत मां सुरगिरि वडो, जिन अभिषेक कराय।
सिद्ध हुआ स्नातक पदे, सुरगिरि नाम धराय।।

अथवा चौदे क्षेत्र मां, ए समो तीरथ न एक।
तिणे '**सुरगिरि**' नामे नमुं, जिहां सुरवास अनेक।। सिद्धा.५

ऐंशी योजन पृथुल छे, ऊँच पणे छव्वीस।
महिमाए मोटो गिरि, '**महागिरि**' नाम नमीश।। सिद्धा. ६

गणधर गुणवंता मुनि, विश्व मांहे वंदनीक।
जेहवो तेहवो संयमी, ए तीर्थे पूजनीक।।

विप्र लोक विषधर समा, दुःखिया भूतल मान।
द्रव्य लिंगी कण क्षेत्र सम, मुनिवर छीप समान।।

श्रावक मेघ समा कह्या, करता पुण्यनुं काम।
पुण्य नी राशि वधे घणी, तिणे '**पुण्यराशि**' नाम।। सिद्धा.७

संयमधर मुनिवर घणा, तप तपता एक ध्यान।
कर्म-वियोगे पामिया, केवल लक्ष्मी निधान।।

लाख एकाणुं शिव वर्या, नारद शुं अणगार।
नाम नमो तिणे आठमुं, '**श्रीपदगिरि**' निरधार।। सिद्धा. ८

श्री सीमंधर स्वामीये, ए गिरि महिमा विलास।
इन्द्र नी आगे वर्णव्यो, तिणे ए '**इन्द्रप्रकाश**'।। सिद्धा. ९

दस कोटि अणुव्रतधरा, भक्ते जमाड़े सार।
जैन तीरथ यात्रा करे, लाभ तणो नहीं पार।।

तेह थकी सिद्धाचले, एक मुनि ने दान।
देतां लाभ घणो हुवे, '**महातीरथ**' अभिधान।। सिद्धा. १०

प्रायः ए गिरि शाश्वतो, रहेशे काल अनन्त।
शत्रुंजय महातम सुणी, नमो '**शाश्वत गिरि**' सन्त।। सिद्धा. ११

गौ, नारी, बालक, मुनि, चउ हत्या करनार।
यात्रा करतां कार्तिकी, न रहे पाप लगार।।

जे परदारा लंपटी, चोरी ना करनार।
देवद्रव्य, गुरुद्रव्य ना, जे वली चोरण हार।।

चैत्री, कार्तिकी पूनमे, करे यात्रा इणे ठाम।
तप तपतां पातिक गले, तिणे '**दृढ़शक्ति**' नाम।। सिद्धा. १२

भव भय पामी नीकल्या थावच्चा सुत जेह।
सहस मुनिशुं शिववर्या, **'मुक्ति निलय गिरि'** तेह ।।सिद्धा.१३

चंदा, सूरज बिहुं जणा, ऊभा इणे गिरिशृंग।
वधावियो वर्णन करी, **'पुष्पदंत गिरि'** रंग ।। सिद्धा. १४

कर्म कठण भव-जल तजी, इहां पाम्या शिव सद्म।
प्राणी पद्म निरंजनी, वंदो गिरि **महापद्म** ।। सिद्धा. १५

शिववहु विवाह उत्सवे, मंडप रचियो सार।
मुनिवर वर बैठक भणी, **'पृथ्वीपीठ'** मनोहार ।। सिद्धा. १६

श्री **'सुभद्रगिरि'** नमो, भद्र ते मंगल रूप।
जल तरु रज गिरिवर तणी, शीष चढावे भूप ।। सिद्धा. १७

विद्याधर सुर अप्सरा, नदी शेत्रुंजी विलास।
करता हरता पाप ने, भजिये भवि कैलास ।। सिद्धा. १८

बीजा निर्वाणी प्रभु, गई चौवीसी मोझार।
तस गणधर मुनि मां वडा, नामे कदंब अणगार ।।

प्रभु वचने अणसण करी, मुक्तिपुरीमां वास।
नामे **'कदम्बगिरि'** नमो, तो होय लील विलास ।। सिद्धा. १९

पाताले जस मूल छे, **'उज्ज्वलगिरि'** नुं सार।
त्रिकरण योगे वंदतां, अल्प होय संसार ।। सिद्धा. २०

तन, मन, धन, सुत, वल्लभा, स्वर्गादिक सुख भोग।
जे वंछे ते संपजे, शिवरमणी-संयोग ।।
विमलाचल परमेष्ठी नुं, ध्यान धरे षट् मास।
तेज अपूरव विस्तरे, पूरे सघली आश ।।

त्रीजे भव सिद्धि लहे, ए पण प्रायिक वाच।
उत्कृष्टा परिणाम थी, अंतरमुहूरत साच ।।

सर्व कामदायक नमो, नाम करी ओलखाण।
श्री शुभवीर विजय प्रभु नमतां क्रोड कल्याण ।। सिद्धा. २१

श्री शत्रुंजय लघु कल्प

इस श्री शत्रंजय लघुकल्प का श्रवण या वांचन करने से
शत्रुंजय की एक यात्रा का लाभ मिलता है।
अतः इसका दिन में एकबार वाँचन करना चाहिए।

अईमुत्तय केवलिणा, कहिअं सेत्तुंज तित्थमाहप्पं;
नारयरिसिस्स पुरओ; तं निसुणह भावओ भविआ (१)

सेत्तुंजे पुंडरिओ, सिद्धो मुणि कोडी पंच संजुत्तो;
चित्तस्स पुण्णिमाए, सो भण्णइ तेण पुंडरिओ (२)

नमि विनमि रायाणो, सिद्धा कोडीहिं दोहिं साहूणं;
तह दविड वारिखिल्ला, निव्वुआ दस य कोडिओ (३)

पज्जुन्नसंबपमुहा, अद्धुट्ठाओ कुमारकोडीओ ;
तह पंडवा वि पंच य, सिद्धिगया नारयरिसी य (४)

थावच्चासुय सेलगा य, मुणिणो वि तह राममुणी ;
भरहो दसरहपुत्तो, सिद्धा वंदामि सेत्तुंजे (५)

अन्ने वि खवियमोहा, उसभाई विशालवंससंभूआ ;
जे सिद्धा सेत्तुंजे तं नमह मुणी असंखिज्जा (६)

पन्नास जोयणाइ, आसी सेत्तुंजवित्थरो मुले;
दस जोयण सिहरतले; उच्चत्ते जोयणा अट्ठ (७)

जं लहइ अन्नतित्थे, उग्गेण तवेण बंभचेरेण;
तं लहइ पयत्तेणं, सेत्तुंजगिरिम्मि निवसंतो (८)

जं कोडीए पुन्नं, कामीय आहारभोइआ जे उ;
तं लहइ तत्थ पुन्नं एगोववासेण सेत्तुंजे (९)

जंकिंचि नामतित्थं, सग्गे पायालि माणुसे लोए;
तं सव्वमेव दिट्ठं, पुंडरिए वंदिए संते (१०)

पडिलाभंते संघं, दिट्ठमदिट्ठे य साहू सेत्तुंजे;
कोडिगुणं च अदिट्ठे दिट्ठे य अणंतयं होइ (११)

केवलनाणुप्पत्ती निव्वाणं आसी जत्थ साहूणं;
पुंडरिए वंदित्ता, सव्वे ते वंदिया तत्थ (१२)

अट्ठावय संमेए पावा-चंपाइ, उज्जिंतनगे य;
वंदित्ता पुण्णफलं सयगुणं तंपि पुंडरिए (१३)

पुआकरणे पुन्नं एगगुणं सयगुणं च पडिमाओ;
जीणमवणेणं सहस्सं, णंतगुणं पालणे होई (१४)

पडिमं चेइहरं वा, सित्तुंजगिरिस्स मत्थए कुणइ;
मुत्तूण भरहवासं, वसइ सग्गे निरुवसग्गे (१५)

नवकारसहिय पोरिसी पुरिमड्ढेगासणं च आयामं ;
पुंडरियं च सरंतो, फलकंखी कुणइ अभत्तट्ठं (१६)

छट्ठट्ठमदसमदुवालसाणं, मासद्धमासखवणाणं;
तिगरणसुद्धो लहइ सेत्तुंजं संभरंतो अ (१७)

छट्ठेण भत्तेणं, अप्पाणेणं तु सत्त जत्ताइ;
जो कुणइ सेत्तुंजे, तइयभवे लहइ सो मुक्खं (१८)

अज्जवि दीसइ लोए, भत्तं चइउण पुंडरियनगे;
सग्गे सुहेण वच्चइ, सीलविहुणो वि होऊणं (१९)

छत्तं झयं पडागं, चामर-भिंगारथालदाणेणं;
विज्जाहरो अ हवइ, तह चक्की होइ रहदाणा (२०)

दस वीस तिस चत्ताल पन्नास पुप्फदामदाणेणं;
लहइ चउत्थछट्ठट्ठमदसमदुवालसफलाइं (२१)

धुवे पक्खुववासो, मासक्खमणं च कपूरधुवम्मि;
कित्तियमासक्खमणं, साहू पडिलाभिए लहइ (२२)

नवि तं सुवन्नभूमि भूसणदाणेण अन्नतित्थेसु
जं पावइ पुन्नफलं, पूजा न्हवणेण सित्तुंजे (२३)

कंतार चोर सावय समुद्द दारिद्दरोगरिउ रुद्दा
मुच्चंति अविग्घेणं जे सेत्तुंजं धरंति मणे (२४)

सारावली पयन्नगगाहाओ सूअहरेण भणिआओ
जो पढइ गुणइ निसुणइ सो लहइ सीत्तुंजजत्तफलं (२५)

सामान्य ज्ञान : कुछ जानने योग्य बाते

(१) मांडणी राणकपुर की, ऊंचाई तारंगा की, नक्काशी (कोरनी) आबु गिरि की और महिमा शत्रुंजय गिरिराज की कहलाती है।

(२) इस सिद्धगिरिराज का शत्रुंजय नाम शुकराजा के कारण पडा है। संक्षेप में घटना इस प्रकार है। शुकराजा एक बार तीर्थयात्रा करने गया था। चंद्रशेखर राजा ने देवी की साधना से शुकराजा का रूप बनाया और वास्तविक शुकराजा के राजमहल में वह कृत्रिम शुकराजा रहने लगा व राज्य करने लगा। यात्रा करके जब वास्तविक शुकराजा आया, तो मंत्रियोंने उसको राज्य भवन में जाने के लिये रोक लिया। हताश बना हुआ वह वापिस लौट रहा था कि बीच में केवलज्ञानी मृगध्वज पिता मुनि मिले। उसने राज्यप्राप्ति का उपाय पूछा। तब राज्य की प्राप्ति अनर्थ का मूल है, इसलिये उसका उपाय न बताकर मुनिश्री ने कहा कि पाप रहित धर्मकृत्य शत्रुका व अपना दोनों का हित करने वाला है। सिद्धगिरिराज पर गुफा में छः महीने तक ब्रह्मचर्य पालन व एकासणा के साथ ऋषभदेव का ध्यान करने पर प्रकाश स्फुरायमान होता है। उससे अनिष्ट नाश व इष्ट प्राप्ति होती है। तब शुकराजा ने ६ महीने तक विमलगिरि पर साधना की। तब सत्य प्रकट हुआ। कृत्रिम शुकराजा बना हुआ चंद्रशेखर भाग गया और असली शुकराजा राज्य करने लगा। उसने सभी राजाओं को कहा कि इस तीर्थ के प्रभाव से शत्रु पर विजय प्राप्त हुई है। इसलिये इसका नाम शत्रुंजय तीर्थ रखा जाता है। उसके बाद शुकराजा ने दीक्षा लेकर केवलज्ञान प्राप्त करके मोक्ष प्राप्त किया।

(३) यह अवसर्पिणी काल होने से श्री सिद्धगिरिराज क्रमशः घटता जाता है। इसका विस्तार प्रथम आरे में ८० योजन (एक योजन = ४ कोस), दूसरे आरे में ७० योजन, तीसरे आरे में ६० योजन, चौथे आरे में ५० योजन था। पाँचवे आरे में १२ योजन और छट्ठे आरे में सात हाथ होगा।

(४) यह गिरिराज बढ़ेगा - घटेगा, परन्तु सर्वथा नष्ट नहीं होगा, अतः प्रायः शाश्वत है।

(५) गिरिराज की पांच तलहटी विख्यात हैं - (१) **वड़नगर**, (२) **वल्लभीपुर (वला)**, सं. ४६० में शत्रुंजय की तलहटी विमलापुरी में थी। लेकिन १५०० वर्ष के पहले वल्लभी राज्य की स्थापना हुई, तब विमलापुरी का नाम बदलकर वल्लभीपुर रखा गया। (३) **घेटी पाग (आदपुर)** (४) **पुरानी तलहटी पालीताना** कंकुबाई की धर्मशाला के पास है। श्री शत्रुंजय गिरिवर की शीतल छाया में आया हुआ पालीताणा का प्राचीन नाम पादलिप्तपुर था, यह नाम कैसे व किसने दिया ? उसका संक्षिप्त इतिहास यह है। कि पूज्यपाद आचार्य श्री पादलिप्तसूरीश्वरजी महाराज का जन्म सं. ४५७ में कोशला नगरी में हुआ था। माता का नाम प्रतिमा, पिता का नाम फूलचंद था, वे दीक्षा लेकर महान प्रभावक आचार्य बने। पूज्यश्री पैरों में १०८ औषधियों का लेप लगाकर आकाश में उडते हुए शत्रुंजय, गिरनार,

पावापुरी आदि तीर्थों की यात्रा करते थे । एक बार पूज्य श्री शत्रुंजय की यात्रा करके ढंका पुरी आए । वहाँ पर नागार्जुन पूज्य आचार्यश्री की दिव्य शक्ति से प्रभावित होकर चरण प्रक्षालन आदि सेवा करने लगा। बुद्धिमान नागार्जुन ने सूंघ सूंघ कर १०८ औषधि प्राप्त कर पैरों में लेप लगाकर उडने का प्रयत्न किया। परन्तु थोडा-थोडा उड़ कर वह नीचे गिर जाता था। पूज्यश्री ने उसे देखा, तो वह क्षुब्ध हो गया। आचार्य श्री ने उसे सलाह दी कि यदि सभी औषधियों को चावल के धोवण (पानी) के साथ घुंट कर लेप किया जाये तो स्खलना नहीं होगी। नागार्जुन उसमें सफल हुआ । अतः उसने गुरु भक्ति के निमित्त से पादलिप्त नामक शहर बसाया। पादलिप्त का अपभ्रंश होने पर पालीताणा नाम प्रसिद्ध हुआ। आचार्यश्री इस गिरिराज पर ३२ दिनों का अनशन कर शत्रुंजय कल्पवृत्ति के अनुसार ईशान देवलोक में इंद्र के समान द्युति वाले देव बने ।

कर्नल टॉड़ का कहना है कि वल्लभीपुर में बौद्ध लोगों का साम्राज्य था । वहाँ उनके साधुओं को पाली भाषा का अध्ययन करने हेतु विद्यापीठ व धर्मग्रन्थ आदि की सुविधा थी । उससे इस गिरिराज का नाम पालीताणा प्रसिद्ध हुआ, परन्तु यह संगत नहीं लगता है । पूर्व की हकीकत ठीक प्रतीत होती है ।

(५) **जय तलहटी** मनमोहन पाग नाम की तलहटी जय तलहटी कहलाती है।

(६) पापी एवं अभव्य जीव गिरिराज को देख नहीं सकते ।

(७) चौविहार छट्ठ करके सात यात्रा करने वाली आत्मा तीसरे भव में मोक्ष में जाती है।

(८) केवली तीर्थंकर सीमंधर स्वामी ने कहा है कि जगत् में इसके समान कोई अन्य तीर्थ नहीं है ।

(९) तलहटी से रामपोल तक ३ किलोमीटर और ३.१५ हेक्टोमीटर दूरी है।

(१०) तलहटी से रामपोल तक ३७४५ सीढियाँ हैं ।

(११) प्रतिदिन भाता (अल्पाहार) के द्वारा यात्रियों की साधर्मिक भक्ति की जाती है।

(१२) सिद्धगिरिराज को मन्दिरों का नगर (City of Temples) कहा जाता है। डॉ. रसेश जमीनदार भी लिखते हैं कि यह पर्वत मंदिर नगर बना है, विश्व में शायद ऐसा गिरि मंदिर नगर मिलना मुश्किल है ।

(१३) वल्लभीपुर आदि सुदूर स्थानों से सूंड को फैला कर विश्राम करते व ध्यान में झूल रहे हाथी जैसा व उसके ऊपर रहा हुआ चौमुखजी मंदिर मानो हाथी पर अंबाडी लगी हो, उस आकार का गिरिराज अत्यन्त शोभायमान प्रतीत होता है ।

(१४) नौ टूँकों में कुल १२४ जिनालय, ७३९ देहरियाँ, ११४७४ प्रतिमाजी तथा ८९६१ चरण-पादुकाएँ हैं।

(१५) समुद्र की सतह से १०७७ फीट की ऊँचाई पर 'दादा की टूंक' है ।

(१६) शत्रुंजय माहात्म्य के अनुसार देव भव व मनुष्य भव में गिरिराज का जिसने दर्शन नहीं किया हो, वह व्यक्ति पशु जैसा है और वह गर्भावास में रहा हुआ कहलाता है।

(१७) १५ अगस्त १९४९ को डाक विभाग ने १५ रुपये का एक डाक टिकिट जारी किया था, जिस पर पालीताणा (गुज.) का सुप्रसिद्ध शत्रुंजय जैन मंदिर दर्शाया गया था।

(१८) **'अभियान'** १८ मार्च १९९६ के अंक में नरेश शाह द्वारा लिखित **'शेत्रुंजय तीर्थ की छोटी छोटी बातें'** नामक हेडिंग वाले लेख में शेत्रुंजय पर 'आंखडिअे रे मे आज शेत्रुंजय दीठो रे' नाम नुं पुस्तक आचार्य गुणरत्न सूरीश्वरजी अे लख्युं छे. एक अन्य पुस्तक 'सौ चालो सिद्धगिरि (शेत्रुंजय) जइअे' आचार्य विजय गुणरत्न सूरीश्वरजी अे लख्युं छे, तेना बेक कवर पर आचार्य साहेब नो फोटोग्राफ छापवामां आव्यो छे अने तेनी उपर लखवामां आव्युं छे के शेत्रुंजय भावयात्रा ना स्पेश्यालिस्ट..।'' ऐसा उल्लेख किया है।

(१९) श्री महावीर स्वामीजी के परम उपासक श्री श्रेणिक महाराजा ने श्री शत्रुंजय गिरि पर अलग-अलग जिनालय निर्माण करवाये, ऐसा उल्लेख मिलता है।

(२०) विद्याप्राभृत नामक पूर्व में इस तीर्थ के २१ नाम दिये हुए हैं।

(२१) प्रवहण (जहाज) जैसा शत्रुंजय है, कषायादि शत्रु-मगरमच्छ वगैरह जिसको देखकर दूर भाग जाते हैं, तथा त्रिविध ताप रूप तरंगे शांत हो जाती है। शत्रुंजया नदी पर बनाये हुए बांध से नजर डालने पर गिरिराज का आकार वास्तव में जहाज जैसा लगता है और इस पर रहे मंदिर मानो जहाज की ध्वजा हो, ऐसा प्रतीत होता है। भवोभव यह दिव्य प्रवहण हमें प्राप्त हो ... !

(२२) मणि की भेंट-आ. तुलसीजी इस तीर्थ के दर्शन करने आए थे। नीचे उतर कर इस गिरिराज के ऊपर के वातावरण की प्रशंसा की। इतना ही नहीं, लेकिन इनके एक भक्त ने तो दादा के चरणों में मूल्यवान एक मणि भेंट किया, वह मणि आज भी आ. क. पेढी में विद्यमान है और मानो गिरिराज की महिमा गा रहा है। आधुनिक काल में भी गिरिराज का प्रभाव कितना है, उसका यह एक दृष्टांत है।

(२३) फार्बस साहब-रासमाला में लिखते हैं कि ''शत्रुंजय पर्वत के शिखर ऊपर से पश्चिम दिशा की ओर देखने पर, जब आकाश निर्मल और दिन प्रकाशमान होता है, तब श्री नेमिनाथ तीर्थंकर के कारण पवित्रता को प्राप्त रमणीय श्री गिरनार तीर्थ दृष्टिगोचर होता है।

(२४) सूर्योदय के बाद पूर्व दिशा की ओर दृष्टि डालने पर सगर चक्रवर्ती द्वारा शत्रुंजय महातीर्थ की रक्षा हेतु लाया हुआ सिद्धक्षेत्र की भूमि को स्पर्श करता हुआ समुद्र दिखाई देता है। वह मानो अपनी तरंगों द्वारा शत्रुंजय तीर्थ को भेटने के लिए उल्लसित हो रहा हैं।

(२५) निन्नाणवे पूर्व बार भगवान ऋषभदेव का यहाँ पदार्पण हुआ था ; अर्थात् एक पूर्व = ८४००००० X ८४००००० = ७०५६ ००० ००० ०००० X ९९= ६९८५४४०००००००००० बार भगवान का यहाँ पदार्पण हुआ था।

(२६) गणित से सच्चाई सिद्ध होती है

प्रश्न : गिरिराज पर बीस करोड़ मुनि मोक्ष में गये थे, तो प्रश्न यह उठता है कि वहाँ इतने मुनियों का समावेश कैसे हुआ होगा ?

इसका उत्तर निम्नलिखित है :-

(१) चौथे आरे में गिरिराज ५० योजन लम्बा और ५० योजन चौड़ा था।
(२) एक योजन = चार कोस, अत: ५० योजन X ४ = २०० कोस
(३) एक कोस = २००० धनुष, अत: २००० X २०० = ४००००० चार लाख धनुष्य।
(४) एक धनुष = ४ हाथ, अत: ४००००० X ४ = १६००००० हाथ (सोलह लाख हाथ)।
(५) गिरिराज का क्षेत्रफल = लम्बाई X चौडाई, अत: १६००००० X १६००००० = २५६०००००००००० वर्ग हाथ (२५६०० करोड वर्ग हाथ)
(६) शयन करने पर एक मुनि की देह ४ हाथ लम्बी व १ हाथ चौड़ी होती है = तो एक मुनि की देह का ४ वर्ग हाथ क्षेत्रफल होता है।
(७) गिरिराज के क्षेत्रफल में मुनि के देह के क्षेत्रफल का भाग दें, तो गिरिराज के क्षेत्रफल में कितने मुनि सामाविष्ट होंगे ? उसकी संख्या निम्नलिखित आयेगी।
गिरिराज का क्षेत्रफल = २५६ ००० ००० ०० ०० वर्ग हाथ / ४ वर्ग हाथ = ६४ ००० ००० ०० ०० यानी गिरिराज में ६४००० करोड मुनि समाविष्ट हो सकते हैं, तो बीस करोड मुनियों का समावेश होने में कोई सन्देह नहीं रहता।

श्री सिद्धगिरिराज के मुख्य १७ उद्धार

(१) प्रथम उद्धार महाराजा भरत ने कराया।
(२) दूसरा उद्धार भरत चक्रवर्ती की आठवी पाट पर हुए राजा दण्डवीर्य ने कराया।
(३) तीसरा उद्धार श्री सीमंधर स्वामी के उपदेश से एक सौ सागरोपम व्यतीत होने पर ईशानेन्द्र ने कराया।
(४) चौथा उद्धार एक करोड़ सागरोपम काल व्यतीत होने के पश्चात् चौथे देवलोक के इन्द्र माहेन्द्र ने कराया।

(५) पाँचवाँ उद्धार दस करोड सागरोपम काल व्यतीत होने के पश्चात् पाँचवे देवलोक के इन्द्र ब्रह्मेन्द्र ने कराया।

(६) छट्ठा उद्धार उसके पश्चात् एक करोड़ लाख सागरोपम व्यतीत होने पर भवनपति के असुर कुमार निकाय के इन्द्र चमरेन्द्र ने कराया।

(७) सातवाँ उद्धार श्री अजितनाथ भगवान के शासन में चक्रवर्ती सगर ने कराया।

(८) आठवाँ उद्धार श्री अभिनन्दन भगवान के शासन में व्यन्तरेन्द्र ने कराया।

(९) नवाँ उद्धार श्री चन्द्रप्रभ स्वामी के शासन में मुनिवर श्री चंद्रशेखर के उपदेश से उनके पुत्र राजा चन्द्रयशा ने कराया।

(१०) दसवाँ उद्धार श्री शान्तिनाथ भगवान के पुत्र चक्रायुध ने कराया।

(११) ग्यारहवाँ उद्धार श्री मुनिसुव्रत स्वामी के तीर्थ में रामचन्द्रजी तथा लक्ष्मणजी ने कराया।

(१२) बारहवाँ उद्धार श्री नेमिनाथ भगवान के शासन में पाण्डवों ने कराया।

इस प्रकार मुख्य बारह उद्धार चौथे आरे में हुए। बीच-बीच में छोटे-छोटे अनेक उद्धार होते रहे हैं। तत्पश्चात् पाँचवे आरे में निम्नलिखित चार बड़े उद्धार हुए हैं।

(१३) तेरहवाँ उद्धार श्रुतज्ञानी वज्रस्वामी के उपदेश से विक्रम संवत् १०८ में जावडशा ने कराया।

(१४) चौदहवाँ उद्धार विक्रम संवत् १२१३ में श्री कुमारपाल राजा के समय में श्रीमाली ज्ञाति के मंत्री श्री बाहड़ ने कराया।

(१५) पन्द्रहवाँ उद्धार संवत् १३७१ में श्री समराशा ओसवाल ने कराया।

(१६) सोलहवाँ उद्धार संवत् १५८७ में श्री करमाशा ओसवाल ने कराया। उनके द्वारा प्रतिष्ठित मूलनायकजी की प्रतिमा इस समय विद्यमान है और उनका प्रभाव सर्वत्र व्याप्त है।

(१७) सत्तरहवाँ उद्धार - पाँचवे आरे के अन्त में श्री दुप्पसहसूरीश्वरजी महाराज के उपदेश से राजा विमलवाहन करायेंगे और वह इस अवसर्पिणी का अन्तिम उद्धार होगा।

"इहां मोक्ष गया केई कोटी रे, अमने पण आशा मोटी रे"
सिद्धगिरि पर मोक्ष गई आत्माओं की सूची

इस गिरिराज पर काल की अनन्तता से अनन्त करोड जीव सिद्ध-पद प्राप्त कर चुके हैं, जिनके नामों की गिनती नहीं हो सकती है, तो भी वर्तमान चौबीसी आदि में सिद्धपद प्राप्त आत्माओं की यहाँ प्रसंगवश सूची दी जाती है :-

	कौन	कितनी संख्या के साथ
(१)	श्री ऋषभदेव भगवान के वंशज	असंख्याता
(२)	पांच पाण्डव	बीस करोड़ मुनियों के साथ
(३)	अजितसेन	सत्रह करोड़ के साथ
(४)	सोमयशा (बाहुबली के पुत्र)	तेरह करोड़ के साथ
(५)	द्राविड एवं वारिखिल्ल	दस करोड़ के साथ
(६)	शाम्ब-प्रद्युम्न	साढ़े आठ करोड़ के साथ
(७)	श्री पुण्डरिक गणधर	पाँच करोड़ के साथ
(८)	भरत मुनि	पाँच करोड़ के साथ
(९)	राम एवं भरत (दशरथ-पुत्र)	तीन करोड़ के साथ
(१०)	नमि - विनमि विद्याधर	दो करोड़ के साथ
(११)	श्री शान्तिनाथ भगवान के वर्षावास में	१,५२,५५,७७७ मुनि
(१२)	सागर मुनि	एक करोड़ के साथ
(१३)	श्रीसार मुनि	एक करोड़ के साथ
(१४)	कदम्ब गणधर	एक करोड़ के साथ
(१५)	नारद ऋषि	एकाणवे लाख के साथ
(१६)	आदित्ययशा (भरत महाराजा के पुत्र)	एक लाख
(१७)	वसुदेव की पत्नियाँ	पैंतीस हजार
(१८)	दमितारि मुनि	चौदह हजार
(१९)	अजितनाथ भगवान के साधु	दस हजार
(२०)	आ. नंदिषेणसूरि महा.	हजार
(२१)	वैदर्भी	चवालीस सौ
(२२)	बाहुबली	एक हजार आठ के साथ
(२३)	थावच्चा पुत्र	एक हजार
(२४)	शुक परिव्राजक (शुकाचार्य)	एक हजार
(२५)	भरत चक्रवर्ती	एक हजार
(२६)	कालिक मुनि	एक हजार
(२७)	संप्रति जिन के थावच्चा गणधर	एक हजार
(२८)	सुभद्र मुनि	सात सौ साधुओं के साथ
(२९)	शैलकाचार्य	पाँच सौ साधुओं के साथ
(३०)	नमि विद्याधर की पुत्री चर्चा प्रमुख	चौसठ के साथ

(३१) इनके अतिरिक्त ऋषभसेन जिन प्रमुख असंख्य तीर्थंकर, देवकीजी के छः पुत्र, जाली, मयाली एवं उवयाली, मण्डक मुनि, सुकोशल मुनि तथा अइमुत्ता मुनि आदि अनन्त महात्माओं ने यहाँ सिद्धिपद प्राप्त किया है।

यात्रा के पर्व दिन

(१) कार्त्तिक शुक्ला पूर्णिमा-	श्री ऋषभदेवजी के पौत्र द्राविड एवं वारिखिल्ल ने दस करोड़ मुनियों के साथ सिद्धिपद प्राप्त किया।
(२) माघ कृष्णा त्रयोदशी -	श्री ऋषभदेव भगवान की निर्वाण कल्याणक तिथि।
(३) माघ शुक्ला पूर्णिमा -	श्री मरुदेवी माता के चैत्य की वर्षगाँठ।
(४) फाल्गुण शुक्ला अष्टमी -	श्री ऋषभदेव भगवान इस दिन पूर्व निन्नाणवे बार सिद्धाचल पर आये।
(५) फाल्गुण शुक्ला १० -	नमि-विनमि दो करोड़ मुनियों के साथ मोक्ष गये।
(६) फाल्गुण शुक्ला १३ -	श्री कृष्ण के पुत्र शाम्ब एव प्रद्युम्न साढ़े आठ करोड़ मुनियों के साथ भाडवा पर्वत पर सिद्ध हुए। (छः कोस की प्रदक्षिणा)
(७) फाल्गुण शुक्ला पूर्णिमा	श्री पुण्डरिक स्वामीने पाँच करोड़ मुनियों के साथ सिद्धगिरि पर अनशन किया।
(८) चैत्र कृष्णा अष्टमी	श्री ऋषभदेव भगवान के जन्म कल्याणक एवं दीक्षा-कल्याण की तिथि। (वर्षीतप का प्रारम्भ दिन)
(९) चैत्र शुक्ला पूर्णिमा	श्री पुण्डरिक गणधर ने पाँच करोड मुनियों के साथ शत्रुंजय पर सिद्धिपद प्राप्त किया।
(१०) वैशाख कृष्णा १४	नमि विद्याधर की चर्चा आदि ६४ पुत्रियोंने सिद्ध-पद प्राप्त किया (चर्चगिरि)।
(११) वैशाख शुक्ला ३	अक्षय-तृतीया वर्षीतप का पारणा।
(१२) जेठ कृष्णा ६	संवत् १५८७ में हुई श्री आदीश्वर भगवान की प्रतिष्ठा की वर्षगाँठ।
(१३) जेठ शुक्ला ८	श्री विजयानन्द सूरीश्वरजी महाराज के मूर्ति की प्रतिष्ठा।
(१४) असाढ़ शुक्ला १४	चौमासी चौदस; चालू वर्ष की अन्तिम यात्रा।
(१५) अश्विन शुक्ला पूर्णिमा	पाँच पाण्डवों ने बीस करोड़ मुनियों के साथ सिद्धिपद प्राप्त किया।

नरनारी अंतर भाव थी, निशदिन करे जिन अर्चना,
दर्शन थकी पावन करे ते, विमलगिरि ने वंदना....।

पालीताणा शहर में स्थित धर्मशाला व मंदिरो की सूचि

सिद्धगिरिराज जैनों का महान् व अति पूज्य तीर्थधाम होने से
पालीताणा शहर में जैन धर्मशाला व मंदिर बहुत हैं।
तलेटी रोड पर आये हुए धर्मशाला व मंदिरों की सूचि निम्नलिखित हैं।

	धर्मशाला का नाम	मंदिर में मूलनायक
१)	वीरबाई जैन पाठशाला	महावीर स्वामीजी
२)	केशवजी नायक धर्मशाला	आदीश्वर प्रभु
३)	मोती सुखिया धर्मशाला	आदिनाथ प्रभु
४)	धर्मशांति आराधना भवन	आदिनाथ प्रभु
५)	नरशीनाथा धर्मशाला	चंद्रप्रभु स्वामी
६)	जसकोर धर्मशाला में आणंदजी-कल्याणजी की पेढी	चिंतामणी पार्श्वनाथजी
७)	सांडेराव जिनेन्द्रभुवन	सहस्रफणा पार्श्वनाथजी
८)	पंजाबी धर्मशाला	वासुपूज्य स्वामी
९)	बाबु माधवलाल धर्मशाला	साचा सुमतिनाथजी
१०)	आरीसा भुवन धर्मशाला	शांतिनाथ प्रभु
११)	हजारी निवास धर्मशाला	चंद्रप्रभु स्वामीजी
१२)	जैन भुवन	सीमंधर स्वामी
१३)	वल्लभ विहार	पार्श्वनाथजी
१४)	कच्छी भुवन धर्मशाला	आदिनाथजी
१५)	हिमत विहार	शांतिनाथजी
१६)	राजेन्द्रविहार (दादावाडी)	आदिनाथजी
१७)	हीरा शांता यात्रिक गृह	महावीर स्वामीजी
१८)	राजेन्द्रजैन भवन	रिद्धि सिद्धि पार्श्वनाथजी
१९)	सौधर्म निवास	नाकोडा पार्श्वनाथजी
२०)	महाराष्ट्र भुवन	आदिनाथ प्रभु
२१)	नंदा भुवन धर्मशाला	सीमंधर स्वामीजी
२२)	बेंगलोर आराधना भवन	चंद्रप्रभु स्वामीजी
२३)	लुणावा मंगल भुवन	आदीश्वर भगवान
२४)	यतीन्द्रभवन धर्मशाला	निर्माणाधीन
२५)	शत्रुंजय दर्शन	निर्माणाधीन
२६)	तखतगढ मंगल भवन धर्मशाला	आदीश्वर प्रभु
२७)	केशरियाजी धर्मशाला	आदिनाथ प्रभु
२८)	पादरली भवन धर्मशाला	कल्याण पार्श्वनाथ प्रभु
२९)	आगम मंदिर	आदिनाथ प्रभु
३०)	नरशी केशवजी धर्मशाला	शांतिनाथ प्रभु
३१)	भेरु विहार	शीतलनाथजी
३२)	कच्छ वागड सात चोवीशी धर्मशाला	शंखेश्वर पार्श्वनाथ प्रभु
३३)	कैलास स्मृति	सीमंधरस्वामी (निर्माणाधीन)
३४)	हाडेचा नगर धर्मशाला	निर्माणाधीन
३५)	वर्धमान महावीर जैन धर्मशाला	सीमंधरस्वामी (निर्माणाधीन)
३६)	बच्छराज मावाजी बोथरा जैन धर्मशाला	पार्श्वनाथजी (निर्माणाधीन)
३७)	पालनपुर जैन धर्मशाला	पल्लविया पार्श्वनाथजी

३८)	चांद भुवन धर्मशाला	३९)	कल्याण भुवन धर्मशाला
४०)	चंपा निवास धर्मशाला	४१)	सोनबाई धर्मशाला
४२)	पुरबाई जैन धर्मशाला	४३)	खुशाल भुवन
४४)	भावसार नी धर्मशाला	४५)	समरथ भुवन धर्मशाला
४६)	ब्रह्मचर्याश्रम	४७)	जीवन निवास धर्मशाला
४८)	शत्रुंजय विहार धर्मशाला	४९)	जिन हरि विहार
५०)	बाबु पन्नालाल धर्मशाला	५१)	उमाजी भुवन
५२)	कोटावाली धर्मशाला	५३)	आनंद भुवन धर्मशाला
५४)	नाहर बिल्डिंग	५५)	मगनलाल मूलचंद धर्मशाला
५६)	धनापरा जिनेन्द्रभवन	५७)	केशर निवास धर्मशाला
५८)	मुक्ति निलय जैन धर्मशाला	५९)	सुराणा भुवन
६०)	प्रकाश भुवन	६१)	मंडार जैन धर्मशाला
६२)	लावण्य विहार	६३)	अंकीबाई धर्मशाला
६४)	ढड्ढा भवन समुद्रविहार	६५)	काशी केशर वापीवाली धर्मशाला
६६)	बनासकांठा यात्रिक भवन	६७)	साबरमती यात्रिक भवन
६८)	ओशवाल यात्रिक गृह	६९)	खेतलावीर धर्मशाला
७०)	चंद्रदीपक धर्मशाला	७१)	पन्नारुपा यात्रिक गृह
७२)	डीसावाला नी धर्मशाला	७३)	सिद्धगिरि भक्ति विहार
७४)	सोनारुपा धर्मशाला	७५)	गिरिविहार धर्मशाला
७६)	वाली भवन धर्मशाला	७७)	मंडार १०८ धर्मशाला
७८)	वीशा नीमा धर्मशाला	७९)	रणशी देवराज धर्मशाला
८०)	पानाचंद उत्तमचंद धर्मशाला	८१)	लुकंड भवन
८२)	राजकोट वाली धर्मशाला	८३)	प्रेमसूरि विहार (पिण्डवाडा)
८४)	खीवांदी भवन	८५)	खीमीबाई धर्मशाला
८६)	सादडी भवन (राणकपुर भवन)	८७)	धानेरा भवन
८८)	सांचोरी जैन भवन	८९)	नित्यचंद्रदर्शन धर्मशाला
९०)	जालोर जैन धर्मशाला	९१)	खीमत धर्मशाला
९२)	गौतम धाम	९३)	चंदन भवन
९४)	धनसुख विहार	९५)	पद्मावती भवन
९६)	प्रभात भवन	९७)	बलवंत विहार
९८)	बुद्धि ऋद्धि धर्मशाला	९९)	भुवनभानु स्मृति
१००)	ह. फ. भवन	१०१)	राजेन्द्रदर्शन
१०२)	हिरा मोती धर्मशाला	१०३)	वाव पंथक धर्मशाला

(झ) पालीताणा गांव में आई हुई धर्मशालायें :-

१)	शेठ हेमाभाई नी धर्मशाला	८)	कंकुबाई नी धर्मशाला
२)	मोतीशा शेठ नी धर्मशाला	९)	देवशी पुनशी नी धर्मशाला
३)	वोरा अमरचंद जसराज नी धर्मशाला	१०)	मगन मोदी नी धर्मशाला
४)	शेठ सूरजमल नी धर्मशाला	११)	पन्नालाल जी नी धर्मशाला
५)	सात ओरडा नी धर्मशाला	१२)	पाटण वाला नी धर्मशाला
६)	नगीनचंद कपूरचंद नी धर्मशाला	१३)	दिगम्बर नी धर्मशाला
७)	घोघा वाली नी धर्मशाला	१४)	महाजन वंडो

(झझ) पालीताणा में स्थित मंदिर :-

१)	श्री महावीर स्वामी	- जंबुद्वीप
२)	श्री वासपूज्य स्वामी	- जैन सोसायटी
३)	श्री चिंतामणी पार्श्वनाथ जी	- बालाश्रम
४)	श्री आदीश्वर भगवान	- श्राविकाश्रम
५)	श्री आदीश्वर प्रभु	- साहित्य मंदिर
६)	श्री आदीश्वर भगवान	- आणंदजी कल्याणजी पुरानी पेढी के पास
७)	श्री गोडी पार्श्वनाथ	- सुखडीया बाजार में
८)	श्री शांतिनाथ भगवान	- गोरजी ना डेला मां (कापड बाजार के बीच में)
९)	श्री सुपार्श्वनाथ भगवान	- सर्वोदय सोसायटी (सरकारी हास्पीटल के पीछे)
१०)	श्री आदीश्वर प्रभु की प्राचीन पादुका देहरी (पुरानी तलेटी)	- पोलीस स्टेशन के सामने वाली गली में, टंकी के पास।
११)	श्री शीतलनाथ भगवान	- पारस सोसायटी (गांव बहार)
१२)	श्री सुमति नाथ भगवान	- जैन गुरुकुल (गांव बहार, रेल्वे स्टेशन)
१३)	श्री आदीश्वर प्रभु	- जैन विशाल म्युझीयम
१४)	श्री पार्श्वनाथजी	- (घर मंदिर) गिरिराज सोसायटी
१५)	श्री जगवल्लभ पार्श्वनाथ	- सूर्यकमल उपाश्रय
१६)	श्री मल्लीनाथजी	- गोरजी नुं देरासर (जुनी दादावाडी)
१७)	संकट पार्श्वनाथ	- अमरेन्द्रसागरजी उपाश्रय
१८)	भीडभंजन पार्श्वनाथ	- भद्रसेन विजयजी उपाश्रय
१९)	चोमुखजी	- कलकत्ता वाला का
२०)	सीमंधर स्वामी	- हस्तिमलजी निगडा का

जैन रामायण का
भव्यातिभव्य सचित्रप्रकाशन

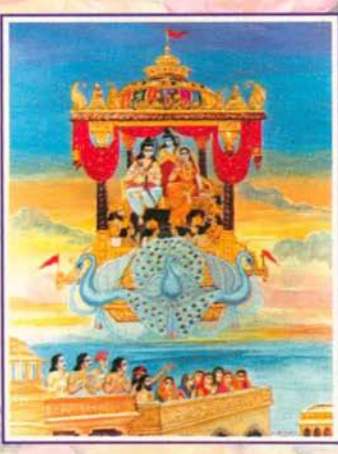

आज घर घर में व व्यक्ति-व्यक्ति में अशांति की आग भभक रही है। उसका कारण भौतिकवाद व आधुनिकता की दौड है। इस प्रकार अशांति को दूर करने व प्राचीन संस्कृति के आदर्शों को उजागर करने के लिये रामायण के आदर्श घर घर पहुँचाने जरुरी है। जिससे पिता-पुत्र, भाई-भाई, भाई-बहिन, सासु-बहु, नणंद-भोजाई, माता-पुत्री और गुरु-शिष्य का संबंध सुधर जाये तथा शांति स्थापित हो, इसलिये रामायण जैसे पुस्तकों को आकर्षक रंग में छपवाना बहुत ही जरुरी है। जिससे आधुनिक युवक-युवतियाँ भी आकर्षित होकर सचित्रपुस्तक पढकर अपने जीवन को लाभान्वित कर सके।

प.पू. युवक जागृति प्रेरक आचार्य देव श्री गुणरत्न सूरीश्वरजी म.सा. रामायण के आदर्शों पर पच्चीस वर्ष से तात्विक, सात्विक व प्रभाविक प्रवचन देकर जैन जैनेतर युवाओं का चरित्रनिर्माण में जागृति ला रहे हैं। फिर भी कलामय सचित्रजैन रामायण से लोग ज्यादा प्रभावित हो, अतः हमने प.पू. आचार्य देव श्री के मार्गदर्शन के अनुसार आर्टिस्ट के पास जैन रामायण के अति सुंदर चित्रतैयार करवाये है। एवं उनके पास आलेखन भी करवाया है। उसे गुजराती-हिन्दी भाषा में ४ रंग में पुस्तक के रुप में ऑफसेट प्रेस में छपवाने का निर्णय किया है। उसके लिये निम्नलिखित योजना की गई है।

संरक्षक	: ग्यारह (११०००) हजार रुपये देने वाले का नाम संरक्षक के रुप में पुस्तक में छपेगा।
उपसंरक्षक	: पांच हजार (५०००) रुपये देने वाले का नाम उपसंरक्षक के रुप में पुस्तक में छपेगा।
माननीय सदस्य	: एक हजार (१०००) रुपये देने वाले का नाम माननीय सदस्य के रुप में पुस्तक में छपेगा।

इस ज्ञान प्रचार में शीघ्र लाभ लेने की नम्र विनंति हैं।

• संपर्क सूत्र •

आध्यात्मिक शिक्षण केन्द्र

C/o. कुमार ऐजन्सी

४४, खाडीलकर रोड, मुम्बई-४. फोन नं. ३८७७७१७

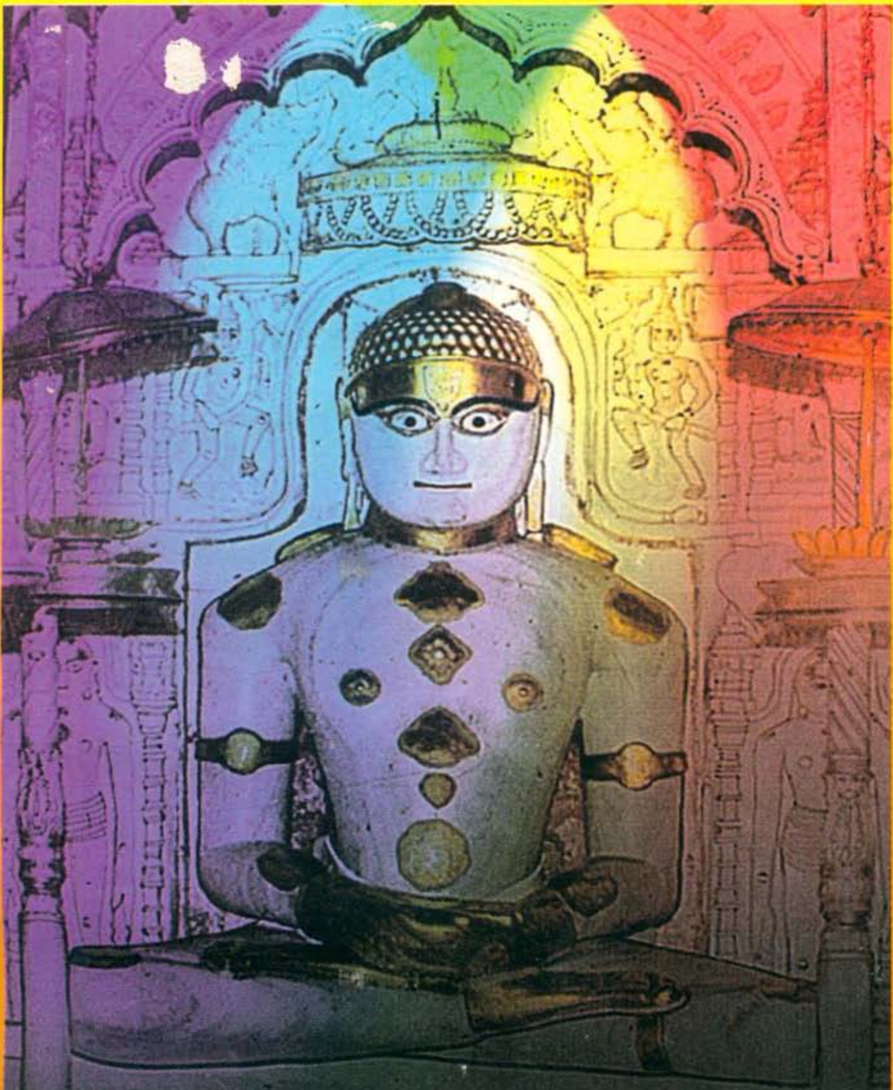

એકેકું ડગલું ભરે, શત્રુંજય સામો જેહ
રિખવ કહે ભવ કોડના, કર્મ ખપાવે તેહ

सो स्तंभो युक्त चौमुखजी मंदिर

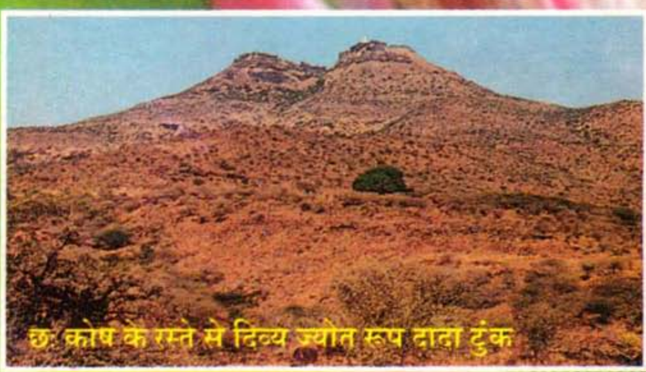

छः कोष के रस्ते से दिव्य ज्योत रूप दादा टुंक

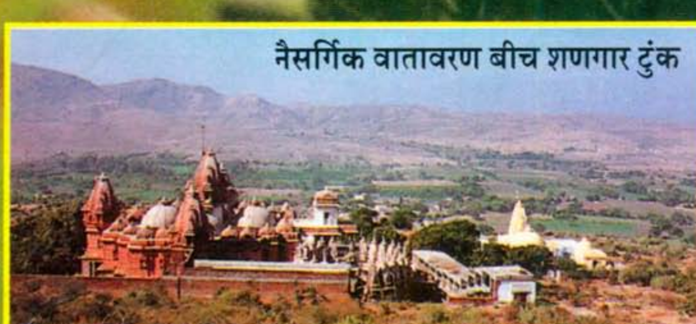

नैसर्गिक वातावरण बीच शणगार टुंक

नीलवर्णी पार्श्वनाथ प्रतिमा युक्त मंदिर

तीन गाउ की प्रदक्षिणा में नीचे दादा की देरी

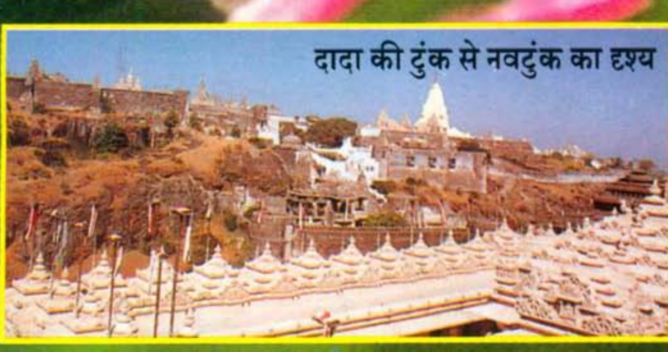

दादा की टुंक से नवटुंक का दृश्य

MULTY GRAPHICS
(022) 2665747 / 3880208